कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 338, पृष्ठ 08 मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 07 जनवरी 2024 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

'पीएम मोदी की प्रतिबद्धता ओडिशा का विकास'

भुवनेश्वर

रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को ओडिशा के नयागढ़ जिले में दासपल्ला स्टेशन और नुआगांव रोड-दासपल्ला लाइन का उद्घाटन किया। उन्होंने चार ट्रेनों को भी हरी झंडी दिखाई, जिन्हें दासपल्ला तक बढ़ाया गया है। इन ट्रेनों में भुवनेश्वर-नयागढ़ टाउन एक्सप्रेस, भुवनेश्वर-नुआगांव रोड पैसेंजर स्पेशल, पुरी-नुआगांव रोड पैसेंजर स्पेशल और भद्रक-नयागढ़ टाउन मेमू शामिल हैं।

'प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिबद्धता ओडिशा का विकास'

दासपल्ला में उद्घाटन समारोह में उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रतिबद्धता ओडिशा का विकास है। उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी राज्य के 4.5 करोड़ लोगों के लिए रेल, दूरसंचार टावर और राजमार्ग संपर्क सुनिश्चित करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं।

पीएम मोदी के नेतृत्व में आई काम में तेजी: वैष्णव

नुआगांव रोड-दासपल्ला लाइन खुर्दा-बलांगीर रेलवे परियोजना का हिस्सा है, जिसे वैष्णव ने ऐतिहासिक बताया और कहा कि (पीएम) मोदी के नेतृत्व में इसके काम में तेजी लाई गई। काम पूरा होने पर खुर्दा-बलांगीर लाइन तटीय ओडिशा को राज्य के पश्चिमी क्षेत्र से जोड़ेगी।

मुंबई में बम धमाकों की धमकी वाले ईमेल की जांच शुरू, पुलिस ने बनाई विशेष टीम

मुंबई

मुंबई पुलिस ने उन ई-मेल की जांच के लिए एक विशेष टीम का गठन किया है, जिसमें धमकी दी गई है कि शहर में कई स्थानों पर बम विस्फोट किए जाएंगे। एक अधिकारी ने शनिवार को यहा जानकारी दी। कोलाबा पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि टीम ईमेल भेजने वाले का उस आईपी एड्रेस से पता लगाने की कोशिश कर रही है, जहां से ये भेजे गए थे। उन्होंने कहा कि मेल एक ही ईमेल आईडी से भेजे गए थे और भेजने वाले की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। कोलाबा में छत्रपति शिवाजी महाराज संग्रहालय के प्रबंधन को एक ईमेल मिला था।

कांग्रेस ने लॉन्च किया 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा का लोगो'

इस लोगो के दो हिस्से हैं। जिस पर लिखा है "भारत जोड़ो न्याय यात्रा, न्याय का हक मिलने तक"

नई दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शनिवार को पार्टी मुख्यालय में 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' का लोगो लॉन्च किया। इस लोगो के दो हिस्से हैं। जिस पर लिखा है "भारत जोड़ो न्याय यात्रा, न्याय का हक मिलने तक"।

लोगो को लॉन्च करने के वक्त खड़गे के साथ कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल, पार्टी नेता जयराम रमेश व अन्य पदाधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान खड़गे ने कहा कि यह यात्रा जनता को न्याय दिलाने व उनके अधिकारों की रक्षा के लिए हैं। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के माध्यम से हम जनता से जुड़े मुद्दों पर बात करेंगे। खड़गे ने कहा कि हम महंगाई, बेरोजगारी, किसानों के मुद्दे, मजदूरों की बुरी हालत,अमीर-गरीब के बीच में बढ़ती खाई और जातिगत जनगणना से जुड़े मुद्दों पर जन जागरण करेंगे। यात्रा के दौरान राहुल गांधी समाज के विभिन्न वर्गों से, संगठनों से बात करेंगे और उनकी समस्याओं के समाधानों पर विचार-विमर्श करेंगे। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी 14 जनवरी को मणिपुर से भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू करेंगे। यह यात्रा 15 राज्यों से होकर गुजरेगी। इस दौरान राहुल गांधी 67 दिनों में 6713 किमी का सफर तय करेंगे। यात्रा 15 राज्यों के 110 जिले से होकर गुजरेगी। यात्रा के दौरान राहुल गांधी 100 लोकसभा सीटें से होकर महाराष्ट्र के मुंबई में यात्रा पूरी करेंगे।

खड़गे ने कहा कि 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' का मंच एनजीओ, पत्रकारों, किसानों, छोटे व्यापारियों, दलित-पिछड़े वर्गों, आदिवासियों और बौद्धिक वर्ग को जोड़ने का भी है।

यह यात्रा केवल अपनी बात जनता तक पहुंचाने का नहीं बल्कि जनता की आवाज और उनकी समस्याओं को सुनने का भी मंच है। उल्लेखनीय है कि राहुल गांधी 14 जनवरी को मणिपुर से भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू करेंगे। यह यात्रा 15 राज्यों से होकर मुंबई में पूरी होगी।

कांग्रेस के मन में किस बात की डर?

कांग्रेस को खटका है कि मित्र दल उसे ऐसी सीटें लेने के लिए मजबूर कर सकते हैं जिनपर हार की ज्यादा आशंका है। कांग्रेस 2019 के संसदीय चुनाव में 52 सीटें जीती थी एवं 209 सीटों पर दूसरे नंबर पर थी। इस हिसाब से 261 सीटों पर कांग्रेस की दावेदारी प्रबल है। शेष 282 सीटें मित्र दलों के लिए बच जाती हैं।

सूचना है कि कांग्रेस की दावेदारी उन सीटों पर भी है, जिनपर उसकी जमानत बच गई थी। इस हिसाब से कुल 273 सीटों पर कांग्रेस की दावेदारी मजबूत है।

ऐसे में सहयोगी दलों के पास लड़ने के लिए 270 सीटें बच जाएंगी। 2014 एवं 2019 के लगातार दो लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को 13 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में एक भी सीट नहीं मिली थी।

'यह कौन बनेगा करोड़पति पूछने जैसा'

नई दिल्ली

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को बताया कि विपक्षी गठबंधन के नेता पदों के आवंटन पर 10-15 दिन के भीतर फैसला करेंगे। एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि इंडिया ब्लॉक में सीटों के बंटवारे सहित अन्य सभी मामलों को जल्द ही हल कर लिया जाएगा। विपक्षी गठबंधन का संयोजक कौन होगा यह पूछने पर कांग्रेस अध्यक्ष ने मजेदार जवाब दिया और कहा- "यह कौन बनेगा करोड़पति पूछने जैसा"। दूसरी ओर कांग्रेस के पार्टी सूत्रों ने संकेत दिया इस महीने के अंत तक यह प्रक्रिया पूरी हो सकती है। कांग्रेस अध्यक्ष खरगे ने कहा कि कांग्रेस सभी 545 लोकसभा सीटों पर काम कर रही है और उसने सभी सीटों के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की है, लेकिन कौन सी पार्टी किस सीट पर चुनाव लड़ेगी और कितनी सीटों पर लड़ेगी, इसका फैसला विपक्षी गठबंधन के सभी घटकों के साथ विचार-विमर्श के बाद जल्द ही किया जाएगा।

यह पूछे जाने पर कि पार्टी कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगी, उन्होंने कहा, 'हमने पहले ही सभी निर्वाचन क्षेत्रों के लिए संसदीय पर्यवेक्षकों को चुन लिया है...।

कांग्रेस से बड़ी कुर्बानी मांग रहे सहयोगी दल; जदयू, राजद... जैसी पार्टियां

नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। राजग के घटक दलों के साथ भाजपा सहज दिख रही है, किंतु विपक्षी गठबंधन सीट बंटवारे को लेकर उलझन में है। घटक दलों के साथ कई बैठकों के बावजूद किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सका है। सीट बंटवारे का ना फामूर्ला तय हो पाया है और ना ही बातचीत के लिए कोई तिथि। सब अपनी बंशी अलग बजा रहे हैं। कहीं क्षेत्रीय दलों की अपेक्षा बड़ी है तो कहीं कांग्रेस अपनी जमीन छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। आधार वाले राज्यों में जदयू, राजद, सपा, आम आदमी पार्टी (आप), तृणमूल कांग्रेस एवं शिवसेना कम सीटों पर तालमेल के लिए तैयार नहीं हैं। उन्हें सीटों के साथ ड्राइविंग भी चाहिए।

कांग्रेस के रवैये से घटक दलों में बेचैनी

कांग्रेस के टालू रवैये से घटक दलों की बेचैनी बढ़ने लगी है। कांग्रेस राष्ट्रीय गठबंधन समिति के सदस्य सलमान खुर्शीद का बयान आया कि सीट बंटवारे के लिए रविवार से बैठकें होंगी, किंतु कांग्रेस की ओर से तत्काल कह दिया गया कि यह पार्टी का आधिकारिक बयान नहीं है। खबर है कि समिति के संयोजक मुकुल वासनिक ने घटक दलों से विमर्श करके सीट बंटवारे का फामूर्ला तैयार किया है। शीर्ष नेतृत्व को रिपोर्ट भी सौंप दी है।

भारत ने रचा एक और इतिहास, मंजिल लैग्रेंज प्वाइंट-1 पर पहुंचा आदित्य एल-1

नई दिल्ली

चांद पर उतरने के बाद भारत ने एक और इतिहास रच दिया है। सूर्य मिशन पर निकले भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के आदित्य एल-1 ने अपनी मंजिल लैग्रेंज प्वाइंट-1 (एल1) पर पहुंच कर एक कीर्तिमान हासिल किया है। इसी के साथ आदित्य-एल 1 अंतिम कक्षा में भी स्थापित हो गया। यहां आदित्य दो वर्षों तक सूर्य का अध्ययन करेगा और महत्वपूर्ण आंकड़े जुटाएगा। भारत के इस पहले सूर्य अध्ययन अभियान को इसरो ने 2 सितंबर को लॉन्च किया था।

पीएम मोदी ने किया ट्वीट

इसरो की इस सफलता पर पीएम मोदी ने भी खुशी जाहिर की है। उन्होंने ट्वीट कर इसरो की सराहना करते हुए लिखा कि 'भारत ने एक और मील का पत्थर हासिल किया। भारत की पहली सौर वेधशाला आदित्य-एल 1 अपने गंतव्य तक पहुंच गई। सबसे जटिल अंतरिक्ष मिशनों में से एक को साकार करने में हमारे वैज्ञानिकों के अथक समर्पण का प्रमाण है। यह असाधारण उपलब्धि सराहना योग्य है। हम मानवता के लाभ के लिए विज्ञान की नई सीमाओं को आगे बढ़ाना जारी रखेंगे।

'भारत में बदलाव का कारण दृष्टिकोण'

तिरुवनंतपुरम

तिरुवनंतपुरम में विकसित संकल्प भारत यात्रा को संबोधित करते हुए केंद्रीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि वैश्विक बातचीत अब भारत के तरफ केंद्रित हो गई है। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ दशकों में देश में हुए बदलाव पर लोग बात कर रहे हैं। जयशंकर ने कहा कि उन्होंने विदेशियों को बताया कि देश में इस दौरान जो परिवर्तन हुआ है वह दृष्टिकोण की वजह से हुआ है। उन्होंने कहा, 'विदेश मंत्री होने के नाते मैं पूरी दुनिया में घूमता हूं। पूरी दुनिया आज हमारे बारे में बात कर रही है। वे आज पूछ रहें कि आपलोगों ने ऐसा कैसे किया?'

बदलाव का कारण दृष्टिकोण

जयशंकर ने आगे कहा, 'वे (विदेशी) पूछते है कि यह 10,20,30 साल पहले वाली ही भारत है। भारत में क्या बदलाव आया? मैं उन्हें कहता हूं कि भारत में जो बदलाव हुए वह है नजरिया। उन्होंने बताया कि देश के लोगों के पास अब बैंक अकाउंट और आधार है। प्रौद्योगिकी के सही उपयोग से ही देश को उपलब्धियां मिली है।' विदेश मंत्री ने बताया, 'हमारे पास आधार है, हमारे पास बैंक अकाउंट है। बैंक खातों के कारण हम न केवल देश में बदलाव ला रहे हैं बल्कि अपने समाज को भी बदल रहे हैं। इसे फोन के साथ कनेक्ट करके हम हम सीधा लाभ प्राप्त कर रहे हैं।'

उन्होंने आगे कहा, 'पिछले दस वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत और यहां के लोगों के जीवनशैली को बदलने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए। अगर यह कार्य जारी रहता है तो हम विकसित भारत का निर्माण कर सकते हैं।

बिजली, पानी, स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा और अन्य समस्याओं से प्रत्येक भारतवासी को निपटना पड़ रहा है। ये पूरी दुनिया की समस्याएं है।'

पतंजलि गुरुकुलम की रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने रखी आधारशिला

हरिद्वार

स्वामी दर्शनानंद गुरुकुल महाविद्यालय पतंजलि गुरुकुलम के भव्य आधुनिक भवन के शिलान्यास कार्यक्रम में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शामिल हुए। शनिवार को इस कार्यक्रम में राजनाथ सिंह ने कहा कि संस्कृत के संरक्षण और संवर्धन के लिए देश के गुरुकुल आगे आए। राजनाथ सिंह ने कहा कि संस्कृत वैज्ञानिक भाषा है दुनिया के कई विद्वानों ने प्रकृति और सृष्टि को समझने के लिए संस्कृत का ही अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत का अहम स्थान है योग दर्शन भी महर्षि पतंजलि ने संस्कृत में ही लिखा था। उन्होंने संस्कृत पढ़ने लिखने और बोलने वालों की कम होती संख्या को लेकर चिंता जताई।

बाबा रामदेव ने योग को नई पहचान दीः राजनाथ सिंह ने कहा कि देवभाषा की यह स्थिति देखकर मन में पीड़ा होती है। उन्होंने कहा कि आचार्य गण देव भाषा संस्कृत के संरक्षण और संवर्धन के लिए ईमानदार प्रयास करें। उन्होंने कहा कि योग गुरु बाबा रामदेव वेद और योग को सरलता से जनमानस तक पहुंचा रहे हैं इसके लिए वह साधुवाद के पात्र हैं । उन्होंने कहा कि आक्रांताओं के प्रभाव के कारण योग का प्रभाव कम हो गया था उसे आज बाबा रामदेव आधुनिक रूप में आम जनमानस तक आधुनिक रूप में पहुंचा रहे हैं।

गुरुओं के नाम पर ही सनातन की पहचान हैः गुरु शिष्य परंपरा पर बोलते हुए रक्षा मंत्री ने कहा कि गुरुओं के नाम पर ही सनातन की पहचान है।

श्रद्धालुओं को अयोध्या पहुंचाने के लिए रेलवे ने की खास तैयारी, 430 शहरों से चलेंगी 72 ट्रेनें

नई दिल्ली

राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या पहुंचने वाले श्रद्धालुओं को सुविधाजनक सफर कराने के लिए भारतीय रेलवे ने खास तैयारी की है। रेलवे अयोध्या के लिए कई नई ट्रेनें शुरू करने जा रहा है। इसमें एसी से लेकर स्लीपर और जनरल सभी श्रेणी की ट्रेनें शामिल होंगी। आने वाले कुछ दिनों में रेलवे अयोध्या की ओर जाने वाली नई ट्रेनों का शेड्यूल जारी कर सकता है। मौजूदा समय अयोध्या के लिए 35 ट्रेनों का संचालन हो रहा है। इसमें रोजाना चलने वाली ट्रेनों के अलावा साप्ताहिक ट्रेनें भी शामिल हैं। लेकिन 22 जनवरी के बाद से मौजूदा ट्रेनों के अलावा 37 अतिरिक्त ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। इस तरह देशभर के 430 शहरों से कुल 72 ट्रेनों का संचालन होगा। रेलवे से जुड़े सूत्रों का कहना है कि राम मंदिर के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को ध्यान में रखते हुए अयोध्या के लिए अतिरिक्त ट्रेनों का संचालन किया जाएगा। रेलवे की कोशिश है कि अधिक से अधिक शहरों को अयोध्या से सीधा जोड़ा जाए। इन ट्रेनों के माध्यम से राम नगरी अयोध्या को देश के बड़े शहरों से जोड़ने की तैयारी है। इससे भक्तों के लिए सफर आसान हो जाएगा। सूत्रों के मुताबिक, मांग बढ़ने पर ट्रेनों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। पर्यटकों की अनुमानित बढ़ोतरी को देखते हुए अयोध्या स्टेशन को रिनोवेट किया जा सकता है। नए स्टेशन पर प्रतिदिन 50 हजार लोगों को संभालने की क्षमता होगी। ये 15 जनवरी तक पूरा होने की उम्मीद है। रेलवे अभी राज्यों की मदद से ट्रेनों की संख्या और टाइम टेबल पर काम कर रहा है।

अमित शाह नेशनल पैक्स मेगा कॉन्क्लेव की करेंगे अध्यक्षता

नई दिल्ली

प्राथमिक कृषि ऋण समितियां (पैक्स) जन औषधि केंद्रों के रूप में काम करने के लिए तैयार हैं। सहकारिता मंत्री अमित शाह सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय पैक्स मेगा कॉन्क्लेव की अध्यक्षता करेंगे। कॉन्क्लेव का आयोजन सहकारिता मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के सहयोग से किया जा रहा है।

मंत्रालय ने कहा कि हाल ही में भारतीय जन औषधि केंद्र संचालित करने की अनुमति दी गई थी। प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र आम जनता को गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराते हैं, जिनकी कीमत खुले बाजार में उपलब्ध ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 50-90 प्रतिशत कम होती है।

'न्याय तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में तकनीक एक रणनीतिक कदम'

राजकोट

भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ ने शनिवार को कहा कि न्यायपालिका में तकनीक को शामिल करना न केवल आधुनिकीकरण के बारे में है, बल्कि न्याय तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक रणनीतिक कदम भी है। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी (टेक्नोलॉजी) का इस्तेमाल करने के लिए वकीलों को भी प्रशिक्षित करने की जरूरत है।

यहां एक नए जिला अदालत भवन के उद्घाटन के मौके पर सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि इन प्रगतियों का लाभ उठाने से अंतर को पाटने, दक्षता बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि न्याय वितरण भौगोलिक और तकनीकी बाधाओं से बाधित न हो।

जिला अदालतों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने कहा कि वे न्याय के अधिकार को हासिल करने में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और एक ऐसे समाज की कल्पना करने में हमारे संविधान के आदर्शों की आधारशिला हैं, जहां प्रत्येक नागरिक को न्याय का अधिकार सुनिश्चित किया जाता है। राजकोट में नए जिला अदालत भवन के बारे में बात करते हुए उन्होंने आधुनिक ऑडियो-वीडियो उपकरणों और प्रणालियों से लैस एक सम्मेलन कक्ष (कॉन्फ्रेंस रूम) और एक प्रशिक्षण कक्ष (ट्रेनिंग रूम) को दूरदेशी सुविधा बताया।

सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा, यह सर्वोच्च न्यायालय के अदालत कक्ष (कोर्ट रूम) में लागू हाइब्रिड और ऑनलाइन कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम के साथ मेल खाता है। जिसमें बदलते समय के साथ न्याय के त्वरित वितरण के लिए प्रौद्योकियों का लाभ उठाया जाता है।

उन्होंने कहा, 'न्यायपालिका के भीतर प्रौद्योगिकी को अपनाना न केवल आधुनिकीकरण के बारे में नहीं है, बल्कि यह न्याय तक पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक रणनीतिक कदम है। हमारा उद्देश्य इनका लाभ उठाकर अंतर को पाटना, दक्षता बढ़ाना और यह सुनिश्चित करना है कि न्याय वितरण भौगोलिक और तकनीकी बाधाओं से बाधित न हो।'

उन्होंने मुख्य जिला न्यायाधीश से यह सुनिश्चित करने की भी अपील की कि वकीलों को प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल में प्रशिक्षित किया जाए और उस पहलू में उन्हें न्यायाधीशों से अलग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि उच्चतम न्यायालय हितधारकों के लिए नवीनतम तकनीक और सुविधाओं से लैस 27 अदालत कक्षों के साथ अपने नए भविष्य के भवन के निर्माण की शुरूआत करने वाला है।

उन्होंने मुख्य जिला न्यायाधीश से यह सुनिश्चित करने की भी अपील की कि वकीलों को प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल में प्रशिक्षित किया जाए और उस पहलू में उन्हें न्यायाधीशों से अलग नहीं किया जाना चाहिए।

संदिग्ध दशा में विवाहिता का फांसी के फंदे पर लटकता मिला शव

मायके पक्ष ने दहेज में कार न मिलने पर ससुरालियों पर बहू का गला दबा कर हत्या कर शव पंखे पर लटका देने का लगाया आरोप

मऊआइमा कस्बा के तीन बत्ती कंजियाना कलां में शनिवार को सुबह की घटना,दो हिरासत में

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। दहेज में कार न मिलने पर दहेज लोभी ससुरालियों ने बहू का गला दबा कर हत्या का आरोप लगाते हुए मायके पक्ष ने पति सहित छह के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। पुलिस ने पति और जेठ को हिरासत में ले लिया है। बताया गया है कि जिला जौनपुर के मुंगराबादशाहपुर निवासी स्वर्गीय अब्दुल मन्नान के चार पुत्र चार पुत्रियों में सबसे छोटी शाहिस्ता परवीन की शादी मऊआइमा नगर पंचायत के मोहल्ला कजियाना कलां तीन बत्ती निवासी हिदायत उल्ला पुत्र रहमतुल्लाह के साथ 5 जुलाई 2023को हुई थी। बताया गया है कि शनिवार को सुबह शाहिस्ता परवीन अपने कमरे में लगे पंखे पर गमछा से फांसी का फंदा बना कर संदिग्ध हालात में आत्म हत्या कर ली। परिजन शव उतार कर पुलिस और शाहिस्ता परवीन के मयके वालों को सूचना दी।मयके पक्ष ने दहेज में कार न मिलने का आरोप लगाते हुए।गला दबा कर हत्या कर शव लटकाने का आरोप लगाते हुए मृतका शाहिस्ता परवीन के बडे भाई मोहम्मद अय्यूब ने बहन के पति हिदायत उल्ला,ससुर हसमत उल्ला,जेठ अमान उल्ला,सास शहनाज बानों, जेठानी तरन्नुम बानों,पति के मामा इस्माईल पुत्र इब्राहिम फूलपुर के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज करा दिया है। पुलिस ने मौके से गमछा तथा मृतका के पति हिदायत उल्ला,जेठ अमान उल्ला को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। इस बाबत मऊआइमा थाना प्रभारी निरीक्षक राघवेन्द्र सिंह ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर पति व जेठ को हिरासत में लिया गया है शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

प्रयागराज संगम से अयोध्या पहुंचे 108 कलशों को चंपतराय ने सहर्ष ग्रहण किया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। तीर्थराज प्रयागराज संगम से 108 कलशों में वेद मंत्रों से अभिमंत्रित त्रिवेणी के जल से भरे कलशों को रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महामंत्री एवं विहिप के केन्द्रीय उपाध्यक्ष चंपतराय ने बड़े ही भाव से इस कार्यक्रम के संयोजक आचार्य धीरज द्विवेदी याज्ञिक के हाथो से सहर्ष ग्रहण किया। कलशों को प्रदान करते समय महंथ 108 चन्द्रमादास महाराज, महंथ 108 भूपेन्द्रदास पुत्तन महाराज, महंथ 108 अनंतदास महाराज, प्राणनाथ मिश्रा जिला धमार्चार्य प्रमुख गंगापार प्रयागराज, सत्येंद्र मणि शुक्ल विभाग संस्कृति प्रमुख प्रयागराज, तीर्थ पुरोहित अजय तिवारी, दासानुदास अजय महाराज, आचार्य चंद्रभूषण तिवारी, आलोक द्विवेदी, अनिल दुबे, आचार्य सूर्यकांत तिवारी, अनिल दुबे, संतोष तिवारी, मनोज शुक्ल, सुखेन्द्र मिश्र, कुलभूषण दुबे, कौशल वैदिक, विष्णु पाण्डेय, आचार्य अंकित तिवारी आदि सहित यात्रा में आये सभी स्त्री पुरुष भक्त शामिल रहे।

न्यूज झरोखा

नगरपंचायत सिरसा प्रशासन नहीं कर रहा अलाव जलाने की व्यवस्था

सिरसा प्रयागराज मेजा क्षेत्र के अंतर्गत नगरपंचायत सिरसा में कड़ाके के ठंड में भी नही जल रहे अलावा।ठंड के प्रकोप से जनमानस परेशान सिरसा नगर पंचायत द्वारा नही की गई अलाव जलाने की ब्यवस्था। शीतलहर के चलते ठंड का प्रकोप जारी हो गया हैं। जहां जनमानस का हल बेहाल है। वही सिरसा नगरपंचायत प्रशासन द्वारा अलाव जलाने के लिए कोई ब्यवस्था नही की जा सकी। पिछले कई दिनों से चल रही शीत लहर में अलाव की व्यवस्था ना होने से सिरसा नगर क्षेत्रवासी विवस होकर कड़कती ठंड का प्रकोप झेल रहे है। लेकिन पिछले एक सप्ताह से अत्याधिक पाला व कोहरा और बूंदा बांदी से तापमान गिर रहा हैं। जिससे ठंड का प्रकोप अत्यधिक हो गया हैं। नगर पंचायत प्रशासन स्तर से जगह-जगह अलाव की ब्यवस्था की जाती हैं लेकिन सिरसा नगर पंचायत प्रसाशन अलाव की कोई भी व्यवस्था नहीं किया। जिससे अलाव की व्यवस्था ना होने से राहगीरों व नगरपंचायत सिरसा के लोगो को ठंड से निजात नही मिल रहा हैं। सिरसा नगरपंचायत क्षेत्रवासियों का कहना हैं कि जिला प्रशासन व योगी सरकार अलाव जलवाने की व्यवस्था कराये। जिससे गरीब व असहाय लोग अलाव से ठंड में राहत मिल पाये।

श्रीराम जन्मभूमि पूजित अक्षत गांव में किया गया वितरित

झूंसी। श्री राम जन्मभूमि अयोध्या से आया पूजित अक्षत घर घर पहुचाया जा रहा है। शनिवार को कोटवा गांव में पूजित अक्षत के साथ भगवान राम व राम मंदिर की प्रतीकात्मक तस्वीर भेंट कि गई। वितरण की शुरूआत ग्राम देवी माँ अन्नपूर्णा धाम बुद्धी मइया मंदिर से किया गया। विहिप कार्यकर्ताओ के ग्रामीण भी इस अनुष्ठान में शामिल हुए। सर पर कलश रखे श्री राम जय राम जय जय राम का कीर्तन करते हुए टोली गांव के हर घर मे जा कर पूजित अक्षत दिया और प्राण प्रतिष्ठा के दिन घर मे पांच दिप जलाने व मंदिरों को सजा कर भजन कीर्तन करने का आह्वान किया जा रहा है। सह खंड कार्यवाह आकाश, सह बौद्धिक प्रमुख शैलेन्द्र, खंड विस्तारक उपेंद्र, अंशुमान, हर्ष, देवव्रत, प्रियांक, आकाश, आमोद, भोलू, देव, आर्यन आदि मौजूद रहे। वही बुद्धी मइया मंदिर समिति के सदस्य शशिकेन्द्र सिंह ने बताया कि मंदिर को दीपावली की तरह सजाया जाएगा। भजन कीर्तन के साथ प्रसाद वितरण किया जाएगा। अधिक से अधिक संख्या में लोगो के पहुचने की अपील भी की जा रही है।

संकल्प यात्रा पहुँची साड़ी व मसौली

मांडा। विकास खंड मांडा क्षेत्र के अंतर्गत शनिवार को साड़ी व मसौली ग्राम पंचायत में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमे उपस्थित ग्रामीणों को सरकार द्वारा किये गए कामों की उपलब्धियां गिनाई। यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा कराये गए इस संकल्प यात्रा के तहत कोई भी ग्रामीण सरकार की योजनाओ से वंचित न रह जाए इसके लिए सरकार ने संकल्प यात्रा के जरिये योजनाओ की जानकारी दी। वही कार्यक्रम में आई गर्भवती महिलाओ को गोद भराई व छः माह पुरा कर चुके बच्चों का अन्नप्राशन कराया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान प्रतिनिधि सचिन कुमार यादव ने की मौके पर टीए दिनेश पांडेय, सचिव चन्द्र शेखर सिंह यादव,रोजगार सेवक अनिल गुप्ता, नन्हे बिंद, लंबू,भाई लाल, सहाजन, अरुण पटेल, राकेश गिरी, सहित आदि लोग मौजूद रहे।

प्राथमिक विद्यालय पिलखिनी में दरवाजा तोड़कर चोरी

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत पुलिस चौकी जंघई के पिलखिनी गांव मे बीती रात चोरों ने प्राथमिक विद्यालय का दरवाजा तोड़कर पानी की टोंटी उखाड़ ले गए और कमरों का ताला तोड़ने का प्रयास किया। शनिवार सुबह ग्रामीणों ने इसकी सूचना ग्राम प्रधान शशिकला बच्चन को दिया तो उनके पति बच्चन मिश्रा मौके पर पहुंचें और चोरी की सूचना सरायममरेज पुलिस को दिया। प्रार्थना पत्र के अनुसार गांव के असामाजिक तत्वों द्वारा बार-बार ऐसी घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है।शाम होते ही गांव के विद्यालय एवं पंचायत भवन पर नशेड़ी एवं जुआड़ी लोग जुटने लगते हैं और रात में चोरी की घटनाओं को अंजाम देते हैं। इसके पूर्व भी चोरी हो चुकी है इसकी शिकायत जंघई पुलिस को लिखित दिया गया था। चोरी की सूचना पर सरायममरेज थाना एवं पुलिस चौकी जंघई की पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है अभी तक पुलिस को कोई सफलता हाथ नहीं लगीं है।

हत्या के आरोप में तीन मुल्जिमो को पुलिस ने आला कत्ल बरामद कर भेजा जेल

मऊआइमा। मऊआइमा के कहली सादलपुर में पैसों के लेन देन को लेकर गरुवार रात को एक युवक की हत्या कर दी गई थी।छह नामजदों में से पुलिस ने तीन को आला कत्ल के साथ शनिवार को जेल भेज दिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सादलपुर कहली निवासी रमेश कुमार यादव को पैसों के लेन देन को लेकर बुधवार रात में लाठी डंडा लोहे की राड से मार कर हत्या कर दी गई थी। मृतक रमेश के भाई विपिन कुमार ने मऊआइमा थाने में बलराम,विजय उर्फ राही,हरिकरन,संतरा देवी, हेमन्त, अभिषेक पर हत्या का आरोप लगाया था। पुलिस ने विजय उर्फ राही, हरिकरन, हेमन्त को आला कत्ल के रूप में लाठी,लोहे की राड बरामद कर शनिवार को जेल भेज दिया।

धर्म का साथ देने वाले व्यक्ति पर राम की कृपा सदा बरसती है : माता अन्नपूर्णा

सहसों। श्री रामचरितमानस सेवा समिति सहसों के तत्वाधान में राम जानकी मंदिर के बगल में चल रही संगीतमय नौ दिवसीय श्री राम कथा के चौथे दिन भगवान श्री राम के जन्म की कथा का रसपान कराते हुए कथा व्यास साध्वी माता अन्नपूर्णा जी ने कहा धर्म की रक्षा अत्याचार तथा पाप से मुक्ति के लिए समय-समय पर भगवान प्रकट होते हैं तथा भक्तों की रक्षा करते हैं। कथा व्यास ने कहा धर्म में राम है राम में धर्म है धर्म का साथ पकड़ने वाले व्यक्ति पर प्रभु श्री राम की कृपा सदा बरसती है। उन्होंने कहा प्रभु को प्राप्त करने के लिए उनसे अटूट अनुराग करना पड़ेगा। राम में अनुराग एवं समर्पण भाव से सांसारिक व्यवहार में रहते भक्ति से ही प्रभु श्री राम सदैव भक्तों की रक्षा करते हुए उनका कल्याण करते हैं। कथा विश्राम पर भगवान के प्रकट होने पर ₹ भय प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ₹ स्तुति गाते हुए उपस्थित भक्ति श्रोता महिला, पुरुषों ने न्योक्षावर कर प्रभु राम का दर्शन एवं पूजन किया। भगवान राम के अवतरण के बाद जय श्री राम के उद्घोष से पूरा पंडाल राम मय हो गया। कथा विश्राम पर श्री रामचरितमानस सेवा समिति के अध्यक्ष व जिला कोषाध्यक्ष भाजपा गंगापार आशीष केसरवानी, सूर्यकांत त्रिपाठी सहित आदि भक्तों ने व्यास पीठ एवं भगवान की आरती उतारी तत्पश्चात श्रोता भक्तों में प्रसाद का वितरण हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ भाजपा नेता चन्द्रेश कुमार केसरवानी, अक्षय कुमार केसरवानी, राजेंद्र केसरवानी, सत्यम केसरवानी, मुन्ना सिंह, नितिन तिवारी, जयेश केसरवानी, विमल कुमार शुक्ला, अनुज मिश्रा, राजा केसरवानी, छोटेलाल प्रजापति, रानू केसरवानी, ब्रिटिश केसरवानी, पिंटू केसरवानी, दिनेश केसरवानी पप्पू , बिहारी लाल केशरवानी, धीरज जायसवाल एवं श्रीकांत तिवारी सहित भारी संख्या में भक्तों ने कथा का रसपान किया।

शीत लहरी के कारण मांडा सीएचसी में सर्दी, खाँसी, बुखार के बढे मरीज

मांडा। दिन में धूप और सांझ होते ही शीतलहरी के चलते खांसी, सर्दी और बुखार के मरीजों की संख्या सीएचसी सहित प्राइवेट अस्पतालों में बढ़ती जा रही है। सुगर, बीपी के मरीजों के लिए भी इस समय खास एहतियात की जरूरत है। दिन और रात के तापमान में काफी अन्तर होने के कारण सर्दी, खांसी और बुखार के मरीजों की संख्या में काफी इजाफा हुआ है। मांडा सीएचसी में शनिवार को डेढ़ सौ मरीज ओपीडी में पहुंचे। सीएचसी मांडा अधीक्षक डा. अजीत सिंह व डा. एसपी गौड़ ने बताया कि सर्दी, खांसी, बुखार की हर तरह की दवा और जांच की सुविधा सीएचसी मांडा में ही उपलब्ध है। मरीजों को बाहर की दवा व जांच कराने की बहुत कम ही जरूरत पड़ती है। इन दिनों बीपी व सुगर के मरीजों को भी खास एहतियात बरतने की आवश्यकता है। ऐसे मरीज रात में भरपूर कपड़े के साथ ही घर से बाहर निकलें तथा किसी भी दशा में दवा नियमित रूप से लेना न भूलें। ऐसे मरीज ठंडे पानी से स्नान करने से परहेज करें। सीएचसी मांडा के अलावा प्राइवेट अस्पतालों में भी सर्दी, खांसी व बुखार के मरीजों की भरमार है। अधीक्षक डॉ.श्री सिंह ने उक्त जानकारी देते हुए कहा कि जिन लोगों को कोई दिक्कत हो वें तत्काल सीएचसी के डॉक्टरों से सलाह लेकर निशुल्क दवा का लाभ उठाए। प्राइवेट अस्पतालों व झोलाछाप डाक्टरों की शरण में जाकर अपना स्वास्थ्य व धन बर्बाद न करें।

करछना में कर्मवीरों का सम्मान समारोह आयोजन किया गया

करछना। तहसील क्षेत्र के ताला भगनपुर गांव में शनिवार को कर्मवीरों का सम्मान किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि हाईकोर्ट के न्यायाधीश सलिल कुमार राय। विशिष्ट अतिथि समाजसेवी सुधीर शर्मा जिला पंचायत अध्यक्ष अरवल बिहार थे कार्यक्रम आयोजक वरिष्ठ समाजसेवी संदीप शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया इस दौरान तिवारी बंधु की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया कार्यक्रम के दौरान ही समाज के लिए बेहतर कार्य करने वाले पुलिस कर्मियों, समाजसेवियों व अन्य लोगों को सम्मानित किया गया। गरीबों जरूरतमंदों को कंबल बाटे गया। कार्यक्रम प्रभारी पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य शिव प्रसाद शर्मा नेताजी ने स्थानीय लोगों का धन्यवाद दिया कार्यक्रम में मुक्तेश्वर सिंह मंटू, नवीन राय, संतोष सिंह, विनय सिंह, दादू सिंह प्रधान, बंटी बाबू बिहार, संजय मिश्रा, सुनील जायसवाल, मोनू सिंह, राहुल सिंह, राजेश साहू, वीरू यादव, टुनटुन पांडे, आदि मौजूद थे।

308 दिन से धरने पर बैठे हैं गरीब किसान मजदूर पत्तेदार

पूर्व विधायक कांग्रेस लीडर के नेतृत्व में राजस्व विभाग विकास आदि के सताए लोगों की मांग को लेकर चल रहा धरना

डीएम प्रयागराज के आश्वाशन पर भी तहसील प्रशासन नहीं कर रहा शिकायतों का निस्तारण

कोरांव। तहसील कोरांव प्रांगाण में गत 29 सितंबर 2022 से निरंतर कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में भूमिहीनों, पत्तेदारो, किसानों, अवाश हिनों, मजलूमों श्रमिकों आदि के हितार्थ उनकी समस्याओं, मौलिक अधिकारों के हनन को लेकर अब तक कुल 308 दिन गुजर गए किंतु किसी अधिकारी या जन प्रतिनिधि ने उनकी समस्याओं को सुनने का नाम ही नहीं ले रहे को लोक तंत्र के लिए ठीक नहीं है।

उल्लेखनीय है कि कुल तीन सौ आठ दिन व्यतीत हो चुके शनिवार सम्पूर्ण समाधान दिवस तक कड़ाके की ठंड में रजाई गद्दा ले कर तहसील परिसर एसडीएम कोर्ट के सामने बैठे धरना पर श्रमिकों किसानों कार्यकताओं और पूर्व विधायक रामकृपाल कोल से पिछले समाधान दिवस में आए डीएम नवनीत चहल ने तहसील अफसरों को अविलंब समस्या का सुधा। टीम गठित कर किए जाने का निर्देश दिया था और धरना रत लोगों को आश्वस्त किया था कि समस्या समाधान हो जाएगा। किन्तु क्या ऐसे मजबूरी तहसील अफसरों पर आन पड़ी है कि गरीब किसान मजदूरों आवंटियों को आज तक भू अतिचारियों और कब्जा कताओं के खिलाफ कोई कार्यवाही राजस्व और पुलिस बल की टीम नहीं शुरू कर रही है। जिससे मांगों को ले कर धरना रत पीड़ितों की कोई सुनवाई अमल में नहीं लाई जा रही है। चर्चा है कि सत्ता के विपक्षी कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में धरना न होता तो अब तक कार्यवाही अमल में लाई गई होती। प्रश्न यह है कि क्या मजलूमों पीड़ितों का मामला रणनीति से जोड़ कर देखा जायेगा। या जन समस्या का समाधान होना जरूरी नहीं है। धरने में बैठे शंकर लाल कॉमरेड ने कहा कि समस्याओं की मांग जब डीएम साहब ने समाधान का आदेश दे चुके हैं तो कैसे कार्यवाही नहीं हो रही क्या डीएम साहब भी दबाव में हैं। उन्होंने कहा कि अंतिम दम तक न्याय की मांग पूरी न होने तक हम लोग धरना समाप्त करने वाले नहीं है। कई त्योहारों को भी इसी तहसील परिसर में मनाया गया है। और भी आगे गणतंत्र दिवस भी यहीं मनाया जायेगा। उन्होंने बताया कि भू माफियाओं का दबाव के कारण कोई नेता अधिकारी नहीं हाथ लगाना चाहते।

क्या बोले लीडर -

मेरी कोई ऐसी मांग भी नहीं है कि तहसील प्रशासन हल करने में मजबूर है। जब तक हम लोगों की मांगे पूरी नहीं होती धरना अनवरत चलता रहेगा। तेज ठंड में या किसी तरह की यदि किसी साथी कार्यकर्ता के साथ कोई अप्रिय घटना घटती है तो सारी जिम्मेदारी तहसील प्रशासन की होगी। में डीएम से भी मिल चुका हूं,अब मंडलायुक्त से भी मिल कर बात करूंगा यदि सामान्य किस्म की मांगों को भी नहीं प्रशासन समाधान करेगा तो आगे और लंबी लड़ाई चलती रहेगी।

रामकृपाल कोल
पूर्व विधायक कांग्रेस लीडर कोरांव प्रयागराज

मेजा बार के चुनाव में 18 प्रत्याशी आजमाएंगे अपना भाग्य

मेजा। बार एसोसिएशन मेजा सत्र 2024 के चुनाव में कुल 18 प्रत्याशी अपना भाग्य आजमाएंगे। दो दिन तक चले नामांकन के पहले दिन 20 और दूसरे दिन 14 प्रत्याशियों ने पर्चा भरा था। जिसमें कुछ प्रत्याशियों ने अपना नाम वापस ले लिया। शनिवार को नाम वापसी के बाद अब 18 प्रत्याशी मैदान में हैं। जिसमें अध्यक्ष पद के लिए देवानंद सिंह, हरिशंकर मिश्र, श्रीकांत तिवारी, मंत्री पद से अतुल वैभव द्विवेदी, मनोज कुमार शुक्ल, संजय शुक्ला, उपाध्यक्ष पद हेतु अशोक कुमार पाण्डेय, उमाशंकर पाठक, दिवाकर तिवारी, उपमंत्री पद हेतु अतुल कुमार तिवारी, प्रवीण कुमार यादव और कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य पद हेतु कुल 7 प्रत्याशी मैदान में है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी हीरालाल मिश्र मधुप और सचिव आशुतोष पांडेय ने बताया कि कोषाध्यक्ष के लिए विमल कांत शुक्ल, पुस्तकालयाध्यक्ष संतोष कुमार भारतीय और आय व्यय निरीक्षक के लिए राकेश कुमार बिंद निर्विरोध निर्वाचित हुए।उन्होंने बताया कि 12 जनवरी को मतदान और उसी दिन मतगणना के बाद परिणाम भी घोषित किए जायेंगे। इसी के बाद मेजा तहसील में चुनाव को लेकर गहमा गहमी शुरू हो गई है।

अमरेश तिवारी को मिली विभाग प्रभारी की कमान कार्यकताओं में हर्ष

मेजा। भारतीय जनता पार्टी संगठन द्वारा अमरेश तिवारी को विभाग प्रभारी बनाए जाने पर पार्टी कार्यकताओं ने बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि शीर्ष नेतृत्व द्वारा दी गई जिम्मेदारी को लेकर श्री तिवारी यमुनापार के जिलाध्यक्ष विनोद प्रजापति का आभार ब्यक्त करते हुए कहा कि मुझे शीर्ष नेतृत्व के द्वारा जो जिम्मेदारी मिली है उसे मैं निष्ठा ईमानदारी एवं पूरी ऊर्जा के साथ निभाऊंगा। उन्होंने विश्वास दिलाते हुए आगे कहा कि हमारा एक ही लक्ष्य तीसरी बार मोदी सरकार है। इस मौके पर बधाई देने वालों में जिला उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल जिला महामंत्री राजेश्वरी तिवारी राजेश शुक्ला विक्रमादित्य मौर्य मनोज गुप्ता राजकुमार मिश्रा सुनील प्रजापति संजय केशरी कामेश्वर पटेल योगेश तिवारी नीरज द्विवेदी तथा रतन तिवारी के अलावा कई अन्य भाजपा कार्यकर्ता मुख्य रूप से मौजूद रहे।

संपूर्ण समाधान दिवस में दो सौ शिकायतें मिलीं निस्तारण शून्य

अखंड भारत संदेश

मेजा। अपर जिलाधिकारी वित्त जेपी सिंह की अध्यक्षता में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में बिजली, पानी और परवाना मामला सुर्खियों में रहा। इस दौरान विभिन्न विभागों से कुल 2 सौ शिकायतें मिलीं। जिसमें राजस्व से 74, पुलिस से 57, विकास से 28, समाज कल्याण से 4 और अन्य से 37 मामले दर्ज किए गए। सभी शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों से एक सप्ताह में निस्तारण करने के निर्देश दिए। शिकायतों के क्रम में मेजा खास निवासी अधिवक्ता राजेश गुप्ता के नेतृत्व में व्यापारियों ने गत 10 दिनों से पीने के पानी की समस्या को लेकर एडीएम से शिकायत की। मौके पर विभाग से कोई अधिकारी /कर्मचारी मौजूद न होने पर फटकार लगाते हुए स्पष्टीकरण मांगा। इसी तरह बिजली विभाग द्वारा अघोषित कटौती को लेकर शिकायत दर्ज कराई गई। बड़ी संख्या में वकीलों ने एडीएम से परवाना मामले में एसडीएम द्वारा की जा रही लापरवाही के बाबत शिकायत दर्ज कराई।वकीलों कनकहाना था कि सभी फाइलें एनटीपीसी में रखी गई हैं। मामले में एसडीएम से वार्ता कर मामले को सुलझानें का आश्वासन दिया। वकीलों ने आपूर्ति विभाग में संविदा पर नियुक्त एक ऑपरेटर कर्मी पर राशन कार्ड बनाने के नाम पर धन उगाही का आरोप लगाते हुए उसे हटाने की मांग की। बरी निवासी दिनेश पांडेय ने अराजक तत्वों द्वारा उनके घर के पास कचड़ा फेंके जाने की शिकायत की। इस मौके पर एसडीएम जयजीत कौर,एसीपी रवि कुमार गुप्ता, तहसीलदार मेजा रवि प्रकाश, एनटी मेजा अनुग्रह नारायण सिंह, एनटी लालतारा राजेंद्र सिंह,एडीओ समाज कल्याण सुशांतु पांडेय सहित अन्य विभाग के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

साहब! काम करना हो तभी शिकायती पत्र लीजिए : राम गणेश मौर्य

सरकार द्वारा प्रस्तावित कूड़ा घर का दबंग नही करने दे रहे निर्माण

सोरांव। जहां एक तरफ सरकार स्वच्छता पखवाड़ा चलाती है और स्वच्छ भारत मिशन योजना के तहत गांव को साफ सुथरा रखने की बात करती है। वही कुछ ग्राम पंचायत में लोग सरकारी भूमि को कब्जा करके कूड़ा घर बनने में अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। जबकि क्षेत्रीय लेखपाल द्वारा सरकारी जमीन की पैमाइश कर सीमांकन संग एजेंडा भी तैयार किया गया है। जिसको लेकर ग्राम प्रधान मनोरमा देवी संग प्रधान पति राम गणेश मौर्य ने तहसील दिवस पर शिकायती पत्र देकर गांव को साफ सुथरा रखने के लिए कूड़ा घर बनाने में अवरोध उत्पन्न कर रहे लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग किया है। सोरांव ब्लॉक अंतर्गत ग्राम पंचायत सराय ब्रिसिंह उर्फ बाहर सराय में सरकार द्वारा प्रस्तावित कूड़ा घर बनाने के लिए क्षेत्रीय लेखपाल द्वारा ऊसर खाते में दर्ज जमीन जो की लगभग 14 विश्वा है। जिसको गांव के ही कुछ दबंग व्यक्तियों द्वारा कब्जा कर लिया गया है। जिससे कूड़ा घर बनाने में अवरोध उत्पन्न हो रहा है। इसको लेकर गांव में तनाव व्याप्त है। आरोप है कि ग्राम सभा में गाटा संख्या 67 का रकबा 14 विश्व जो कि राजस्व अभिलेखों में ऊसर खाते में खाते में दर्ज है और लेखपाल द्वारा कूड़ा घर बनाने के लिए जमीन का सीमांकन करके कूड़ा घर का एजेंडा भी तैयार कर दिया गया है। लेकिन गांव के ही कुछ लोगों द्वारा जमीन को कब्जा कर लिया गया है। और गांव में कूड़ा घर न बनने से सरकार द्वारा संचालित स्वच्छ भारत मिशन का कार्य नहीं हो पा रहा है। इसको लेकर गांव में तनाव व्याप्त है। शिकायती पत्र देते समय ग्राम प्रधान पति बाहर सराय ने अधिकारियों से कहा कि शाहब! काम करना हो तभी शिकायती पत्र दिया जाए क्योंकि पूर्व में भी कई शिकायती पत्र दिया गया लेकिन समस्या हल नहीं हुई।

प्रयागराज में पकड़ी गई एक करोड़ की नशीली दवाइयां

दिल्ली की नारकोटिक्स टीम ने की छापेमारी, फर्म संचालक अरेस्ट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। लंबे समय से चल रहे अवैध नशीली दवाइयों के कारोबार का खुलासा किया गया है। दिल्ली से आई नारकोटिक्स टीम ने शुक्रवार को यह कार्रवाई की है। यहां करीब एक करोड़ रुपए की अवैध नशीली दवाइयां बरामद की गई है।यह फर्म सोहबतियाबाग इलाके में मेसर्स वीके इंटरप्राइजेज के नाम से चल रहा था। पिछले कुछ दिन पहले ही इसकी शिकायत सेंट्रल ब्यूरो ऑफ नारकोटिक्स नई दिल्ली से की गई थी। इसकी शिकायत पर नारकोटिक्स के एसपी सिंह ने अपनी टीम दिल्ली से प्रयागराज भेजा और गोपनीय रूप से छापेमारी की। फर्म संचालक विपुल तिवारी को गिरफ्तार करते हुए जेल भेज दिया गया है। बताते हैं कि लंबे समय से वह बाजार में यह नशीली दवाइयों की सप्लाई करता था। टीम में इंस्पेक्टर प्रवीण धुल, उप निरीक्षक गौरव शर्मा, दीपेंद्र कुमार व प्रयागराज के ड्रग इंस्पेक्टर संतोष कुमार पटेल भी शामिल रहे।

डॉक्टरों की फर्जी बिल से मंगाता था दवाइयां : नारकोटिक्स की टीम ने जब छापेमारी की तो पता चला कि फर्म संचालक शहर के कुछ डॉक्टरों के नाम से फर्जी बिल व पर्चा बनाकर दवाइयां मंगाता था और उसे बेचता था। इस बड़ी कार्रवाई के बाद अब यह भी खुलासा हो सकेगा कि किस मेडिकल स्टोर पर इस तरह की अवैध नकली नशीली दवाइयों की बिक्री की जाती थी।इस छापेमारी और कार्रवाई के बाद कई मेडिकल स्टोर संचालकों में भी खलबली मची है। क्योंकि फर्म संचालक दवाइयां सीधे लोगों को नहीं बेचता था। वह सस्ते दामों में मेडिकल स्टोर संचालकों को देता था। जिसे मेडिकल स्टोर वाले महंगे दामों पर लोगों को बेचते थे।

पकड़ी गई हैं यह दवाईयां : केटामाइन 6273 बोतल, ट्रामाडोल टेबलेट 4530, ट्रामाडोल कैप्सूल 113616, ट्रामाडोल इंजेक्शन 12150, अल्प्राजोलम टेबलेट 136200, डाइजेपाम टैबलेट 8600, डाइजेपाम इंजेक्शन 1200, क्लोनाजेपाम टैबलेट 8550, क्लोर्डियाजेपॉक्साइड टैबलेट 300, लोराजेपाम इंजेक्शन 3910 नाइट्राजेपाम टैबलेट 4100, कोडीन फास्फेट टैबलेट 150, कोडीन फास्फेट सिरप 890 बोतल, एटिजोलम टैबलेट 200 क्लोबजम टैबलेट 3200, पेंटाजोसाइन इंजेक्शन 26890, ब्यूप्रेनोफिर्न इंजेक्शन 1225, ब्यूप्रेनोफिर्न पैच 12, फेंटनेट पैच 309, फेंटनेल शीशी व इंजेक्शन, 2817, ओपियम टैबलेट 225, मिडाजोलम शीशी 325, मार्फिन स्लफेट इंजेक्शन 140 और मॉफिर्न टैबलेट 660 बरामद किया गया है।

गांजा और चरस से भी खतरनाक है निकोटिन : मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के सभागार में आज शनिवार को राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण अभियान के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें जिले भर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर तैनात काउंसलरों को एक्सपर्ट द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।जिला सलाहकार डॉ शैलेश कुमार मौर्या ने बताया कि आज बड़ी संख्या में युवा तंबाकू व सिगरेट जैसे नशे की गिरफ्त में आ रहे हैं। इसमें निकोटिन होता है जो गांजा और चरस से भी ज्यादा खतरनाक और नुकसानदायक होता है। सिगरेट या गुटखा आदि पदार्थों में चार हजार से ज्यादा ऐसे पदार्थ होते हैं जो कैंसर, ब्लड प्रेशर, मोतियाबिंद के साथ साथ व्यक्ति को नपुसंकता का शिकार बनाती है। यह गर्भवती महिलाओं के गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए बहुत खतरनाक होता है। डॉ. शैलेश बताते हैं कि जब निकोटिन व्यक्ति के ब्रेन में जाता है तो वहां डोपामिन को फैलाता है और इसके बाद वह दिमाग को अच्छा लगने लगता है। धीरे-धीरे व्यक्ति उसका सेवन करना करने लगता है और जब उसे यह चीज नहीं मिलती है तो उसे बेचैनी और झनझनाहट होने लगती है।

निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपी से छूट रही यह लत : मोतीलाल नेहरू मंडलीय अस्पताल (काल्विन) के काउंसलर प्रमोद कुमार ने बताया कि निकोटिन रिप्लेसमेंट थेरेपी के जरिए ऐसी तलब से छुटकारा मिल सकती है। काल्विन अस्पताल में तमाम ऐसे व्यक्ति आते हैं जो सिगरेट व तंबाकू आदि के सेवन से दूरी बनाना चाहते हैं, यहां पर उनकी काउंसलिंग की जाती है और इस लत से छुटकारा दिलाने का प्रयास किया जाता है। उन्होंने कहा कि सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों पर यदि ऐसे लोग आते हैं तो उन्हें काल्विन अस्पताल में काउंसलिंग के लिए भी भेज सकते हैं। वहीं स्वास्थ्य विभाग की सोशल वर्कर सुमनलता त्रिपाठी ने बताया की कि अक्सर महिलाएं भी बीड़ी, सिगरेट आदि का नशा करती हैं जो उनके लिए बहुत ही हानिकारक होता है ऐसी महिलाओं की भी काउंसलिंग करके उन्हें इस नशे से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

हाईकोर्ट समाचार

हाईकोर्ट ने सफाई इंस्पेक्टरों से खाद्य निरीक्षक का काम लेने के आदेश पर लगाई रोक, सरकार से मांगा जवाब

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट की विशेष अपील बेंच ने एकल जज के उस आदेश पर रोक लगा दी है, जिसके द्वारा एकल जज ने प्रदेश के नगर निगमों एवं अन्य स्थानीय निकायों में कार्यरत सफाई निरीक्षकों को ट्रेनिंग कराकर सफाई इंस्पेक्टर के साथ-साथ फूड इंस्पेक्टर का भी काम करने का निर्देश दिया था। हाईकोर्ट की दो जजों की खंडपीठ ने सिंगल जज के आदेश पर रोक लगाते हुए नगर विकास विभाग के सचिव तथा फूड सेफ्टी एण्ड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट के सचिवों से दो सप्ताह में इस मामले में उनका व्यक्तिगत हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है। यह आदेश इलाहाबाद हाईकोर्ट की डबल बेंच ने प्रदेश सरकार द्वारा दाखिल विशेष अपील पर पारित किया है। प्रदेश के स्थानीय निकाय की तरफ से दाखिल विशेष अपील में एकल जज के 21 मार्च 2023 के आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें एकल जज ने सरकार को निर्देश दिया था कि वह नगर निगमों के सेनेटरी इंस्पेक्टर्स को इस काम के साथ-साथ फूड इंस्पेक्टर का भी काम देने को लेकर ट्रेनिंग कराएं एवं अधिसूचना जारी करें।प्रदेश सरकार की तरफ से दाखिल विशेष अपील पर अपर महाधिवक्ता एम सी चतुर्वेदी एवं अपर मुख्य अस्थाई अधिवक्ता रामानंद पांडेय ने पक्ष रखा। कहा कि प्रदेश के नगर निगमों एवं अन्य स्थानीय निकायों में कार्यरत सफाई इंस्पेक्टरों से फूड इंस्पेक्टर का काम नहीं लिया जा सकता। क्योंकि, इनकी नियुक्ति सेनेटरी इंस्पेक्टर का काम करने को लेकर हुई है न कि फूड इंस्पेक्टर का काम करने के लिए है।

प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ा रहे तदर्थ शिक्षकों की सेवाएं समाप्त करने के आदेश पर रोक

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ा रहे तदर्थ शिक्षकों की सेवाएं समाप्त करने के शासन के आदेश पर अग्रिम आदेशों तक रोक लगा दी है। सेवा समाप्त करने के शासनादेश दिनांक नौ नवंबर 2023 को कई याचिकाएं दाखिल कर तदर्थ शिक्षकों ने चुनौती दी है। शिक्षकों के पक्ष में अंतरिम आदेश पारित करते हुए कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया है की यह आदेश केवल उन्हीं तदर्थ टीचरों पर लागू होगा जिनकी नियुक्तियां सेकंड रिमूवल आफ डिफिकल्टी ऑर्डर एवं धारा 18 तथा यूपी माध्यमिक शिक्षा सेवा आयोग रूल्स 1995 के नियम 15 के अंतर्गत की गई हो।हाईकोर्ट ने यह आदेश विनोद कुमार श्रीवास्तव व कई अन्य दाखिल याचिकाओं पर पारित किया है। कोर्ट ने अपने पारित अंतरिम आदेश में यह भी कहा है कि अंतरिम आदेश का लाभ उन्हीं तदर्थ टीचरों को मिलेगा जो टीचर धारा 33 बी, सी, जी के तहत विनीयमितीकरण के हकदार होंगे। कोर्ट इन याचिकाओं पर अब आगे 14 मार्च 2024 को पुनः सुनवाई करेगी। प्रदेश के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में नियुक्त तदर्थ शिक्षकों ने अलग-अलग याचिकाएं दाखिल कर प्रदेश सरकार द्वारा नौ नवंबर 2023 को जारी शासनादेश को विभिन्न आधारों पर चुनौती दी है। सरकार ने इस शासनादेश के द्वारा प्रदेश में कार्यरत तदर्थ अध्यापकों को जो धारा 33 जी के तहत विनीयमितीकरण के हकदार नहीं है, उनकी सेवाएं समाप्त करने का निर्देश दिया है।

पेंट माई सिटी के तहत चमकेगा शहर बनाई जाएंगी कलाकृतियां शासन ने मंजूर किया बजट

प्रयागराज। महाकुंभ- 2025 को दिव्य एवं भव्य बनाने के लिए शुक्रवार की देर शाम शीर्ष समिति की हुई छठवीं बैठक में 795 करोड़ की 61 नई परियोजनाओं को मंजूरी मिली। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्रा ने विभागवार परियोजनाओं को अनुमोदित किया। इसमें पेंट माई सिटी के तहत शहर को चमकाने की भी योजना शामिल हैं। इसके तहत प्रयागराज मेला प्राधिकरण की ओर से पांच लाख स्क्वायर फीट में कलाकृतियां बनाई जाएंगी। जबकि 20 हजार स्क्वायर फीट दीवारों पर वाल म्यूरल बनाए जाएंगे । जिन परियोजनाओं को मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली शीर्ष समिति ने मंजूरी दी, उनमें पीडब्ल्यूडी की तन, जल निगम की आठ, गंगा प्रदूषण नियंत्रण इकाई, उत्तर प्रदेश जल निगम (ग्रामीण) की पांच, पीडीए की सात, पर्यटन विभाग की दो और प्रयागराज मेला प्राधिकरण की तीन प्रमुख परियोजनाएं शामिल हैं।इससे पहले की पांच बैठकों में शीर्ष समिति की ओर से 3810 करोड़ की 260 अन्य परियोजनाएं अनुमोदित की जा चुकी हैं। इस बार महाकुंभ में रिवर चैनेलाइजेशन के लिए एक हाइड्रोलिक स्टडी भी कराई जाएगी, जिससे नदी के प्रवाह की दिशा को नियंत्रित करना आसान होगा। इससे भविष्य में मेला बसाने और घाट निर्माण के कार्यों में भी सहयोग मिल सकेगा। प्रयागराज के सभी 81 नाले किए जाएंगे टैप : गंगा प्रदूषण नियंत्रण इकाई की अनुमोदित परियोजनाओं के तहत 15 नालों की भी टैपिंग कराई जाएगी। इसके बाद प्रयागराज के सभी 81 नाले टैप हो जाएंगे। मौजूदा समय 39 नाले अनटैप्ड हैं। इनमें से 24 नालों की टैपिंग को पहले ही स्वीकृति मिल चुकी है। शेष 15 की टैपिंग के कार्यों का अनुमोदन इस बैठक में किया गया। नगर निगम की अनुमोदित परियोजनाओं में नौ मार्गों पर प्रकाश व्यवस्था कराई जाएगी। अन्य कई मार्गों का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण एवं सुंदरीकरण कराया जाएगा। दुधिया रोशनी से जगमगाएगा पूरा शहर और आसपास का क्षेत्र।

नगर आयुक्त ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर आयुक्त नगर निगम प्रयागराज चन्द्र मोहन गर्ग द्वारा नगर विकास मंत्री जी के नगर आगमन एवं नगर की सफाई व्यवस्था सुव्यवस्थित एवं सुदृढ़ किये जाने के दृष्टिगत आज दिनांक 06 जनवरी 2024 को 07.00 बजे निगम क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों नवाब यूसुफ रोड, जॉनसेनगंज, चौक कोतवाली नखासकोना खुलदाबाद, नूरउल्ला रोड, चौकी करामत की, करैली, करैला बाग तथा करैली हड्डी गोदाम स्थित नीलकण्ठ एसडब्लूएम प्रा.लि. वर्कशॉप का निरीक्षण किया गया। सामन्यतः प्रत्येक दिनों की तरह आज भी साफ-सफाई का कार्य नियमित रूप होते हुए पाया गया। इसके उपरान्त नगर आयुक्त द्वारा करैली हड्डी गोदाम स्थित नीलकण्ठ एसडब्लूएम प्रा.लि. वर्कशॉप का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान मौके पर लगभग 40 गाड़ियों खड़ी पायी गयी। रूट चार्ट के अनुसार प्रातः 06 बजे तक सभी गाड़ियाँ क्षेत्र में निकल जानी चाहिए। जबकि रजिस्टर चेक करने पर पाया गया कि 20 गाड़ियाँ अभी नही निकली है। रजिस्टर में यह भी अंकित पाया गया कि लगभग 29 गाड़ियाँ बीना हेल्पर के ही क्षेत्र में निकल गई है। उक्त के सम्बन्ध में पहले भी अधोहस्ताक्षरी द्वारा कई बार निर्देशित किया जा चुका है कि गाड़ियों ससमय क्षेत्र में निकलवाना सुनिश्चित करें। मौके पर गार्ड के अलावा एजेन्सी का कोई भी प्रतिनिधि उपस्थित नही थे। जिसके कारण नगर आयुक्त द्वारा आक्रोश व्यक्त करते हुए पर्यावरण अभियन्ता को निर्देशित किया कि एजेन्सी को इस आशय का स्पष्टीकरण जारी किया जाए एवं सूचित करते हुए संतोषजनक उत्तर न प्राप्त होने पर अर्थदण्ड आरोपित किया जाए। इस दौरान सम्बन्धित क्षेत्र के जोनल अधिकारी तथा क्षेत्रीय सफाई एवं खाद्य निरीक्षक भी उपस्थित रहे।

मंत्री नगर विकास ने किया माघ मेला व महाकुम्भ के व्यवस्थाओं एवं तैयारियों की समीक्षा

- मंत्री जी ने मेला क्षेत्र में कराये जा रहे कार्यों का किया निरीक्षण, दिए आवश्यक दिशा-निर्देश
- मेले में आने वाले श्रद्धालुओं, स्नानार्थियों, कल्पवासियों, साधु-महात्माओं को न होने पाये किसी भी प्रकार की असुविधा
- पूरे मेला क्षेत्र में साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था बनाये रखने के दिए निर्देश
- माघ मेला क्षेत्र में सुरक्षा की चाक-चौबंद व्यवस्था बनाये रखने के दिए निर्देश
- कार्यों को गुणवत्तापूर्ण ढंग से निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराये जाने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मंत्री नगर विकास शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त स्त्रोत विभाग, उ0प्र0 ए0के0 शर्मा शनिवार को मेला प्राधिकरण स्थित आईसीसीसी सभागार में माघ मेला एवं आगामी महाकुम्भ-2025 की तैयारियों के सम्बंध में समीक्षा बैठक की। माघ मेला की तैयारियों की समीक्षा करते हुए मंत्री जी ने मकर संक्रान्ति सहित अन्य स्नान पर्वों हेतु की गयी तैयारियों के सम्बंध में बैठक करते हुए उन्होंने अधिकारियों को माघ मेले को सकुशल, सुरक्षित एवं स्वच्छ ढंग से कराये जाने हेतु निर्देशित किया है। उन्होंने कहा कि माघ मेला में आने वाले श्रद्धालुओं, स्नानार्थियों, कल्पवासियों, साधु-महात्माओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न होने पाये। उन्होंने माघ मेला क्षेत्र में साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था निरंतर बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि घाटों पर विशेष व्यवस्थायें सुनिश्चित रहे, जिससे कि स्नानार्थियों को स्नान करने में कोई असुविधा न होने पाये। मंत्री जी ने माघ मेले के आयोजन के बारे में की गयी तैयारियों की जानकारी ली, जिसपर मेलाधिकारी श्री विजय किरन आनन्द के द्वारा प्रेजेंटेशन के माध्यम से मंत्री जी को तैयारियों के बारे में जानकारी दी गयी।

मेलाधिकारी ने मेले के प्रमुख स्नान पर्वो की तिथियों की जानकारी, क्षेत्रफल, सेक्टरों की संख्या, घाटों की संख्या व लम्बाई, अनुमानित कल्पवासियों की संख्या, प्रमुख स्नान पर्वों पर आने वाले अनुमानित श्रद्धालुओं की संख्या, भूमि आवंटन, चिकित्सा केन्द्रों, शौचालयों सहित अन्य व्यवस्थाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इसके साथ ही उन्होंने महाकुम्भ-2025 के आयोजन के दृष्टिगत इस बार माघ मेले में जो नए अभिनव प्रयोग किए जा रहे के बारे में भी विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि इस बार वाटर लेजर शो, थिमेटिक गेट्स, फ्लोटिंग जेटी, ड्रोन मानीटरिंग, सैनिटेशन ब्लाक, सोलर लाइट, थिमेटिक लाइट्स सहित अन्य नए प्रयोग माघ मेले में किए जा रहे है। मंत्री जी के द्वारा माघ मेला में पार्किंग व यातायात व्यवस्था के बारे में जानकारी ली गयी। उन्होंने कहा कि पार्किंग स्थल का चिन्हॉकन ऐसे स्थानों पर किया जाये, जो मेला क्षेत्र से दूर न हो, जिससे कि साधु-संतो, कल्पवासियों, श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।मंत्री जी ने माघ मेला क्षेत्र में साफ-सफाई की उत्तम व्यवस्था निरंतर बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि घाटों पर विशेष व्यवस्थायें सुनिश्चित रहे, जिससे कि स्नानार्थियों को स्नान करने में कोई असुविधा न होने पाये। उन्होंने गहरें पानी में बैरिकेटिंग लगाये जाने के साथ-साथ गोताखोरों एवं जल पुलिस की भी पर्याप्त मात्रा में तैनाती सुनिश्चित किए जाने के लिए कहा है। मंत्री जी ने बैठक में पूरे मेला क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में साइनेज लगवाये जाने के निर्देश दिए है, जिससे कि मेला क्षेत्र में आने वाले लोगो को मेला में की गयी व्यवस्थाओं के सम्बंध में सही ढंग से जानकारी हो सके। मा0 मंत्री जी ने ठण्ड के दृष्टिगत पूरे मेला क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में अलाव जलाये जाने तथा श्रद्धालुओं के लिए बनाये गये पण्डालों में पुआल बिछायें जाने की व्यवस्था के साथ-साथ प्रकाश, पानी की भी व्यवस्था समुचित रूप से किए जाने के लिए कहा है।मंत्री जी ने मेला क्षेत्र में सुरक्षा की चुस्त-दूरूस्त व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि मेले में काफी संख्या में श्रद्धालु आएंगे, इसके दृष्टिगत उसी के अनुरूप सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था बनाये रखी जाये। मा0 मंत्री जी ने पाण्टून पुलों एवं नावों का नियमित रूप से अनुश्रवण करते रहने के निर्देश दिए है। मेला क्षेत्र में बनाये गये शौचालयों की नियमित रूप से सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि माघ मेला 2024 को महाकुम्भ-2025 के रिहर्सल के रूप में लेकर कार्य करें।मंत्री जी ने सिंचाई विभाग के अधिकारियों को गंगा जी में पर्याप्त मात्रा में जल की व्यवस्था, जल की शुद्धता, नदियों में सीधे नाले का गंदा पानी किसी भी हाल में न गिरने पाये, यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। मंत्री जी ने माघ मेला के आयोजन में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा है। माघ मेले में नदी के कटान व मुख्य स्नान स्थलों व घाटों पर स्वच्छता का विशेष ध्यान देने के लिए कहा है। मंत्री जी ने माघ मेले के दौरान ड्यूटी पर लगाये गये सफाई कर्मियों के ठहरने के स्थान पर सभी आवश्यक मूलभूत व्यवस्थायें अच्छे ढंग से कराये जाने के निर्देश दिए है। महाकुम्भ मेला के दृष्टिगत कराये जा रहे कार्यों की समीक्षा करते हुए कार्यों की प्रगति के बारे में जानकारी ली, जिस पर मेलाधिकारी विजय किरण आनन्द के द्वारा बताया गया कि जनपद में बन रहे आर0ओ0बी0, एयरपोर्ट, डिजिटल लाइब्रेरी, पर्यटन स्थलों का उच्चीकरण व कॉरिडोर बनाना, कल्चर सेंटर, फ्लोटींग रेस्टोरेंट, स्पोटर्स वाटर, कुम्भ के दृष्टिगत यातायात व पार्किंग व्यवस्था, सड़कों का चौड़ीकरण, सुन्दरीकरण व सुदृढ़ीकरण, रिवटर फ्रंट रोड़, रिंग रोड सहित महाकुम्भ के आयोजन के दृष्टिगत कराये जा रहे अन्य विकास कार्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। मा0 मंत्री जी ने पॉवर कारपोरेशन, पीडब्लूडी, जल निगम, नगर निगम, यूपीएसआरटीसी, स्वास्थ्य विभाग, प्रयागराज विकास प्राधिकरण, सिंचाई विभाग, र्प्यटन विभाग, वन विभाग व अन्य विभागों के सम्बंधित अधिकारियों से उनके विभाग के द्वारा महाकुम्भ-2025 से सम्बंधित कराये जा रहे कार्यों के बारे में प्रत्येक अधिकारी से विस्तृत जानकारी प्राप्त की। उन्होंने प्रत्येक प्रोजेक्ट की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करते हुए कार्यों को गुणवत्तापूर्ण ढंग से निर्धारित समयावधि में पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिए है। उन्होंने बैठक में उपस्थित अधिकारियों से कहा कि आप सभी लोग अपने स्वयं की रूचि से पहल कर विभागीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए अपने विभाग से सम्बंधित कार्यों को चुस्त-दूरूस्त व प्रजेंटेवल बनाने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि शहर के नाले-नालियों की सफाई की विशेष व्यवस्था की जाए, जिससे जो लोग यहां आयें, वे एक स्वच्छता का संदेश लेकर वापस जाये, जिससे शहर की एक अच्छी छवि बन सके। बैठक में महापौर श्री उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी, विधायक शहर उत्तरी श्री हर्षवर्धन वाजपेयी, विधायक करछना श्री पीयूष रंजन निषाद, महानगर अध्यक्ष राजेन्द्र मिश्रा जी ने भी अपने-अपने सुझाव दिए।बैठक के उपरांत मंत्री जी ने मेला क्षेत्र में कराये जा रहे कार्यों का निरीक्षण करते हुए संगम पहुंचकर मां त्रिवेणी की पूजा-अर्चना की तथा माघ मेले के सकुशल सम्पन्न होने की कामना की। इसके उपरांत मंत्री जी ने लेटे हनुमान जी का दर्शन व पूजन भी किया। इस अवसर पर महापौर श्री उमेश चन्द्र गणेश केसरवानी, विधायक शहर उत्तरी हर्षवर्धन वाजपेयी, विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद, महानगर अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्रा सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत, मेलाधिकारी विजय किरण आनन्द, जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल, पीडीए उपाध्यक्ष अरविंद सिंह चौहान, नगर आयुक्त चन्द्र मोहन गर्ग, प्रभारी माघ मेलाधिकारी दयानन्द प्रसाद, प्रभागीय वनाधिकारी महावीर कौजलगी सहित अन्य सम्बंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

7 जनवरी से मांडा दशमीहवा मैदान में क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन करेंगे भाजपा नेता योगेश शुक्ल

मांडा। रविवार को स्व. अनंत विजय द्विवेदी की पुण्यस्मृति पर क्रिकेट प्रतियोगिता का फीता काट शुभारंभ भाजपा नेता योगेश शुक्ल ने मांडा के दशमीहवा मैदान में करेंगे। बतादें कि स्व. अनंत विजय द्विवेदी के पुण्यस्मृति में युवा शक्ति संगठन द्वारा एक बड़े क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। जिसमे अंतर्जनपदीय खिलाड़ी क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रतिभाग लेंगे। उक्त जानकारी क्रिकेट प्रतियोगिता के आयोजक शशि भूषण द्विवेदी ने देते हुए क्रिकेट खिलाड़ियों से प्रतिभाग लेने की अपील की।

वृद्ध महिला यमुना में कूदी नाविकों ने बचाया

नैनी। नैनी क्षेत्र के काजीपुर इलाके में रहने वाली 70 वर्षीय चम्पा देवी पत्नी स्व.जगदीश पटेल के चार बेटे हैं। चम्पा देवी शनिवार को नैनी के नए पुल पर पहुंचीं और यमुना में कूद गई। पानी में मौजूद नाविकों ने वृद्धा को गहरे पानी से बाहर निकाला और पुलिस की मदद से एसआरएन हास्पिटल में भर्ती कराया, जहां उनकी हालत नाजुक बनी है है। वृद्धा के इस कदम के पीछे कुछ दिन पूर्व जमीन के विवाद में दर्ज हुए मुकदमें के बाद घर में शुरू हुई पारिवारिक कलह बताई जा रही है।

आठ जनवरी को लगेगा दिव्यांगों का शिविर

मऊआइमा। मऊआइमा विकास खंड परिसर में आठ जनवरी को दिव्यांग शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें नया दिव्यांग प्रमाण पत्र एवं दिव्यांग व्यक्तियों को उपकरण जैसे ट्राई साइकिल मोटराइज्ड ट्राई साइकिल बैसाखी छड़ी कान की मशीन चश्मा आदि के लाभार्थियों का चिन्हित कर दिया जाएगा।, उक्त जानकारी जानकारी सहायक विकास अधिकारी समाज कल्याण अजय कुमार निर्मल एवं अनवर हुसैन ने दी।

लोकसभा सामान्य निवार्चन-2024 के दृष्टिगत नोडल अधिकारियों के साथ सीडीओ ने की बैठक

प्रयागराज। मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को संगम सभागार में आगामी लोक सभा सामान्य निवार्चन-2024 के दृष्टिगत भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश के दिशा-निदेर्शों के अनुरूप निर्वाचन सम्बंधी कार्यों की समयबद्ध तैयारी एवं निर्वाचन को सकुशल, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष रूप से सम्पादित कराये जाने हेतु नोडल अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने सभी नोडल अधिकारियों को भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन अधिकारी उत्तर प्रदेश के निदेर्शों के अनुरूप समयबद्ध रूप से कार्यों को सम्पादित कराये जाने के निर्देश दिए है। बैठक में कामिंकी की नियुक्ति, मतदाता जागरूकता, टेण्टेज, फर्नीचर, बैरिकेटिंग, लाउडस्पीकर तथा प्रकाश आदि की व्यवस्था से सम्बंधित टेण्डरिंग कार्यों, कंट्रोल रूम, शिकायत मानीटरिंग सिस्टम, मतदान केन्द्रों पर मूलभूत सुविधाएं, वेबकास्टिंग की व्यवस्था, जोनल/सेक्टर/स्टैटिक मजिस्टेटों की नियुक्ति, यातायात रूटचार्ट, डिस्ट्रिक इलेक्शन मैनेजमेंट प्लान, कम्यूनिकेशन प्लान, सीसीटीवी की व्यवस्था, वीडिओग्राफी, कम्प्यूटरीकृत एवं सांख्यिकिय सूचना का प्रेषण, निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण एवं निर्वाचन व्यय लेखा, पोलिंग पार्टी प्रशिक्षण सहित अन्य कार्यों से सम्बंधित अधिकारियों को अपने कार्यों को समयबद्ध ढंग से सम्पादित किए जाने के निर्देश दिए है। बैठक में अपर जिलाधिकारी नगर मदन कुमार, मुख्य राजस्व अधिकारी कुंवर पंकज, अपर जिलाधिकारी आपूर्ति जे0पी0 सिंह, सिटी मजिस्टेट विनोद कुमार सिंह सहित नोडल अधिकारीगण उपस्थित रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत गधियाव, वि. ख. करछना प्रयागराज

पत्रांकः मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2023-24 **टेण्डर/कोटेशन** दिनांक : 06.01.2024

ग्राम पंचायत **गधियाव** में वित्तीय वर्ष 2023-24 में कराये जाने वाले कार्य, मनरेगा/15 वां वित्त/राज्य वित्त योजना अन्तर्गत ग्राम पंचायत **गधियाव** विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के लिए इच्छुक पंजीकृत फर्मो से अल्प कालीन निविदा आमंत्रित की जाती है, आकड़न/प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर प्राप्त आपूर्ति भाड़ा एवं कार्य की मजदूरी सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 07-01-2024 से दिनांक 21-01-2024 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं । नियम व शर्ते किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है , तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 22-01-2024 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेण्डर /कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 22-01-2024 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस-जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है। उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा, जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा, साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा। उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा। उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्ते लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु उचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत श्रम एवं सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूति की अवधि
1.	गाटा संख्या 112 पर खेल का मैदान निर्माण कार्य	7.63 358 लाख	3 माह
2.	पूर्व माध्यमिक विद्यालय मर्दापुर में बाउंड्रीवाल निर्माण कार्य	5.19 000 लाख	3 माह
3.	शिवकुमार के बाउंड्री से राजकुमार के चक तक इण्टरलाकिंग निर्माण कार्य	5.00 लाख	3 माह

श्रीमती बबीता यादव
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत गधियाव
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

कमल सिंह
सचिव
ग्राम पंचायत गधियाव
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

डीएम ने राशन कार्ड के प्रकरण पर सप्लाई इन्सपेक्टर को लगायी कड़ी फटकार

सम्पूर्ण समाधान दिवस रानीगंज में डीएम ने सुनी शिकायतें, 04 का हुआ निस्तारण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में तहसील रानीगंज में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस दौरान विधायक रानीगंज डा0 आर0के0 वर्मा, मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा भी उपस्थित रहे। रानीगंज तहसील सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 290 फरियादी अपनी समस्याओं के निस्तारण हेतु उपस्थित हुये जिनमें से 04 शिकायतें इस प्रकृति की पायी गयी जिनका मौके पर निस्तारण कर दिया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल प्राप्त 290 शिकायतों में से 141 शिकायतें राजस्व विभाग से, पुलिस विभाग से 80, विकास विभाग से 31, समाज कल्याण से 07, पूर्ति विभाग 04 एवं 27 अन्य विभागों से सम्बन्धित शिकायते प्राप्त हुई। सम्पूर्ण समाधान दिवस में विधायक रानीगंज एवं मुख्य विकास अधिकारी नवनीत सेहारा ने भी शिकायतकताओं की शिकायतें सुनी।

समाधान दिवस पर समस्या सुनते जिलाधिकारी संजीव रंजन।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में शिकायतकर्ता ने जिलाधिकारी के समक्ष शिकायत करते हुये कहा कि राशन कार्ड में पात्र होने के बावजूद मेरा राशन कार्ड नही बनाया जा रहा है बार-बार दौड़ाया जा रहा है जिससे प्रार्थी काफी परेशान है, इस प्रकरण पर जिलाधिकारी ने सप्लाई इन्सपेक्टर रानीगंज को कड़ी फटकार लगाते हुये निर्देशित किया कि शिकायकर्ता का राशन कार्ड यथा शीघ्र बनाया जाये।

जिलाधिकारी ने जन शिकायतों को गम्भीरता पूर्वक सुनकर उसका निस्तारण सम्बन्धित अधिकारियों को ससमय गुणवत्तापूर्ण ढंग से कराने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में निर्देशित किया कि शासन की मंशा अनुरूप शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से किया जाये एवं शिकायतकर्ता को पूर्णरूप से संतुष्ट किया जाये। विधायक रानीगंज ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जो भी योजनायें संचालित है उसको प्राथमिकता के आधार पर पात्र व्यक्तियों को लाभ अवश्य दिया जाये जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी रानीगंज शैलेन्द्र कुमार वर्मा, जिला विकास अधिकारी राकेश प्रसाद, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 जी0एम0 शुक्ला, सीओ रानीगंज विनय प्रभाकर, तहसीलदार, नायब तहसीलदार सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। तहसील रानीगंज परिसर में ग्राम दरियापुर के दिव्यांग व्यक्ति बड़े लाल गुप्ता के दिखायी देने पर विधायक रानीगंज, जिलाधिकारी ने ठंड से बचाव हेतु दिव्यांग को कम्बल देकर उसे आश्वासन दिया कि उसको ट्राईसाइकिल एवं आवास का लाभ प्रदान किया जायेगा, इस हेतु जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारी को निर्देशित भी किया।

समाधान दिवस में छप्पन शिकायतों में से पांच का निस्तारण, एसडीएम व सीओ ने सुनीं शिकायतें

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। तहसील स्तरीय सम्पूर्ण समाधान दिवस लालगंज में छप्पन शिकायतें आयी। इनमे से अफसरो ने पांच शिकायतो का मौके पर निस्तारण कराया।

सर्वाधिक शिकायतें राजस्व विभाग की तीस, पुलिस विभाग दस, विकास विभाग आठ, विद्युत विभाग नौ तथा अन्य विभागों की छः रहीं। एसडीएम लालधर सिंह यादव ने शिकायतों की सुनवाई करते हुए मातहतो को निस्तारण के कड़े निर्देश दिये। एसडीएम ने मातहतों को इस बात की हिदायत दी कि समाधान दिवस में जमीनी विवाद से जुड़ी शिकायतें ज्यादातर देखने को मिल रही हैं।

उन्होने तहसीलदार से इन शिकायतों के निस्तारण के लिए राजस्व एवं पुलिस टीम का गठन फौरन कराए जाने को कहा। वहीं पुलिस से जुड़ी शिकायतों की सुनवाई सीओ रामसूरत सोनकर ने की। कल्यानपुर की शीला मिश्रा ने दिये गये प्रार्थना पत्र में विपक्षियों द्वारा उसकी जमीन पर चोरी छिपे निर्माण का आरोप लगाया। इस पर एसडीएम व सीओ ने पुलिस व संयुक्त टीम को मौके पर रवाना कराया। तहसील दिवस का संचालन तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर एडीओ पंचायत आद्या प्रसाद द्विवेदी, एसडीओ विद्युत आशुतोष कुमार, अधीक्षक डा. अरविन्द गुप्ता, वन क्षेत्राधिकारी एसपी मिश्रा आदि रहे।

समाजवाद के पुरोधा थे स्व. राम नरेशः डॉ विजय

पैतृक गांव में आयोजित की गई 12वीं पुण्यतिथि

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। समाजवाद के झंडा बरदार दलितों पिछड़ों के हितों व सम्मान के लिए जीवन पर्यंत संघर्ष करने वाले वरिष्ठ समाजवादी नेता व पूर्व प्रधान स्वर्गीय रमेश यादव सच्चे समाजवाद के पुरोधा थे। वह जीवन पर्यंत जातिवादी व विघटनकारी शक्तियों से संघर्ष करते रहे।

उक्त बातें महेशगंज थाना क्षेत्र के रामचंद्र पूरे झाऊ में स्वर्गीय रमेश यादव की 12वीं पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि डॉ विजय यादव अपने संबोधन में व्यक्त कर रहे थे। आगे उन्होंने कहा कि आने वाली युवा पीढ़ी को स्व.राम नरेश से प्रेरणा लेकर सामाजिक राजनीतिक गतिविधियों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए। कार्यक्रम के संयोजक प्रधान महेंद्र प्रताप यादव मुन्ना ने स्व.राम नरेश यादव के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम में आए सभी के प्रति धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। इस मौके पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सर्वश्री राजाराम यादव, श्यामलाल पटेल, बैजनाथ पाल, शिव प्रताप यादव बबलू, रामखेलावन, गिरिजा शंकर, अमृतलाल, रामसेवक, समीर यादव, जियालाल प्रजापति, ओमप्रकाश, त्रिलोकी यादव, दिनेश कुमार यादव समेत बड़ी संख्या मे लोग मौजूद रहे।

रमेश यादव के चित्र पर माल्यार्पण करते मुख्य अतिथि।

प्रसूता की मौत पर जमकर हंगामा, नर्सिंग होम सील

आपरेशन से पुत्र पैदा होने के बाद चढ़ाया जा रहा था दूषित ब्लड

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के कंधई थाना क्षेत्र की आसलपुर गांव निवासी (27) वर्षीय खुशबू चैरसिया का कल शाम जिला अस्पताल के समीप एक नर्सिंग होम में आपरेशन से पुत्र उत्पन्न होने के बाद खरीदकर आया दूषित रक्त चढ़ाने पर उसे उल्टियां होने लगी और कुछ ही देर बाद उसकी सांसें थम गई। इस पर नर्सिंग होम के लोग आनन-फानन में उसे बाहर निकाले और एक एम्बुलेंस से प्रयागराज भेज दिया।

परिजनों का आरोप है कि उक्त प्रसूता को कल शाम नर्सिंग होम में आपरेशन से पुत्र पैदा हुआ और नर्सिंग होम के लोगों ने 12 हजार रुपये मांगकर दूषित रक्त मंगाया, जिसे चिकित्सकों व नर्सिंग होम कर्मचारियों ने जैसे ही प्रसूता को रक्त चढ़ाया, उसे उल्टियां होने लगी और उसकी जान चली गई। परिजनों ने आज इस पर जमकर हंगामा किया। जबकि नर्सिंग होम के लोग अस्पताल बंद करके फरार हो गये हैं। हंगामे की जानकारी मिलने पर स्वास्थ्य विभाग ने पहुंचकर नर्सिंग होम को सील कर दिया है और मामले की छानबीन कर रही है। इस सम्बन्ध में महिला के ससुर घनश्याम चैरसिया ने घटना की तहरीर नगर कोतवाली में देकर दोषी चिकित्सकों एवं कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही की मांग की है। बता दें कि मेडिकल कालेज अस्पताल के बाहर दर्जनों नर्सिंग होम काम कर रहे हैं, जहां मेडिकल कालेज के कर्मचारी और आशा लोगों की सांठ-गांठ मरीज इन नर्सिंग होमों में ले जाये जाते हैं।

मृतका खुशबू (फाइल फोटो)।

प्रसूता की मौत पर हंगामा करते परिजन।

घर-घर लोगों को बांटे जा रहे पूजित अक्षत व आमंत्रण पत्र

आरएसएस ने कई स्थानों पर किया आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा गृह संपर्क अभियान के माध्यम से घर-घर पूजित अक्षत और आमंत्रण पत्र पहुंच रहा है। संपूर्ण जिले का वातावरण राममय हो गया है। गांव-गांव, नगर-नगर श्री राम के नाम का उद्घोष हो रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतापगढ़ विभाग के विभाग प्रचारक प्रवेश के कुशल मार्गदर्शन में अभियान पूरे विभाग में पूर्ण उत्साह के साथ गतिमान है।

इस क्रम में विभाग प्रचारक प्रवेश, नगर पालिका अध्यक्ष हरि प्रताप सिंह, जिला संघचालक चिंतामणि दुबे, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग बौद्धिक शिक्षण प्रमुख डॉ सौरभ पांडेय ने जिले के अनेक स्थानों सुवंसा, रानीगंज के साथ-साथ प्रतापगढ़ नगर में सगरा, पूरे ईश्वरनाथ, शुकुलपुर, टक्करगंज, दहिलामऊ दक्षिणी, दहिलामऊ उत्तरी क्षेत्र में ढोल नगाड़ों की धुन पर उत्साहित युवाओं की टोली के साथ घर-घर पूजित अक्षत का वितरण किया।

हाथ में ध्वजा लिए हुए और भगवान के नाम का जयघोष करते हुए हर घर से लोग भावपूर्ण रूप में अक्षत लेने के लिए निकल रहे थे। विभाग प्रचारक प्रवेश ने लोगों से व्यक्तिगत वार्ता करके 22 जनवरी के दिन को उत्सव पूर्वक बनाने की योजना तैयार की।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के विभाग मंत्री रजनीश तिवारी, नगर संघचालक राज नारायण सिंह, सह नगर संघचालक विजय सिंह, सह व्यवस्था प्रमुख नितेश खंडेलवाल, प्रमोद पांडेय, नगर प्रचारक आलोक, नगर भाजपा अध्यक्ष आलोक गर्ग, सभासद सुनील दुबे, सभासद तुषार दत्त मिश्र, सभासद विनोद रजक, ऋचा सिंह, प्रमिला शुक्ला, पूर्व सभासद विनोद पांडेय, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष प्रमोद मौर्य, पंकज सिंह, पूर्व सभासद ज्ञानेश मिश्रा, संजीव आहूजा रतन चंद्र जैन, रवीश कुमार, अजय पांडेय, सतीश उपाध्याय, डॉ आरपी सिंह, विनोद शास्त्री, चंद्र प्रकाश शुक्ल, विनय शुक्ल, सर्वोत्तम पांडेय, मनोज सिंह आदि रहे।

लोगों को पूजित अक्षत देते नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह।

घर-घर अक्षत वितरण करके जागरुक कर रहे कार्यकर्ता

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। अयोध्या में बन रहे भव्य श्री राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह 22 जनवरी को है जिसकी तैयारी धूमधाम से पूरे देश में चल रही है इसी क्रम में पट्टी नगर में कार्यकर्ता टोली बनाकर घर-घर जाकर के अक्षत वितरण कर रहे हैं आज वार्ड नंबर 10 में अक्षत वितरण किया गया श्री रामजन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा अभियान के मन्दिर प्रमुख प्रिन्स बरनवाल ने बताया कि आज लगभग 120 परिवारों में संपर्क करके पूजित अक्षत,राम मंदिर का चित्र और पत्रक दिया गया, जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षक राजेश दूबे, सर्वेश मिश्रा, महेन्द्र दूबे, सभासद प्रतिनिधि सजीवन सोनी, राम चरित्र वर्मा, पूर्व सभासद रमेशचंद्र सोनी, संतोष जायसवाल, आनन्द सोनी, धीरज पाठक, सूरज गुप्ता, रमाशंकर जायसवाल, राजेश उमरवैश्य मौजूद रहे।

रिटायर शिक्षक की ठंड लगने से मौत

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगज थाना क्षेत्र के झुकवारा गांव निवासी रिटायर शिक्षक राम बहाल सिंह पुत्र स्व0 रामनरेश सिंह (75) वर्षीय बीमारी के चलते शनिवार की भोर पहर कड़ाके की पड़ रही ठंड के चलते मौत हो गई।मौत से परिजनों मे कोहराम मच गया, जिनका अंतिम संस्कार नवाबगंज सोनामऊ गंगाघाट किनारे किया गया जिसमे भारी संख्या में ग्रामवासी व शुभ चिंतक लोग शामिल रहे। बता दें कि उक्त गांव मे गुरुवार की बीती रात को रिटायर शिक्षक रामबहाल सिंह के सगे परिवार में शिव बहाल सिंह पुत्र देव नारायन सिंह (74) वर्षीय की कडाके की पड़ रही ठंड के चलते मौत हो गई।

छुटटा मवेशियों से तंग ग्रामीणों के साथ महिलाओं ने समाधान दिवस में अफसरों को घेरा

एसडीएम ने समस्या के समाधान का भरोसा दिलाकर माहौल को कराया शांत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। छुटटा मवेशियों से खेती को हो रहे नुकसान से पीड़ित ग्रामीणों का आक्रोश शनिवार को उबाल लिए हुए दिखाई पड़ा। लालगंज तहसील के पुरवारा गांव से सैकडो की संख्या में किसानों व महिलाओं का जत्था दोपहर अचानक तहसील आ पहुंचा। छुटटा मवेशियों से फसल नुकसान को लेकर आक्रोशित ग्रामीण तहसील परिसर में प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करने लगे।

आक्रोशित ग्रामीणों की मांग के समर्थन में अधिवक्ताओं को भी सुर में सुर मिलाते देखा गया। इसके बाद नाराज ग्रामीण व महिलाएं समाधान दिवस में पहुंच गयी। सैकड़ों की तादात में विरोध प्रदर्शन करने वालों का जत्था देख अफसर भी कुछ देर के लिए आवाक रह गये। वहीं समाधान दिवस में कुछ देर के लिए अफरातफरी का माहौल बन गया। एसडीएम लालधर सिंह यादव ने आक्रोशित ग्रामीणों और महिलाओं को समस्या के समाधान का भरोसा दिलाते हुए शांत कराया। एसडीएम को दिए गए शिकायती पत्र में गांव के भोलानाथ तिवारी, चंद्रकेश सरोज, दीपक पाण्डेय, अशोक कुमार, अनिल चैरसिया, जमुना सरोज, मझिला, रानी, चंद्रकला, बड़का आदि का कहना है कि छुटटा जानवर रात में उनकी फसल चर ले रहे हैं। इन मवेशियों को गोशाला भेजवाए जाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया जा रहा है। छुटटा मवेशियों से परेशान धारूपुर के अधिवक्ता अजय शुक्ला, तपन पाण्डेय, हरकेश पटेल ने भी एसडीएम को शिकायती पत्र देकर कहा है कि सप्ताह भर से आदेश के बावजूद रामपुर संग्रामगढ़ के खण्ड विकास अधिकारी उनके गांव में घूम रहे छुटटा मवेशियों के झुण्ड को गोशाला नहीं भेजवा रहे हैं।

इग्नू की परीक्षा में पांच परीक्षार्थी रहे अनुपस्थित

एमडीपीजी कालेज में चल रही इग्नू, बीएड व एलएलबी की परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कालेज में आयोजित इग्नू की परीक्षा में आज भी पांच परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। आज बीए, बीएससी के अलावा एम ए ज्योतिष, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, लोक प्रशासन आदि विषयों की परीक्षा हुई। जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडेय ने बताया की आज तेइस परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिसमें 18 ने परीक्षा दी और पांच परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

उधर प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय की बीएड एवं एलएलबी की परीक्षाएं आज से जनपद के विभिन्न केंद्रों पर शुरू हुईं। एमडीपीजी कॉलेज में आज 11 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे जबकि 567 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। प्रथम पाली में एलएलबी थर्ड सेमेस्टर एवं द्वितीय पाली में बीएड थर्ड सेमेस्टर की परीक्षाएं संपन्न हुईं। प्रथम पाली की परीक्षा 10 बजे से 12 बजे तक एवं द्वितीय पाली की परीक्षा दो बजे से चार बजे तक हुई। प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र के निर्देशन में आवश्यक तलाशी के उपरांत ही परीक्षार्थियों को परीक्षा कक्ष में प्रवेश करने दिया गया। एमडीपीजी के जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडे ने बताया कि प्रथम पाली में 333 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिनमें 324 ने परीक्षा दी और नौ अनुपस्थित रहे जबकि द्वितीय पाली में 245 परीक्षार्थी पंजीकृत थे जिनमें 243 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी और दो परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

परीक्षा कक्ष का निरीक्षण करते शिक्षकगण।

इग्नू में अब 31 जनवरी तक होगा प्रवेश

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय में 31 जनवरी तक प्रवेश लिया जा सकेगा। देश के सबसे बड़े विश्वविद्यालय इग्नू ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश की तिथि बढ़ा दी है।

विश्वविद्यालय के किसी भी पाठ्यक्रम में अब 31 जनवरी तक प्रवेश होगा। जनपद के एकमात्र इग्नू अध्ययन केंद्र एमडीपीजी कॉलेज में इग्नू के 43 पाठ्यक्रमों के काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध है। जनपद के एमडीपी अध्ययन केंद्र को नए वर्ष पर दो नए पाठ्यक्रमों की मान्यता मिली है। एमडीपीजी से अब एमएससी जूलॉजी एवं एमएससी बायोकेमेस्ट्री की पढ़ाई की जा सकेगी। इग्नू अध्ययन केंद्र के समन्वयक डॉ अभिषेक सिंह ने बताया कि इससे जनपद वासियों को विज्ञान विषय से पीजी की पढ़ाई करने में सुविधा होगी। एमडीपीजी के जन सूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडेय ने बताया कि प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, अमेठी और जौनपुर जनपदों के शिक्षार्थी एमडीपीजी केंद्र से पंजीयन एवं काउंसलिंग कराकर अपना भविष्य संवार रहे हैं। प्रतापगढ़ जनपद में अभी तक जूलॉजी एवं बायोकेमेस्ट्री से एमएससी की सुविधा नहीं थी किंतु इग्नू ने एमडीपीजी कॉलेज के अध्ययन केंद्र को इसकी मान्यता दे दी है जिससे शिक्षार्थी एमएससी की पढ़ाई जनपद में ही कर सकेंगे।

साथियों के उत्पीडन पर वकीलों ने जमकर किया विरोध प्रदर्शन, नारेबाजी

रानीगंज तहसील के अधिवक्ता आंदोलन का जताया समर्थन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले भर में साथियों के उत्पीड़न से नाराज वकीलों ने शनिवार को यहां जमकर विरोध प्रदर्शन किया। रानीगंज तहसील में एसडीएम तथा वकीलों के बीच टकराव तथा जिले की कोतवाली नगर व फतनपुर थाने में साथी अधिवक्ताओं के खिलाफ दर्ज मुकदमों की जानकारी से वकील भड़क उठे।

संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश व रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल की अगुवाई में अधिवक्ता तहसील परिसर में एकत्रित हुए। वकीलों ने रानीगंज के एसडीएम को लेकर साथी अधिवक्ताओं के आंदोलन के समर्थन में हुंकार भरी। वहीं जिला मुख्यालय में विधि व्यवसाय कर रहे साथी अधिवक्ता अरूण त्रिपाठी व माताफेर त्रिपाठी तथा गंगा प्रसाद यादव के विरूद्ध दर्ज एफआईआर को फर्जी करार देते हुए अधिवक्ताओं ने इसे निरस्त कराए जाने की भी मांग उठाई। वकीलों ने तहसील गेट पर भी पुलिस व प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

आक्रोशित वकील परिसर में नारेबाजी करते हुए समाधान दिवस में भी आ धमके। वकीलों ने यहां एसडीएम लालधर सिंह यादव तथा सीओ रामसूरत सोनकर को डीएम को संबोधित मांग पत्र सौंपा। एसडीएम ने अधिवक्ताओं की बात जिले के अफसरों तक पहुंचाए जाने का भरोसा दिलाते हुए वकीलों के आक्रोश को ठण्डा किया। इस मौके पर पूर्व अध्यक्ष राममोहन सिंह, अजय शुक्ल गुडडू, विनय शुक्ल, गया प्रसाद मिश्र, विनोद मिश्र, हरिश्चंद्र पाण्डेय, दिनेश सिंह, संदीप सिंह, संतोष पाण्डेय, सिंटू मिश्र, विपिन शुक्ला, शैलेन्द्र मिश्र, प्रमोद सिंह, सुजीत त्रिपाठी, राजेश तिवारी, आशीष तिवारी, दिनेश मिश्र आदि अधिवक्ता रहे।

दुर्घटना में महिला घायल, रेफर

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात डाला वाहन की टक्कर से महिला को गंभीर चोंटे आ गयी। उदयपुर थाना के दर्रा निवासी अभिषेक प्रताप सिंह नगर पंचायत के शीतलमऊ वार्ड में रोडवेज डिपो के पीछे किराये के मकान में रहते हैं। शनिवार की सुबह करीब साढ़े पांच बजे अभिषेक अपनी पत्नी मनीषा सिंह 34 के साथ लालगंज शीतलमऊ मार्ग पर मार्निंग वॉक कर रहे थे। इस बीच विपरीत दिशा में एक अज्ञात डाला वाहन ने मनीषा को टक्कर मार दी। गंभीर रूप से चुटहिल मनीषा को आननफानन में नगर स्थित ट्रामा सेण्टर लाया गया। यहां प्रारंभिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने मनीषा को जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

ग्रामसभा की जमीन पर कब्जे की शिकायत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। खलिहान की सरकारी भूमि पर अवैध तरीके से कब्जा किया गया है। आसपास के लोगों द्वारा विरोध करने पर उक्त लोगों ने फर्जी मुकदमे में फंसा देने की धमकियां दी जा रही हैं। पीड़ित ने मामले की शिकायत पुलिस से करते हुए न्याय की गुहार लगाई है। कोतवाली क्षेत्र के किठौली जलालपुर गांव के रहने वाले रामचंद्र मिश्रा पुत्र सत्यनारायण ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसके घर के समीप खलिहान की सरकारी भूमि है। जिस पर गांव के ही दबंग किस्म के लोगों द्वारा अवैध तरीके से कब्जा किया गया है। जब उसका स्थानीय लोगों द्वारा विरोध किया जाता है तो उक्त दबंग फर्जी मुकदमे में फंसा देने की धमकियां देते हुए आमादा फौजदारी हो जाता है, जिसकी शिकायत ग्रामीण ने पुलिस से नामजद तहरीर देकर करते हुए कार्रवाई की मांग की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जिला मजिस्ट्रेट ने तीन व्यक्तियों के शस्त्र लाइसेंस को किया निरस्त

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद प्रतापगढ़ के शस्त्र लाइसेंसी जो आपराधिक क्रिया-कलाप में लिप्त होने एवं शस्त्र अनुज्ञा-पत्र की शर्तों का उल्लंघन करने के दोषी पाये गये तीन व्यक्तियों के शस्त्र लाइसेंस को जिला मजिस्टेज्ट संजीव रंजन ने निरस्त कर दिया है। उन्होंने थाना महेशगंज ग्राम पुरमई सुल्तानपुर के सुधाकर सिंह पुत्र कुंज बिहारी सिंह के शस्त्र डीबीबीएल, थाना कोतवाली कुण्डा ग्राम कनांवा के संजय सिंह पुत्र कृष्ण बहादुर सिंह के शस्त्र रिवाल्वर व थाना रानीगंज ग्राम पूरेगोसांई के रमाकान्त तिवारी पुत्र सहदेव प्रसाद के शस्त्र एसबीबीएल को निरस्त कर दिया है।

नायलॉन की रस्सी से गला घोटकर विवाहिता की हत्या

अखंड भारत संदेश

विवाहिता की मौत के बाद बार-बार बयान बदलकर क्या साबित करना चाहते हैं ससुरालीजन

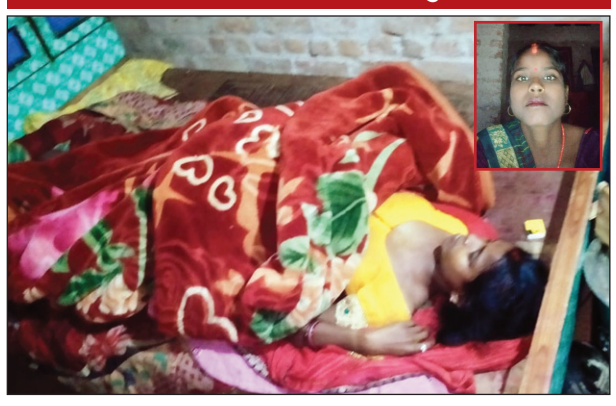

कौशांबी। महेवाघाट क्षेत्र के अलवारा गांव में शुक्रवार को दिन में एक विवाहिता के साथ उसने ससुराली जनो ने जमकर मारपीट किया था मारपीट के बाद विवाहिता के गले में नायलॉन की रस्सी फंसा कर गला घोटकर उसकी हत्या कर दी और हत्या करने के बाद विवाहिता के ससुराल वालों ने विवाहिता के मायके के लोगों को फोन से सूचना दी कि विवाहिता ने जहर खा लिया है जब कि मौके पर जब मायके के लोग पहुंचे तो विवाहिता का शव जमीन पर पड़ा था उसकी मौत हो चुकी थी गले में चारो ओर नायलॉन की रस्सी के गहरे निशान मिले हैं आखिर ससुराल ले जान मौत के पीछे बार-बार बयान क्यों बदल रहे हैं ससुराली जनों का कहना है कि विवाहिता का शव फंदे से लटक रहा था और पुलिस के पहुंचने के पूर्व उतार लिया है लेकिन कहीं किसी ने इस बात का प्रमाण नहीं दिया है कहीं फोटो वीडियो लाश लटकते नहीं दिखाई पड़ रही है विवाहिता के पिता ने बेटी की हत्या करने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है पुलिस ने विवाहिता के सास ससुर को गिरफ्तार कर लिया है हत्या में शामिल अन्य लोग फरार बताए जाते हैं पुलिस ने शनिवार को शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के घोसरा नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा निवासी राम प्रताप लोधी राजपूत की पुत्री सीमा देवी उम्र लगभग 25 वर्ष की शादी 6 वर्ष पूर्व ओम प्रकाश निवासी अलवारा थाना महेवाघाट के साथ हुई थी विवाहिता अपने सास ससुर के साथ अपने ससुराल ग्राम अलवारा थाना महेवा घाट में रहती थी आए दिन दहेज के लिए ससुराल में विवाहिता से लड़ाई झगड़ा होता रहता था 5 जनवरी की दोपहर विवाहिता के ससुराल में ससुराली जनों से जमकर लड़ाई झगड़ा हुआ गांव वाले इस बात की पुष्टि कर रहे हैं उसके बाद विवाहिता के मायके में ससुराल के लोगों ने फोन करके सूचना दी के विवाहिता ने जहर खाकर आत्महत्या कर लिया है जब मायके के लोग विविधता के ससुराल पहुंचे तो उसकी लाश जमीन पर पड़ी थी गले में चारों ओर नायलॉन के रस्सी के निशान मिले हैं विवाहिता के घर वालो ने कहा कि बेटी को मार कर फंदे में लटका दिया है जानकारी मिलने पर विवाहिता के मायके वालों ने थाना महेवा घाट में लिखित सूचना देकर आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग किया पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताया जाता है कि पति के गैर मौजूदगी में विवाहिता का ससुर बदनीयती करता था जिसका विवाहिता विरोध करती थी विवाहिता सीमा देवी का पति रोजी-रोटी के लिए 3 महीने पहले पानीपत चला गया है सीमा देवी को एक संतान उत्कर्ष उम्र डेढ़ वर्ष है।

आधी रात को संदिग्ध दशा में बृद्ध महिला की आग में जलकर मौत

नेवादा कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के एक गांव मे आधी रात को घर के भीतर लगी संदिग्ध परिस्थितियों में आग से बृद्ध महिला की जलकर मौके पर मौत हो गयी ठंड का महीना है आधी रात को अचानक छप्पर में आग कैसे लगी यह रहस्य बरकरार है मौत की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेजा। घटनाक्रम के मुताबिक पिपरी थाना क्षेत्र के औधन गांव निवासी शान्ती देवी उम्र लगभग 70 वर्ष पत्नी स्व० छोटेलाल रैदाश तीन लड़कों के साथ गांव के बाहर खेत मे घर बनाकर रहती थी बड़ा लड़का गरीब दास अपना परिवार घर पर छोंड़कर खुद व दोनो भाई शिवप्रसाद व रामप्रसाद परिवार सहित ईंट भट्ठे पर अलग अलग मजदूरी करते हैं जब कि छोटा लड़का शीतला प्रसाद जिसकी शादी अभी नही हुई वह गांव के पुराने मकान मे रहता है बृद्ध महिला रोज की तरह गरीब दास के यहां खाना खाकर छप्पर के नीचे सो रही थी शुक्रवार की रात लगभग 12 बजे अचानक छप्पर धू धू कर जलने लगा लेकिन परिजनो को इसकी जानकारी नही हो पाई छप्पर से सौ मीटर दूरी बने नलकूप मे मौजूद रहे लोगों ने देखा और देखकर हो हल्ला किया तब तक और भी ग्रामीण इकट्ठा हो गये मौके पर पहुंचने के बाद देखा और आग को बुझाया तब तक शान्ती देवी की पूरी तरह से जलकर मौत हो गई थी ग्रामीणों ने इसकी सूचना नजदीकी पुलिस चौकी को दिया चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर लाश को अपने कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है।

झपकी लगने से खड़े ट्रेलर में जा घुसी स्कार्पियों एक की मौत एक लहूलुहान

अखंड भारत संदेश

कोखराज कौशाम्बी। प्रयागराज से फतेहपुर खागा की तरफ जा रहे चार पहिया वाहन स्कार्पियो चालक कोखराज थाना क्षेत्र के कल्यानपुर के पास हाइवे पर खड़े ट्रेलर में स्कार्पियो ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दिया है जिससे स्कार्पियो के चिथड़े उड़ गए भयंकर हादसे में स्कॉर्पियो ड्राइवर की मौके पर ही मौत हो गयी है जबकि इस भयंकर हादसे में एक ब्यक्ति की हालत गंभीर हैं वाहन पर सवार अन्य लोगों को भी चोट लगी है हादसे की जानकारी मिलती ही मौके पर आसपास के लोगों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी मौके पर पुलिस ने पहुंच कर लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और हादसे में गंभीर घायल को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया है। जानकारी के मुताबिक फतेहपुर जनपद के खागा कोतवाली अंतर्गत स्कार्पियो चालक कल्लू उम्र 28 वर्ष वाहन स्वामी ज्ञानेंद्र तिवारी 35 वर्ष पुत्र हरिमोहन तिवारी शनिवार को स्कॉर्पियो से प्रयागराज गए थे ज्ञानेंद्र तिवारी के साथ वाहन चालक शनिवार की शाम वापस खागा लौट रहे थे जैसे ही वाहन चालक कोखराज थाना क्षेत्र के कल्यानपुर के पास पहुंचे हाईवे पर खड़ी टेलर ट्रक से पीछे से स्कॉर्पियो टकरा गई थी हादसा इतना जोरदार था कि स्कॉर्पियो के चिथड़े उड़ गए दुर्घटना की तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस को दी गई हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुँची पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से बचाव एवं राहत कार्य शुरू कर दिया जब तक वाहन स्वामी ज्ञानेंद्र कुमार और वाहन चालक कल्लू को वाहन से बाहर निकला गया तब तक वाहन चालक कल्लू की मौत हो चुकी थी पुलिस ने वाहन चालक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और घयल वाहन स्वामी को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है मामले की सूचना पुलिस ने हादसे के शिकार लोगों के परिजनों को फोन से दे दी है।

राम जन्मभूमि अयोध्या में रामलला के दर्शन के लिए पूना महाराष्ट्र से साइकिल से निकला रामभक्त

चरवा, कौशाम्बी। पूना महाराष्ट्र के पिम्परी चिनगौड से राम भक्त खगेन्द्र बचान सिंह ने 12 दिसम्बर को साइकिल के द्वारा राम जन्मभूमि अयोध्या श्रीराम के दर्शन के लिए निकल पड़ा है। आलंदी में श्री विट्ठल महराज जी का दर्शन करते हुए नारायण पुर गौड़ पहुंचे। नासिक के प्रसिद्ध मंदिर स्वामी नारायण सन्त गाडगे महाराज का दर्शन करते हुए थर्मशाला में रूक कर विश्राम किया। इन्दौर, भोपाल, सागर, छतरपुर होते हुए चित्रकूट पहुंच कर कामतानाथ जी का दर्शन करते हुए राजापुर के प्रसिद्ध बड़े हनुमान व तुलसीदास जी का दर्शन किया। 5 जनवरी को साइकिल के द्वारा श्री राम जानकी मंदिर, राम विश्राम स्थल, राम जुइठा नगर पंचायत चरवा पहुंच कर दर्शन किया। महन्त राजेन्द्र दास जी महाराज व राम जानकी के सभी सन्तों ने स्वागत किया। पूना महाराष्ट्र से साइकिल के द्वारा राम भक्त नगर पंचायत चरवा के राम जानकी मंदिर पहुंच कर रात्रि विश्राम किया। सुबह मां जानकी की आरती पूजन करते हुए श्रृंगवेरपुर होते हुए राम जन्मभूमि अयोध्या के लिए राम भक्त खगेन्द्र बचान सिंह निकल पड़े।

प्रेक्टिकल के नाम पर छात्रों से अवैध धन की वसूली कर रहा जयंतीपुर स्थित डिग्री कॉलेज

कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के जयंतीपुर स्थित डिग्री कॉलेज में पढ़ाने वाले छात्र छात्राओं से अवैध धन की वसूली विद्यालय प्रबंधन के गुर्गों द्वारा बेखौफ तरीके से की जा रही है जिसका एक ताजा मामला प्रकाश मे आया है जिसमे सैकड़ो छात्रों से प्रेक्टिकल के नाम पर प्रत्येक छात्र छात्राओं से प्रेक्टिकल के नाम पर 100 रु तथा एडमिट कार्ड मे 850 रु की अवैध वसूली की गयी है जिसकी जानकारी छात्रों ने मीडिया को देते हुए बताया है की यह डिग्री कालेज हम छात्रों के साथ प्रेक्टिकल तथा एडमिट कार्ड देने के नाम पर अवैध धन वसूली किया करता है जिस पर जनपद के उच्च जिम्मेदार अधिकारियो द्वारा अंकुश नहीं लगाया जा रहा है और ना तो सम्बन्ध इन्वर्सिट इस कालेज द्वारा की जाने वाली अवैध धन की वसूली पर अंकुश नहीं लग रहा है । कालेज के द्वारा मनमाने तरीके से की जाने वाली अवैध धन की वसूली से छात्र छात्राएं काफी परेशान हो चुके हैं जिस ओर इन्वर्सिट तथा जिला अधिकारी का ध्यान आकृष्ट करते हुए छात्र-छात्राओं ने विद्यालय प्रबंधन पर कार्यवाही की मांग की है।

187 शिकायतो में 10 शिकायतों का मौके पर निस्तारण

सम्पूर्ण समाधान दिवस

जिलाधिकारी ने तहसील चायल में सुनी जनशिकायतें

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने तहसील चायल में आमजन की शिकायतों को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दियें। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दियें। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस एवं आईजीआरएस के तहत प्राप्त शिकायतों को समयान्तर्गत निस्तारित किया जाय। इसके साथ ही उन्होंने शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता अवश्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 58 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। समाधान दिवस में शिकायतकर्ता रामकरन निवासी ग्राम-नीबी शाना ने प्रार्थना-पत्र देकर अवगत कराया कि उनको पट्टा दिया गया था, किन्तु अभी तक कब्जा नही दिलाया गया है, जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी चायल को प्रकरण की जॉच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दियें। इसी प्रकार शिकायतकर्ता मैसूर अली निवासी ग्राम-बरक्कतपुर ने प्रार्थना पत्र देकर आवास की सुविधा उपलब्ध कराये जाने की मांग पर जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारी मूरतगंज को प्रकरण की जॉच कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियें। समाधान दिवस में तहसील मंझनपुर में कुल 52 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 04 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया एवं तहसील सिराथू में कुल 77 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 04 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक अशोक वर्मा, मुख्य चिकित्साधिकारी अधिकारी डॉ0 सुष्पेन्द्र एवं उप जिलाधिकारी सौम्य मिश्रा सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

लाखों खर्च किए जाने के बाद नरक में तब्दील है गांव की सड़कें

हर्रायपुर कौशांबी ग्राम पंचायत में विकास कराए जाने के लिए योगी सरकार ने सरकारी खजाने को खोल दिया है सरकारी खजाने से रकम निकाल करके पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान मनमानी पर उतारू है भ्रष्टाचार में शामिल ग्राम प्रधान अक्सर भाजपा नेताओं के कार्यक्रमों में शामिल दिखाई पड़ते हैं जिससे इन पर अधिकारी कार्रवाई करते नहीं दिख रहे हैं पंचायत सचिव ग्राम प्रधान के बढ़ते भ्रष्टाचार के चलते गांव क्षेत्र का विकास होता नहीं दिख रहा है ताजा मामला सिराथू विकासखंड क्षेत्र के कसिया पश्चिम गांव का है। सिराथू ब्लॉक अंतर्गत कशिया पश्चिम में इंटरलॉकिंग रास्ते से लेकर रामलीला मैदान स्थल तक गंदगी का अम्बार लगा है सालो बीत जाने के बाद भी सफाई कर्मी नही पहुंचते कई बार ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान से शिकायत की लेकिन गांव में सफाई कर्मी नहीं पहुंचा सड़कों पर कीचड़ भरा हुआ है लोगों को आने-जाने में दिक्कत होती है रास्ते भी खराब हो गए हैं लेकिन मरम्मत कराने के नाम पर भी ग्राम पंचायत पहल नहीं कर रहा है जिससे आम जनमानस में सरकार के प्रति आक्रोश दिखाई पड़ रहा है

विकसित भारत संकल्प यात्रा, मतलब चुनावी यात्रा

अखंड भारत संदेश

बोर्ड लगे स्टॉल में नहीं पहुंचते जिम्मेदार अधिकारी व कर्मचारी

अझुवा कौशांबी। मोदी सरकार और योगी सरकार मौजूदा समय विकसित भारत संकल्प यात्रा चला रही है जहां मोदी गारंटी वैन पहुंच कर भारत सरकार प्रदेश सरकार के आम जनमानस के लिए चलाई गई विभिन्न योजनाओं का बखान कर पक्ष में माहौल बना रहे हैं 2024 की जमकर तैयारी की जा रही है बीते कल शुक्रवार नगर पंचायत अजुवा सब्जी मंडी में मोदी गारंटी वैन पहुंची है वहां तमाम पात्र अपात्र लोग अपने अपने आवेदन संबंधित विभागों के स्टालों में जमा कर रहे थे जिनमे दर्जनों महिला पुरुष आवेदकों ने जिम्मेदारों से शिकायत करते हुए बताया जब संबंधित विभाग के जिम्मेदारों को मौके पर पहुंचना था लेकिन कार्यक्रम में मनमानी की गई। कार्यक्रम में आंगनवाड़ी,गैस एजेंसी के कर्मचारी कोटेदार शहरी आवास योजना के विमल पाण्डे ही पहुंच पाए आयुष्मान भारत से संबंधित एक सी एच ओ मौजूद था जिसने बताया कोई काम नही हो रहा,राशन कार्ड संबंधित तमाम शिकायते थीं पात्र आवेदकों ने बताया बड़े बड़े ईसों के राशन कार्ड बने हैं हम लोगों के नहीं बने, कुल मिलाकर कार्यक्रम को तमाशा ही बनाया गया ,विश्वकर्मा योजना का जिम्मेदार कोई नहीं था,प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि का कोई अधिकारी कर्मचारी मौजूद नहीं था। मौके पर पहुंचे जिला अध्यक्ष धर्मराज मौर्य को तमाम महिला आवेदकों ने घेर कर अपनी समस्या बताई जिला अध्यक्ष ने सभी को आश्वासन दिया आप लोग अपने आवेदन जमा करें सरकार आपके द्वार आई है अपात्रों को लाभ नहीं मिलेगा लेकिन एक भी पात्र छूटेगा नहीं धर्मराज मौर्य ने अधिशाषी अधिकारी अझुवा रश्मि सिंह और कार्य क्रम संयोजक से कार्यक्रम में उपस्थित न होने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों की लिस्ट मांगी है जिन पर प्रशानिक कार्रवाई की बात कही है।

लेखपाल के दबाव में काम करते हैं तहसीलदार

अखंड भारत संदेश

आवेदक के आय की जानकारी लेखपाल को नहीं

कौशांबी। चायल तहसील में तैनात लेखपालों को आय प्रमाण पत्र मांगने वाले आवेदकों के आय की जानकारी नहीं हो पाती है जिससे आय प्रमाण पत्र को निरस्त कर दिया जाता है और लेखपालों के दबाव में तहसीलदार भी आय प्रमाण पत्र निरस्त कर रहे हैं जिससे तहसील की व्यवस्था चौपट होती दिख रही है लेखपालों के इस कारनामे से आय प्रमाण पत्र पाने वालों को सामने परेशानी खड़ी हो जाती है जबकि सरकार का निर्देश है कि आवेदन के 15 दिन के अंदर आय प्रमाण पत्र निर्गत किया जाए लेकिन सरकार का निर्देश तानाशाह लेखपाल मानने को तैयार नहीं है तानाशाह लेखपालों पर उप जिला अधिकारी और तहसीलदार भी अंकुश लगाते नहीं दिखाई पड़ रहे हैं जिससे लेखपाल बेलगाम है और आम जनता योगी सरकार में परेशान है ताजा मामला चायल तहसील क्षेत्र के बालीपुर टाटा गांव निवासी रोहित कुमार पुत्र हरिश्चंद्र का सामने आया है रोहित कुमार ने आय प्रमाण पत्र के लिए 28 दिसंबर को सहज जन सेवा केंद्र से आवेदन किया था लेकिन राजस्व लेखपाल ने यह कहते हुए आय प्रमाण पत्र निरस्त कर दिया है कि जानकारी न होने की कारण लिखते हुए अस्वीकृत दशार्या गया है अब सवाल उठता है कि आवेदक के आय प्रमाण पत्र की जानकारी लेखपाल को नहीं लग पाई है या फिर लेखपाल की मुंह मांगी डिमांड आवेदक नहीं पूरा कर सका है जिससे उसे आय प्रमाण पत्र नहीं मिल सका है निरस्त किए गए आय प्रमाण पत्र में सक्षम अधिकारी ने भी बिना देखे समझे हस्ताक्षर कर दिया है आखिर कब तक लेखपाल के दबाव में तहसीलदार काम करते रहेंगे यह बड़ी जांच का विषय है।

उदईयापुर पावर हाउस क्षेत्र मे संविदा कर्मी की सह पर लगती है अंधाधुंध कटिया जेई मौन

कौशाम्बी जिले मे कुछ लापरवाह अधिकारियों के कारण सरकार को लाखों की चपत लग रही है पावर हाउस मे बैठे जिम्मदारों की सुस्त ब्यावस्था से पावर हाउस मे मौजूद संविदा कर्मी अपने गांव क्षेत्र मे अंधाधुध कटिया लगवा रहे हैं। चायल तहसील के उदईयापुर पावर हाउस अन्तर्गत बरियांवा गांव मे इस समय संविदा कर्मियों की मनमानी से अंधाधुंध कटिया मारी हो रही है और गजब की बात तो यह है कि घरेलू समर सेबुल भी कटिया से चल रहे हैं आखिर इसका जिम्मेदार कौन है मखऊपुर, दरियापुर, रनियापुर आदि कई गांव में पैसा लेकर ट्यूबवेल व घरों में लगवाते हैं एक ही कनेक्शन में चार-चार घरों में चलवा रहे बिना बिजली कनेक्शन के कटिया से वसूल रहे कई हजार रुपए महीना, डेविड कुमार अपने कई साथियों सहयोगियों के साथ अवैध कटियांधारों से वसूली कर रहे हैं अच्छा वेतन लेने वाले पावर हाउस मे बैठे अधिकारी या फिर संविदाकर्मी जो जांच का विषय है इलाके के लोगों ने अवैध कटिया कनेक्शन धारकों की जांच कार्यवाही की मांग की है।

रोजगार मेले में 183 अभ्यर्थियां को दिया गया रोजगार

कौशाम्बी। कौशल विकास मिशन राजकीय आई0टी0आई0 एवं सेवायोजन के संयुक्त तत्वाधान में दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजनान्तर्गत विकास खण्ड-मूरतगंज में एस0पी0 मेमोरियल इजी0 कॉलेज, भीटी के परिसर में रोजगार मेले का आयोजन किया गया, जिसमें 396 अभ्यर्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं 05 नियोक्ता कम्पनियों के द्वारा कुल 183 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। यह जानकारी जिला समन्वयक कौशल विकास मिशन द्वारा दी गयी। रोजगार मेले का शुभारम्भ मण्डल अध्यक्षा श्रीमती दीपा श्रीवास्तव द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। उन्होंने रोजगार मेले में उपस्थित प्रतिभागी अभ्यर्थियों को रोजगार मेले के माध्यम से रोजगार प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया जिला समन्वयक कौशल विकास मिशन द्वारा शिक्षित बेरोजगार अभ्यर्थियों को सूचित किया गया कि जो अभ्यर्थी इस रोजगार मेले में प्रतिभाग नहीं कर पायें हैं, वे दिनांक 09 जनवरी 2023 को एम0वी0आई0टी0 इंजी0 कॉलेज कोइलहा में विभाग द्वारा पुनः आयोजित एक दिवसीय वृहद रोजगार मेले मे प्रतिभाग करते हुये रोजगार प्राप्त कर सकतें हैं।

तहसीलदार के बाबू का बिगड़े बोल अधिवक्ता को चेम्बर से भगाया

चायल कौशांबी जिले के तहसीलों की व्यवस्था सुधारने का नाम नहीं ले रहा है तहसीलों में कार्यरत कर्मचारियों के लापरवाही दिन पर दिन बढ़ती चली जा रही है योगी आदित्यनाथ की सरकार जनसुनवाई के माध्यम से गरीब और आम जनता की सुनवाई कर उनका निस्तारण करने का अथक प्रयास कर रही है ताकि आम जनमानस व गरीब जनता को समय से न्याय मिलता रहे लेकिन चायल तहसील में तैनात तहसीलदार के बाबू शैलेंद्र के बोल बिगड़ गए हैं और आए दिन सुर्खियों में रहते हैं शनिवार के दिन चायल तहसील में जिले के आलाधिकारी जन सुनवाई करने पहुंचे उसी दौरान चायल तहसील में प्रैक्टिस कर रहे अधिवक्ता रिंकू पासी तहसीलदार के बाबू के पास ईडब्ल्यूएस सर्टिफिकेट के संबंध में गए तो आरोप है की वहा पर मौजूद बाबू एडवोकेट को कहते है तुम लात जूता वाला काम करते हो और जाती सूचक शब्द का प्रयोग करते हुए उन्हें चेंबर से भागा दिया उक्त बाबू को तनिक भी डर नही कि जिले के आलाधिकारी उसी तहसील में जनसुनवाई करने आए है अगर उनकी नजर इधर पड़ी तो क्या होगा जब जिले के आलाधिकारी के होते हुए भी उक्त बाबू को कोई डर नही है अधिवक्ता को अपशब्द कह रहे है तो आम जनमानस के साथ जैसे पेश आते होंगे हालाकि उक्त अधिवक्ता ने जिलाधिकारी सुजीत कुमार से मिलकर उक्त बाबू के खिलाफ कार्यवाही की मांग किया है

किसान यूनियन ने डीएम को सौपा ज्ञापन

कौशांबी। बीडीओ चायल दिनेश चंद्र का स्थानांतरण कड़ा ब्लाक कर दिया गया है। उनके स्थानांतरण को रोकने के लिए शनिवार को भाकियू अराजनैतिक के तहसील अध्यक्ष बृजेश कुमार की अगुवाई में संगठन से जुड़े कार्यकताओं ने संपूर्ण समाधान दिवस में ज्ञापन सौंपा। किसान नेताओं ने कहा कि बीडीओ दिनेश चन्द्र के रहते चायल में बखूबी विकास कार्य सुचारू ढंग से चल रहा था। फरियादियों को भी समुचित न्याय मिल रहा था। ऐसे में उनका तबादला होने से लोगों में मायूसी है। ज्ञापन के माध्यम से संगठन के लोगों ने बीडीओ का तबादला रोके जाने की जिलाधिकारी सुजीत कुमार से फरियाद की है।

शांति सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए विभिन्न थाना पुलिस ने किया पैदल गस्त

कौशाम्बी। जनपद में शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के दृष्टिगत मंझनपुर सराय अकिल चरवा करारी सैनी सहित विभिन्न थाना पुलिस ने शनिवार की देर शाम अपने-अपने थाना क्षेत्र में पुलिस फोर्स के साथ नगर क्षेत्र में भ्रमणकर शांति सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया गस्त के दौरान पुलिस बल द्वारा भीड़ भाड़ एवं मिश्रित आबादी वाले क्षेत्रों में पैदल गश्त किया गया। आम जनमानस से पुलिस टीम द्वारा वार्ता कर सुरक्षा का भरोसा दिलाया गया व संदिग्ध व्यक्तियों वाहनों की पुलिस टीम द्वारा चेकिंग की गई लोगों को कानून व्यवस्था का पाठ पढ़ाया गया और सार्वजनिक स्थानों पर वाहन खड़ा कर अतिक्रमण ना करने की सलाह दी गई।

जिला पंचायत अध्यक्ष की अध्यक्षता में जिला पंचायत की बैठक सम्पन्न

कौशाम्बी। अध्यक्षा, जिला पंचायत श्रीमती कल्पना सोनकर की अध्यक्षता में जिला पंचायत की बैठक रत्नावली सभागार में आहूत की गई बैठक में सांसद विनोद सोनकर, ब्लॉक प्रमुखगण एवं सदस्य, जिला पंचायत द्वारा प्रतिभाग किया गया।बैठक में सदस्यों द्वारा गत बैठक की कार्यवाही को अनुमोदित किया गया। बैठक में मुख्य रूप से राज्य/प्रन्दहवॉ वित्त कार्ययोजना वित्तीय वर्ष 2024-25 जिला पंचायत कौशाम्बी के वार्षिक बजट वित्तीय वर्ष 2024-25 रू0-288554040 पुनरीक्षित बजट वित्तीय वर्ष 2023-24 रू0-683883300 एवं कर निर्धारण सूची 2023-24 के अतिरिक्त अन्य प्रस्तावों पर चर्चा के उपरान्त सहमति प्रदान की गई। बैठक में सदस्य, जिला पंचायत अजय सोनी द्वारा कनैली-भखन्दा मार्ग का प्रकरण उठाये जाने पर सांसद ने बताया कि वे कनैली-भखन्दा मार्ग से सदस्य जिला पंचायत विनय पटेल के घर गये थे तथा विनय पटेल से कहा कि सड़क खराब है, आप लोग कैसे आते-जाते हैं, जिस पर उनके द्वारा सम्बन्धित अधिकारी से वार्ता करने पर बताया गया कि सड़क पीएमजीएसवाई से बननी है,लेकिन जिस तरह से सड़क पर वाहनों का आवागमन है, इस्टीमेट उस हिसाब से सही नहीं था। उनके द्वारा सीईओ, पीएमजीएसवाई से वार्ता करने पर बताया गया कि कानपुर आईआईटी की टीम से सड़क की जॉच करायी गई थी, टीम द्वारा सड़क की स्ट्रेन्थ बढ़ाने का रिपोर्ट दिया गया है, इसी रिपोर्ट के आधार पर जनवरी माह में ही सड़क का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया जायेगा, इस सम्बन्ध में सांसद ने आज पुनः सीईओ, पीएमजीएसवाई से दूरभाष पर वार्ता की, जिस पर सीईओ द्वारा बताया गया कि इसी माह कार्य प्रारम्भ हो जायेगा बैठक में सदस्य जिला पंचायतगण तूफान सिंह यादव मुन्सब अली श्रीमती सोनी चौधरी, श्रीमती किरन सिंह एवं यासिर मन्जूर सहित आदि सदस्यगण तथा अपर मुख्य अधिकारी कमलेश सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

आदर्श नगर पंचायत अझुवा पूर्ण ओडीएफ घोषित

अझुवा कौशांबी आदर्श नगर पंचायत अझुवा पूर्ण ओडीफ यानी खुले में शौच मुक्त से बेहतर मानकों की कसौटी पर खरी उतरी है जिसे शासन की ओर से ओडीएफ प्लस घोषित कर दिया गया है इस पर अध्यक्ष और सभासदों ने हर्ष जताया है इस संबंध में नगर पंचायत अध्यक्ष शांति देवी कुशवाहा ने हर्ष व्यक्त करते हुए बताया की नगर के लोगों ने नगर को स्वच्छ रखने के लिए अथक प्रयास किए हैं। अधिशासी अधिकारी रश्मि सिंह ने बताया नगर के सभी घरों में शौचालय बनने की वजह से नगर पंचायत खुले में शौच से पहले ही मुक्त हो चुका है ।आदर्श नगर पंचायत अझुवा ओडीएफ 4/6/2022 को हुआ था उन्होंने बताया खुले में शौच से मुक्ति दिलाने के लिए अधिकतर घरों में शौचालय दिए गए एवं नगर पंचायत के विभिन्न क्षेत्रों में सामुदायिक शौचालय बनाए गए हैं नगर पंचायत कर्मचारी और नगर के सम्मानित जनता बधाई की पात्र है।

संपादक की कलम से

सावधान? मानवीय जीवन परमाणु युद्ध के कगार पर

आज पूरा वैश्विक परिदृश्य और पृथ्वी परमाणु युद्ध के ज्वालामुखी पर बैठी हुई है ।परमाणु संपन्न देशों के तमाम शासक और हुक्मरान अपनी राजनैतिक आकांक्षाएं, मंसूबे और सनक को पूरा करने के लिए एक दूसरे के रक्त के प्यासे बने हुए हैंह्न परमाणु संपन्न देशों में चीन ,रूस और नॉर्थ कोरिया ऐसे देश हैं जिनकी बागडोर सनकी तानाशाह प्रशासकों के हाथों में है और ये देश अपनी विस्तार वादी महत्वाकांक्षा और सनक के चलते परमाणु हथियार का इस्तेमाल करने से नहीं चूकेंगेह्न इतिहास गवाह है की सनकी प्रशासकों से हमेशा मानवता और शांति को युद्ध और हिंसा का खतरा बना रहता आया है। अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध में नागासाकी तथा हिरोशिमा में युद्ध की सनक में परमाणु बम से हमला कर लाखों लोगों को मौत के मुंह में भेज दिया था इसके अलावा परमाणु हथियारों के उपयोग से पैदा हुए विकरण से आज भी जापान में बच्चों पर अप्राकृतिक प्रभाव दिखाई देतें हैह्न इधर हम यदि उत्तर कोरिया के सनकी शासक किम योंग की बात करें तो वर्ष 2022 की शुरूआत के बाद से उत्तर कोरिया ने 100 से अधिक हथियारों के परीक्षण किए हैं विशेष तौर पर कुछ अमेरिकी मुख्य भूमि और उनके खास सामरिक सहयोगी दक्षिण कोरिया और जापान पर हमला करने के लिए डिजाइन की हुई परमाणु मिसाइल भी शामिल हैं। उत्तर कोरिया अमेरिका को लक्ष्य बनाकर क्रूज मिसाइल का प्रक्षेपण भी करता आ रहा है। रूस और यूक्रेन युद्ध के दौरान भारी तबाही का मंजर तो सामने आ ही गया है इसके अलावा यूक्रेन की अमेरिकी तथा नाटो देशों की मदद से नाराज होकर रूस स्पष्ट तौर पर परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की सार्वजनिक धमकी कई बार दे चुका है,उल्लेखनीय है कि रूस यूक्रेन युद्ध में यूक्रेन को जितना जान माल का नुकसान हुआ है उसके बराबर भी रूस में सामरिक हथियारों और सैनिकों की जाने गई हैं।रूस को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था की यूक्रेन इतने दिन तक युद्ध को खींच सकता है। इन परिस्थितियों के परिणाम स्वरूप और वहां के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन कभी भी अपनी सनक के चलते परमाणु बमों से हमला भी कर सकता है। चीन और ताइवान विवाद में भी चीन के तानाशाह सी जिनपिंग अपनी विस्तारवादी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए और अमेरिका के परोक्ष रूप से ताइवान की मदद के कारण नाराजगी के चलते ताइवान पर कभी भी हमला कर सकता है। स्पष्ट है कि रूस चीन और उत्तर कोरिया तीनों परमाणु संपन्न देश अमेरिका के सबसे बड़े और कट्टर दुश्मन नई परिस्थितियों में बन चुके हैं। और यह भी खुला और सर्व विदित तथ्य है अमेरिका का राष्ट्रपति वहां की जनता तथा राजनीतिक पार्टियों के दबाव में विश्व का सुप्रीमो बने रहने के चलते युद्ध मेनिया पर सवार रहता है, विश्व में अमेरिका को सर्वशक्तिमान बनाए रखने के चलते अमेरिका को चीन रूस और उत्तर कोरिया फूटी आंखों नहीं अच्छे लगते हैं। कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी के अनुसार अमेरिका तथा दक्षिण कोरिया की सेना अपने वार्षिक सैन्य अभ्यास की ओर अग्रसर होकर लगातार समुद्र तथा उत्तर कोरिया की सीमा पर चक्कर लगा रही है। उत्तर कोरिया इसे अमेरिका तथा दक्षिण कोरिया के हमले के पूर्वाभ्यास की तरह आंकलन कर रहा है । उधर अमेरिका जापान और दक्षिण कोरिया अपने त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन में उत्तर कोरिया के बढ़ते परमाणु एवं मिसाइलों का मुकाबला करने हेतु संयुक्त रुप से बैलेस्टिक मिसाइल निर्माण तथा प्रयोग के सहयोग के लिए सहमति दे चुके हैं।

इन तीनों देशों की संयुक्त तैयारी को देखते हुए उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग ने रणनीतिक क्रूज मिसाइल के प्रायोगिक परीक्षण का निरीक्षण भी किया है।

अमेरिका तथा पश्चिमी देश हर उस देश का साथ देने को तैयार है जो मूल रूप से चीन, उत्तर कोरिया और रूस का विरोध करते हैं। अमेरिका में चूंकि वर्ष 24 में राष्ट्रपति के चुनाव होने हैं ऐसे में वर्तमान में अमेरिकी राष्ट्रपति जो वाइडन को अपनी दावेदारी प्रस्तुत करने के लिए और चुनाव जीतने के लिए एक बहुत बड़े मुद्दे की तलाश जरूर होगी और इसके चलते वह अपनी राजनीतिक साख को बचाने के लिए किसी भी देश से अपनी बादशाहत बचाने के लिए युद्ध कर सकते हैं और जाहिर है कि उनके किसी भी युद्ध में ब्रिटेन, फ्रांस ,आस्ट्रेलिया, इजरायल आंख मूंदकर साथ देने को तैयार होंगे। इधर भारत की स्वतंत्रता के बाद से ही चीन से परंपरागत दुश्मनी चली आ रही है दूसरी तरफ भारत रूस का अभिन्न मित्र भी है भारत परंपरागत रूप से रूस का समर्थन करते आया है या अलग बात है कि अमेरिका से उसके संबंध पिछले 10 सालों से काफी मधुर हो गए हैं और वह सदैव शांति का पक्षधर रहा है।

कॉप 28 रहा कितना सफल

संयुक्त राष्ट्र के फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी)का 28 वां कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (कॉप 28) सम्मेलन तेल और गैस उत्पादक देश संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में आयोजित हुआ। यह सम्मेलन एक तनावपूर्ण परिवेश में संपन्न हुआ क्योंकि अपने देश की राष्ट्रीय तेल कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुल्तान अल जबर कॉप 28 के अध्यक्ष की हैसियत से इस सम्मेलन में एक दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रहे थे। ऐसी स्थिति में यूएई और अन्य सदस्य देशों के बीच हितों के टकराव की स्वाभाविक आशंका हर किसी को थी। दूसरी तरफ इसराइल और फिलिस्तीन के बीच हिंसक झड़पों के कारण भी सम्मेलन के भविष्य पर अनिश्चितता के बादल छाए हुए थे। बहरहाल विषमताओं के बावजूद लगभग 200 देशों के प्रतिनिधियों ने रेगिस्तान में बसे आलीशान दुबई में आयोजित एक्सपो 2020 वेन्यू में शिरकत की। कइयों की नजर में यह सम्मेलन यह बताने का एक महत्वपूर्ण रूपक भी है कि किस प्रकार कॉप सम्मेलनों ने यूएनएफसीसीसी के केंद्रीय मामलों के परे खुद का विस्तार ग्रीन वाशिंग के छलावे के तौर पर किया है।

सम्मेलन में सभी प्रतिभागियों द्वारा सहमति के आधार पर पहले ही दिन एक नई विषय-सूची को सुगठित एजेंडे के रूप में मान्यता दे दी गई। नई अध्यक्षता ने सम्मेलन के पहले ही दिन अपनी राजनयिक सूझ-बूझ से विकसित देशों को लॉस एंड डैमेज फंड के परिचालन के लिए राजी करके सबको अचंभित कर दिया और इसको क्रियान्वित करने के लिए अपनी ओर से अनुदान-आधारित प्रतिबद्धता व्यक्त की। इस कार्यवाही ने हानि और क्षति के बीच अनुदान और समझौते के बाद के चरणों में उपस्थित होने वाली अन्य मांगों के कारण प्रकट होने वाली लेन-देन की स्थितियों को भी सफलतापूर्वक दूर किया। इस सकारात्मकता के साथ सम्मेलन की शुरूआत करना एक महत्वपूर्ण बात थी, दिखावे के लिए ही सही, लेकिन विकसित और विकासशील देशों के बीच एक विश्वास का माहौल पैदा करने की कोशिश हुई। यह जरूरी इसलिए भी था क्योंकि इस कॉप के जिम्मे पेरिस समझौतेके लक्ष्यों के ग्लोबल स्टॉकटेक आकलन के आधार पर सहमतिपूर्वक आगे ले जाने का दारोमदार भी था। इस बातचीत के समानांतर कई देशों ने स्वैच्छिक तौर पर नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता को तिगुना बढ़ाने की प्रतिबद्धता, जलवायु परिवर्तन और लोक स्वास्थ्य के प्रति संकल्प, टिकाऊ कृषि व अन्य मुद्दों पर महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। इनमें कई देशों ने समर्थन दिया तो कई चुप रहे। ऐसे देश चुप रहे जो स्वेच्छा या संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन के नियमों या प्रोटोकॉल से बंधे हुए नहीं हैं। भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाओं ने भी पेरिस समझौते में अपने संकल्पों से परे इन बिंदुओं पर सहमत नहीं होने का निर्णय लिया।

ईडी के खिलाफ खुली अराजकता का दुस्साहस कब तक?

पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के संदेशखली में 5 जनवरी को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) जब कथित राशन वितरण घोटाले के सिलसिले में कई लोकेशन पर छापेमारी करने गयी तब टीएमसी के कार्यकर्ता एवं गांव के लोगों ने टीम पर जानलेवा एवं हिंसक हमला बोल दिया, जो न केवल शर्मनाक बल्कि कानून-व्यवस्था को तार-तार करने की दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। राशन घोटाले के आरोपी टीएमसी नेता शाहजहां शेख के घर पर लगे ताले को तोड़ने की ईडी कार्रवाई के दौरान उन पर यह घातक हमला किया है। ईडी के अधिकारियों पर तृणमूल कांग्रेस के इस नेता के समर्थकों ने जिस तरह हमला करने के साथ उनके वाहनों में तोड़फोड़ की, वह इस केंद्रीय एजेंसी के खिलाफ खुली अराजकता के साथ दुस्साहस का भी परिचायक है। ईडी अधिकारियों पर हमला करने वाले कितने बेखौफ थे, इसका पता इससे चलता है कि उन्होंने इन अधिकारियों की सुरक्षा के लिए साथ गए केंद्रीय बल के जवानों पर भी हमला बोल दिया। आखिर जांच दल को बिना कार्रवाई के वापस लौटना पड़ा। हालांकि पश्चिम बंगाल में यह पहली अराजक, उन्मादी, गैरकानूनी घटना नहीं है। इससे पहले भी कई बार जांचों में बाधा डालने, जांच दल को रोकने की हिंसक कार्रवाई होती रही है। स्पष्ट है कि ममता शासन में तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता कानून अपने हाथ में लेने से तनिक नहीं हिचकते, बल्कि ममता बनर्जी खुद अपने समर्थकों-कार्यकताओं के निरंकुश आचरण, उपद्रव, उद्दण्डता, हिंसक एवं उन्मादी गतिविधियों का बचाव करने उतर आती है। इससे संवैधानिक संस्थाओं का अस्तित्व एवं अस्मिता कैसे सुरक्षित रह पायेगी?

आजकल देश में कहीं भी विपक्षी दलों एवं उनकी सरकारों से जुड़े घोटालों एवं अनियमितता पर सरकारी एजेंसियों की कार्रवाई को राजनीतिक बदले की कार्रवाई बताते हुए उसका विरोध शुरू हो जाता है। ईडी के लिए इस तरह के आरोप नए नहीं हैं, बल्कि आजकल तो जैसे ही वह किसी मामले की जांच शुरू करती है, तुरंत ही आरोप लगने शुरू हो जाते हैं कि यह काम राजनीतिक बदले की भावना से किया जा रहा है। ऐसी संस्था कैसे निष्पक्ष दिखाई दे एवं कैसे स्वतंत्र होकर अपना काम करे? पश्चिम बंगाल में जो हुआ, वह उसका तरीका नहीं है, वह आपत्तिजनक और आपराधिक है। ममता की तानाशाही का ही परिणाम है कि उनके कार्यकर्ता बेखौफ हर चीज का फैसला अपने ढंग से करना-कराना चाहते और इसके लिये खुलेआम हिंसा एवं अराजकता का सहारा लेते हैं। पश्चिम बंगाल के लिए यह नई बात नहीं है, चुनावी हिंसा एवं प्रतिहिंसा तो वहां लगातार चलती रहती है। अगर कोई व्यक्ति अंगुली उठाता है या विरोध करता है तो उसकी जान पर बन आती है। ममता खुद मुख्यमंत्री होकर अपने एक कार्यकर्ता छुडाने एक बार थाने पहुंच गयी थी, स्वाभाविक ही है कि वे अपने कार्यकताओं का गलत एवं अलोकतांत्रिक तरीके से समर्थन एवं सहयोग करती है जिससे उनका मनोबल बढ़ा है। ऐसे ममता समर्थक एवं कार्यकर्ता सरकार को अपनी पोकेट में मालते हुए न केवल कानून की धज्जियां उड़ाते हैं बल्कि सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का भी दुरुपयोग करते हैं। गरीबों को बांटे जाने वाले राशन का करीब तीस प्रतिशत खुले बाजार में बेच दिया जाता है और उसका लाभ बिचौलिये एवं टीएमसी कार्यकर्ता आपस में बांट लेते है। इस तरह का भ्रष्टाचार वहां आम है। वहां ऐसे मामलों में भी राजनीति सड़कों पर की जाती है, जो अक्सर हिंसक एवं अराजक हो जाती है। ईडी को लेकर राजनीति करने के आरोप अनेक जगहों पर लगाए गए हैं, लेकिन बंगाल जैसे दुखद व शर्मनाक दृश्य कहीं और देखने को नहीं मिले हैं।

ममता के शासन में अराजकता एवं अपराध बिखरे हैं। वहां हर दिखते समर्पण की पीठ पर स्वार्थ चढ़ा हुआ है। इसी प्रकार हर अभिव्यक्ति में कहीं न कहीं स्वार्थ है, किसी न किसी को नुकसान पहुंचाने की ओछी मनोवृत्ति है। वहां आज हर हाथ में पत्थर है। वहां के समाज में नायक कम खलनायक ज्यादा हैं। प्रसिद्ध शायर नज्मी ने कहा है कि अपनी खिड़कियों के कांच न बदलो नज्मी, अभी लोगों ने अपने हाथ से पत्थर नहीं फैंके हैं। डर पत्थर से नहीं डर उस हाथ से है, जिसने पत्थर पकड़ रखा है। पश्चिम बंगाल में हर टीएमसी कार्यकर्ता ने पत्थर पकड़ रखा है, कानून एवं व्यवस्था नाम की कोई चीज वहां नहीं है। ईडी के अधिकारी तृणमूल कांग्रेस के जिस नेता के घर छापेमारी करने गए थे, वह करोड़ों रुपये के राशन घोटाले में गिरफ्तार राज्य मंत्री ज्योतिप्रिय मल्लिक का करीबी है। यदि ईडी अधिकारियों का यह कथन सही है तो बेहद गंभीर बात है।

पश्चिम बंगाल में आर्थिक अपराध एवं घोटाले बड़े पैमाने पर हो रहे हैं, इन्हीं में से कुछ पर ईडी और सीबीआई जांच कर रही है। इन मामलों में तृणमूल कांग्रेस के विधायक और मंत्री भी आरोपित हैं। हालांकि इनमें से कई मामलों की जांच कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश पर हो रही है, फिर भी ममता सरकार का यही आरोप रहता है कि केंद्रीय जांच एजेंसियां उनके नेताओं के खिलाफ राजनीतिक बदले की भावना के तहत कार्रवाई कर रही है। यदि उसे वास्तव में ऐसा ही लगता है कि वे बेदाग है, तो फिर घपले-घोटालों के गंभीर आरोपों से घिरे उसके नेताओं को अदालत का दरवाजा खटखटाना चाहिए, अपने पक्ष में सबूत और तर्क पेश करने चाहिए। इस तरह लाठी-डंडे के जोर पर वे कब तक हकीकत एवं सच्चाई पर पर्दा डालने में कामयाब हो सकते हैं। आये दिन ऐसे लोग, विषवमन करते हैं, प्रहार करते रहते हैं, चरित्र-हनन करते रहते हैं, सद्भावना और शांति को भंग करते रहते हैं। उन्हें प्रांत में शांति, आदर्श-निष्पक्ष शासन-व्यवस्था, भाईचारे और एकता से कोई वास्ता नहीं होता। ऐसे घाव कर देते हैं जो हथियार भी नहीं करते। किसी भी टूट, गिरावट, दंगों व युद्धों तक की शुरूआत ऐसी ही बातों से होती है।

यह बिल्कुल भी ठीक नहीं है कि गैर भाजपा शासित राज्यों में ईडी और सीबीआई जैसी एजेंसियों को अपनी सुरक्षा के लिए केंद्रीय बलों पर निर्भर रहना पड़े। बंगाल में उन्हें ऐसा ही करना पड़ा। ऐसी ही स्थितियां अन्य गैर-भाजपा राज्यों में है। दिल्ली में मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल और झारखण्ड में हेमंत सोरेन दोनों ही मुख्यमंत्रियों को ईडी बार बार समन भेज रहा है, लेकिन कोई भी पेश नहीं हो रहा है। केन्द्रीय एजेंसियों की इस तरह की अवमानना और वह भी मुख्यमंत्रियों के माध्यम से आश्चर्यकारी है एवं असंवैधानिक है। केन्द्रीय एजेंसियों के लिये काम करना आसान नहीं, बल्कि चुनौती एवं संकटपूर्ण होता रहा है। बढ़ते संकटों एवं सुरक्षा कारणों से ईडी को केंद्रीय बल के जवानों की छाया में काम करने को विवश होना गंभीर स्थिति को दशार्ता है। तमिलनाडु में राज्य पुलिस की ओर से एक ईडी अधिकारी को रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किए जाने के बाद इस केंद्रीय एजेंसी के दफ्तर की सुरक्षा केंद्रीय बल के जवानों को सौंपनी पड़ी थी। ऐसा इसलिए करना पड़ा था, क्योंकि उक्त अधिकारी को गिरफ्तार करने के बाद तमिलनाडु पुलिस ईडी के दफ्तर में छापेमारी करने पहुंच गई थी। केंद्र सरकार को झारखण्ड में भी ईडी के एक अधिकारी को सुरक्षा मुहैया करानी पड़ी थी। यह स्थिति संघीय ढांचे की मूल भावना के खिलाफ है। जिन भी दलों के नेता ईडी अथवा सीबीआई जांच का सामना कर रहे हैं, वे यह रोना रोता हैं कि उन्हें राजनीतिक कारणों से निशाना बनाया जा रहा है, लेकिन यह नहीं बता पाते कि उनके जैसे कई नेताओं को जमानत क्यों नहीं मिल पा रही है? वे खुद को बेगुनाह साबित करने के लिये कानून का सहारा क्यों नहीं लेते? क्यो गैर-कानूनी तरीकों से खुद हथियार उठाकर नितांत आपत्तिजनक तरीके से न्याय करने चल पड़ते हैं। ऐसी स्थिति एक आदर्श शासन-व्यवस्था पर सवालिया निशान है।

(ललित गर्ग)
ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट 25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-92
फोनः 22727486, 9811051133

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम छात्रों को तनाव से मुक्ति का सशक्त माहौल देता है

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर दुनियां के हर देश के छात्रों के लिए जो अनेक शिक्षा क्षेत्र में अध्यनरत हैं, अनेकों के लिए चिंता मुश्किल व सोचनीय स्थिति तब उत्पन्न हो जाती है जब उनके जीवन पर असर डालने वाले बोर्ड की परीक्षाओं का पल सामने आता है। यह एक ऐसी घड़ी होती है कि अच्छे-अच्छे होशियार छात्र भी उम्मीद के विपरीत स्थिति महसूस करते हैं, या यू कहें कि परीक्षा के प्रति उनकी घबराहट चिंता ही कभी-कभी असफलता का कारण बन जाती है, इसलिए तो हमारे माननीय पीएम महोदय ने 7 वर्ष पूर्व छात्रों के लिए परीक्षा पे चर्चा, सहजता ग्रहण करने परीक्षा पर चर्चा की शुरूआत की गई थी जो आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। 29 जनवरी 2024 को होने वाले इस कार्यक्रम में रिकॉर्ड एक करोड़ से अधिक रजिस्ट्रेशन हो चुके हैं, जो 12 जनवरी 2024 तक अभी चलते रहेंगे।उल्लेखनीय है कि इस सातवें संस्करण के लिए 11 दिसंबर 2023 से इसके रजिस्ट्रेशन शुरू हुए थे, जिसमें छात्र अभिभावक और शिक्षकगण बहुत बड़ी मात्रा में तेजी से रजिस्ट्रेशन करवा रहे हैं, जो अभी से ही इतनी विशाल संख्या में रजिस्टर्ड हो चुके हैं, जिसके और बढ़ाने की संभावना है जो एक एतिहासिक रिकॉर्ड बनेगा। इसीलिए ही परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम की ओर हितग्राहियों का झुकाव वह इसकी लोकप्रियता का अंदेशा लगाया जा रहा है, उससे कहीं अधिक होने की उम्मीद है। क्योंकि पिछले छह संस्करणों में छात्रों शिक्षकों व अभिभावकों को इस कार्यक्रम से अनेक फायदे और संतुष्टि का एहसास हुआ है। चूंकि परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम छात्रों को तनाव से मुक्ति का माहौल देता है, इसलिए आज हमपीआईबी और मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, देश भर के छात्रों अभिभावकों शिक्षकों में परीक्षा पे चर्चा के प्रति व्यापक उत्साह का माहौल बना हुआ है।

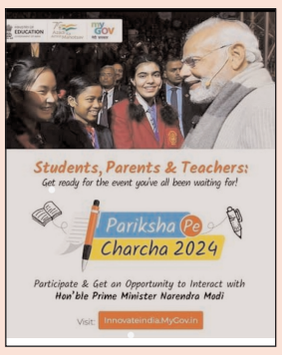

साथियों बात अगर हम परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम 2024 को समझने की करें तो, इस वर्ष कार्यक्रम 29 जनवरी 2024 को सुबह 11 बजे से भारत मंडपम, आईटीपीओ, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में टाउन-हॉल प्रारूप में आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में लगभग 4000 प्रतिभागी प्रधानमंत्री के साथ बातचीत करेंगे। प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश से दो छात्रों और एक शिक्षक तथा कला उत्सव एवं वीर गाथा प्रतियोगिता के विजेताओं को मुख्य कार्यक्रम के लिए विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जा सकता है। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए 6 से 12वीं कक्षा के छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए ऑनलाइन बहुविकल?प प्रश्?नोत?तर प्रतियोगिता 11 दिसंबर, 2023 से 12 जनवरी, 2024 के बीच माइगोव पोर्टल पर लाइव है। 5 जनवरी, 2024 तक, 90 लाख से अधिक छात्र, 8 लाख से अधिक शिक्षक और लगभग 2 लाख अभिभावक यानी एक करोड़ से ऊपर प्रतिभागी पंजीकरण करा चुके हैं। पीएम के स्कूली छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के साथ बातचीत कार्यक्रम परीक्षा पे चर्चा 2024 के 7वें संस्करण के लिए, अब तक मायगोव पोर्टल पर 1 करोड़ से अधिक पंजीकरण दर्ज किए गए हैं। यह देश भर में छात्रों के बीच व्यापक उत्साह को दशार्ता है। इस विशिष्ट कार्यक्रम में भाग लेने और पीएम के साथ बातचीत करने के लिए छात्रों में बहुत उत?साह है। प्रधानमंत्री ने इस अनूठे कार्यक्रम - परीक्षा पे चर्चा (पीपीसी) की परिकल?पना की है - जिसमें देशभर के साथ-साथ विदेशों से भी छात्र, अभिभावक और शिक्षक परीक्षाओं और स्कूल के बाद के जीवन से संबंधित चिंताओं पर चर्चा करने के लिए उनके साथ बातचीत करते हैं। यह आयोजन शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा पिछले छह वर्षों से सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है। परीक्षा पे चर्चा युवाओं के लिए तनाव मुक्त वातवरण बनाने के लिए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बड़े आंदोलन -एग्जाम वॉरियर्स का हिस्सा है। यह एक ऐसा आंदोलन है जो प्रधानमंत्री के छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों और समाज को एक साथ लाने के प्रयासों से प्रेरित है ताकि एक ऐसे माहौल को बढ़ावा दिया जा सके जहां प्रत्येक बच्चे के अद्वितीय व्यक्तित्व का उत?सव मनाया जाए, प्रोत्साहित किया जाए और आत?माभि०?यक्ति की अनुमति दी जाए। प्रधानमंत्री की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक एग्जाम वॉरियर्स इस पहल को प्रोत?साहित कर रही है। लगभग 2050 प्रतिभागियों का चयन मायगोव पोर्टल पर उनके प्रश्नों के आधार पर किया जाएगा। उन्हें एक विशेष परीक्षा पे चर्चा किट प्रदान की जाएगी जिसमें प्रधानमंत्री द्वारा लिखित पुस्तक हिंदी और अंग्रेजी में एग्जाम वॉरियर्स और एक प्रमाण पत्र शामिल होगा। 12 जनवरी (विवेकानंद के जन?म दिवस) 2024 यानी युवा दिवस से शुरू होकर 23 जनवरी (सुभाष चंद्र बोस के जन?म दिवस) 2024 तक मुख्य कार्यक्रम के अग्रदूत के रूप में, स्कूल स्तर पर विभिन्?न गतिविधियों काआयोजन किया जाएगा जिनमें मैराथन दौड़, संगीत प्रतियोगिता जैसी आनंददायक सीखने की गतिविधियाँ शामिल होंगी। इनमें मीम प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक, छात्र-एंकर-छात्र-अतिथि चर्चा आदि शामिल हैं। आखिरी दिन, 23 जनवरी 2024 यानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस जयंती की जयंती पर, देश भर के 500 जिलों में एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। इसके लिए चंद्रयान, भारत की खेल सफलता आदि विषय शामिल होंगे - जो दिखाते हैं कि परीक्षाएं कैसे जीवन का उत्सव हो सकती हैं।

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम के पिछले एपिसोड में विचारों की करें तो उन्होंने कहा था, 30-40 साल बाद गर्व होगा पीएम ने आखिर में कहा, था आज जो मेरे सामने हैं, वो नया भारत हैं। 2047 में भारत जब आजादी की शताब्दी मनाएगा, तो आपके पास नेतृत्व होगा। आज से 30-40 साल बाद जब सफलता को चूमेंगे और मैं अगर जीवित रहूंगा तो गर्व से कहूंगा कि यह वही लोग हैं जिनका मुझ जनवरी को दर्शन करने का सौभाग्य मिला था। मैं गर्व करूंगा कि जब आपके हाथ में देश का नेतृत्व होगा। संतोष होगा कि इनसे मैंने बात की थी। परीक्षा जिंदगी नहीं है, परीक्षा जिंदगी में महज एक मुकाम है। आप में से बहुत से लोग हैं, जिन्हें शायद यहां मौका नहीं मिला। मैं उनसे क्षमा चाहता हूं। पीएम ने कहा था, जीवन में हर किसी को कुछ न कुछ जिम्मेदारियां निभानी होती हैं। अगर आप किसी की देखादेखी में कोई काम करते हैं, तो बहुत निराशा हाथ लगेगी। अगर अपने मन का काम करेंगे, तो मजा आएगा। जिंदगी में अगर एकाध एंट्रेंस में रह गए तो क्या। लाखों लोग पीछे रह जाते हैं। लेकिन अगर हम डर के कारण कदम ही न रखें तो उससे बुरा कुछ नहीं। हमेशा अपने अंदर के विद्यार्थी को जीवित रखें। जीवन जीने का यही मार्ग है, नया-नया जानना।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम छात्रों को तनाव से मुक्ति का सशक्त माहौल देता है।परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम 29 जनवरी 2024 के एतिहासिक रिकॉर्ड बनाने की संभावना-पंजीकरण की 12 जनवरी 2024 अंतिम तारीख।देशभर के छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों में परीक्षा पे चर्चा के प्रति व्यापक उत्साहजनक माहौल है।

खेलों में राजनीति खेल और खिलाड़ी दोनों के लिए चिंताजनक

-डॉ। सत्यवान सौरभ

कुश्ती को लेकर मचे बवाल के बीच खिलाड़ी भी सियासी रंग में रंगे नजर आने लगे हैं। यह खेल और खिलाड़ी दोनों के भविष्य के लिए चिंताजनक है। खेलों में सियासत ठीक नहीं है। खेलों में पक्ष-विपक्ष की राजनीति खेल और खिलाड़ी दोनों के लिए चिंताजनक है। खेलों में राजनीति गलत है। खेल साफ, स्वच्छ और पारदर्शी होने चाहिए।वर्तमान कुश्ती संघ और सियासती विवाद से दुनिया भर में भारत की बदनामी हो रही है। पिछले लगभग एक साल के भारतीय कुश्ती को सियासत ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। कुश्ती संघ के अध्यक्ष पर महिला पहलवानों के आरोप लगने के बाद से ही सरकार को उन्हें हटा देना चाहिए था, किंतु सियासत के चलते ऐसा नही हुआ। यह खेलों पर एक बदनुमा दाग, शर्म का विषय और त्रासदी है। देश के जो खिलाड़ी विदेशी सरजमीं पर तिरंगे का मान बढ़ाते आए उन्हें अपने अधिकारों के लिए जंतर- मंतर पर धरना देना पड़ रहा है। क्या ऐसे देश खेलों में आगे बढ़ेगा? देश को मेडल दिलाने वाले इंसाफ की गुहार लगा रहे हैं।

पहलवान कुश्ती महासंघ से दो-दो हाथ करने उतरे हैं। आखिर इस खेल और सियासी लड़ाई का अंजाम क्या होगा? किसकी सरकार है या किसकी थी, ये मुद्दा नहीं है। सवाल ये है कि क्या महिला खिलाडियों के साथ यौन शोषण होता है? या फिर ये सियासती मामला है। मुद्दा महिला खिलाड़ियों की सम्मान एवं मानसिक, शारीरिक सुरक्षा का है। अगर कुश्ती में बेटियों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं हुई तो महिला खिलाड़ियों में हर खेल के प्रति रुझान खत्म हो जायेगा। उनका मनोबल गिर जायेगा। महिलाओं की खेलों में भागीदारी कम हो जायेगी। देश की प्रतिष्ठा और महिला खिलाड़ियों की अस्मिता का सवाल है। क्या राजनीति के चलते दम तोड जाती है प्रतिभाएं? खेलों में राजनीति के सक्रिय होने से प्रतिभावान खिलाड़ियों को दबाया जाता है। खिलाड़ी हमेशा खेल अधिकारियों के दवाब में रहते है। खेलों में मेहनत करने वालों की प्रतिभाएं दबकर रह जाती हैं और आवाज उठाने पर खत्म कर दिया जाता है। इसका दुष्परिणाम यह है कि आज अभिभावक कुश्ती या अन्य खेल में अपनी बेटी का भेजते कई बार सोचेंगे। देश में अभिभाववक पहले ही अपनी बेटी की सुरक्षा और सम्मान को लेकर चिंतित रहते हैं, इस प्रकरण ने उनकी चिंता और बढ़ायी है। अब वे बेटी को खेल विशेषकर कुश्ती में भेजतेहजार बार सोंचेंगे। हाल ही में सरकार ने नए चुनाव का भले ही रद्द कर दिया हो किंतु लंबे समय से कुश्ती संघ में दबदबा कायम रखें राजनीतिज्ञ चुप बैठने वाले नहीं हैं। वे सरकार के इस निर्णय के विरूद्ध कोर्ट जांएगे। इनका प्रयास होगा कि कुश्ती संघ की सियासत उनके हाथ से न जा पाए। भले ही सरकार ने नए चुनाव को रद्द करके यह संदेश देने का प्रयास किया है कि कुश्ती संघ को नियमों का पालन करना होगा। लेकिन खेल संघ से राजनैतिक लोगों को दूर रखने के लिए सरकार को काम करना चाहिए। खिलाड़ी भी यदि राजनीति में आ जाए तो उसे भी खेल संघ से बाहर ही रखा जाना चाहिए। सुप्रीम कार्ट भी खेल संघों में राजनैतिक दखल को लेकर चिंता जता चुका है और इसे कटाई जायज नहीं ठहराता। खेलों में सियासत का सकारात्मक प्रभाव समाज में एकात्मकता और सामाजिक समर्थन की भावना लेकर आता है और खिलाड़ियों को एक सकारात्मक पहचान बनाए रखने में मदद करता है वही इस बात की अनदेखी भी की नहीं की जा सकती कि कई बार अमुक खिलाड़ी को मनचाहे स्थान पर पहुंचाने के लिए सियासी दबाव और भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है।

सियासी हस्तक्षेप नेताओं के बीच जातिवाद धर्मनिरपेक्षता राजनीतिक असंतुलन लता है और खेलों को प्रभावित करता है। वर्तमान समय में सियासी दलों ने कुश्ती को अपने निजी लाभ के लिए उपयोग करने का दुष्प्रयास किया है जिससे खिलाड़ियों और खेल समर्थको को काफी बड़ा नुकसान हुआ है। सियासत का प्रयोग खेल और खिलाड़ियों के विकास में किया जाना चाहिए। निजी लाभ और निजी प्रकरणों का समायोजन खेल भावना से दूर होना चाहिए। ताकि वह खेल देश को गौरवान्वित करें और करता रहे। खेलों को सियासी बनाने वाले मुद्दे आमतौर से विवादास्पद हो रहे हैं।

कमिश्नर ने ली चरण पादुका यात्रा की जानकारी, दीवाली जैसा रहे माहौल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। चित्रकूट धाम मंडल के मंडलायुक्त बालकृष्ण त्रिपाठी को रामचरण पादुका यात्रा तैयारी बाबत बैठक में क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी ने रूट के बारे में विस्तार से बताया।

शनिवार को लोनिवि सभागार में हुई बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमिश्नर बालकृष्ण त्रिपाठी को क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी ने बताया कि चरण पादुका यात्रा भरतकूप से शुरू होकर 15 जनवरी को पूर्वान्ह 11 बजे रामायण मेला में रात विश्राम करेगी। क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी ने कहा कि 16 जनवरी को यात्रा बेडी पुलिया धनुष चैराहा होते हुए राजापुर से कौशांबी, प्रयागराज, श्रृंगवेरपुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, नंदीग्राम होते हुए अयोध्या 19 जनवरी को पहुंचेगी। मंडलायुक्त ने क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को निर्देश दिये कि रथ बनाने वाले से रथ कब तक तैयार होगा, सुनिश्चित करायें। रथ के साथ दो अतिरिक्त रथ रहेंगे, एक बस भी चलेगी। 40 से 50 लोगों की व्यवस्था रहेगी। मंडलायुक्त ने कहा कि महिला व पुरुषों की संख्या निर्धारित करें। रास्ते में बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद व आरएसएस जगह-जगह फूलों से स्वागत करेंगे। रामायण मेला स्थल पर संध्या में साउंड, लाइट की व्यवस्था अच्छे से करायें। यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था करायें। मंडलायुक्त ने ईओ कर्वी, राजापुर व डीपीआरओ को निर्देश दिये कि साफ-सफाई चैकस रहे। एंबुलेंस भी रहे। जिलाधिकारी ने ईओ व एनएच प्रयागराज को निर्देश दिये कि व्हाइट लाइन व साईनेज भी लगवायें। रास्ते में एक भी गड्ढे नहीं रहने चाहिए। मंडलायुक्त ने डीएसओ को निर्देश दिये कि पेट्रोल पंप पर महिला, पुरुष टॉयलेट, पीने के पानी की व्यवस्था करायें।

जिलाधिकारी ने कहा कि 14 से 22 जनवरी तक मंदिरों में कीर्तन-भजन होंगे। डीपीआरओ को निर्देश दिये कि गांव के मंदिरों की सजावट करायें। 21-22 जनवरी को रामघाट पर स्पेशल आरती की सजावट करायें। सीओ सिटी व क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी को निर्देश दिये कि अखाड़े से वार्ता कर तालमेल कर कीर्तन व सजावट करायें। मंडलायुक्त ने कहा कि हर गांव घर में दीपोत्सव माहौल रहे। बैठक में अपर आयुक्त प्रशासन मंडल बांदा अमरपाल सिंह, एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एसडीएम सौरभ यादव, राजापुर प्रमोद कुमार झा, ईओ, एनएच प्रयागराज आरपी सिंह, एक्सईएन लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्र नाथ, सीओ सिटी हर्ष पांडे, डीएसओ आनंद कुमार सिंह आदि मौजूद रहे।

बैठक में बोलते कमिश्नर।

गरीबी दूर कर विकसित भारत बना रहे पीएम मोदीः आरके सिंह पटेल

विकसित भारत संकल्प यात्रा का हुआ गर्मजोशी से स्वागत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। विकसित भारत संकल्प यात्रा जिले के रामनगर ब्लॉक व सदर ब्लाक कर्वी के सकरौली में मोदी की गारंटी रथ का सांसद आरके सिंह पटेल की अगुवाई में क्षेत्रीय जनता ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

शनिवार को बतौर मुख्य अतिथि सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि विकसित भारत संकल्प यात्रा पात्र लाभार्थियों को मोदी सरकार की गरीब कल्याण को समर्पित योजनाओं का लाभ दिलाना है। सरकारी विभागों के अधिकारी गांव में सीधे पात्रों को योजना से जोड़ रहे हैं। ये मोदी की गारंटी की गाड़ी है। जनप्रतिनिधि व अधिकारी मिलकर जनता को सरकार की योजनाओं से जोड़ रहे हैं। किसान सम्मान निधि से मोदी सरकार किसानों को सीधे लाभ दे रही है, ताकि समय से फसल की बुवाई कर सके। गरीब परिवारों में माता-बहनों के जीवन सुधार को उज्ज्वला योजना से निःशुल्क गैस सिलेंडर दिये जा रहे हैं। आयुष्मान कार्ड से गरीब परिवारों को पांच लाख का मुफ्त इलाज की गारंटी सरकार ने ली है। मोदी सरकार में जन्मभूमि अयोध्या में बने भव्य मंदिर में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होगी। पीएम मोदी का संकल्प है कि 14 से 22 जनवरी तक प्रत्येक देवालय में स्वच्छता के साथ दीप जलाये जायेंगे।

कार्यक्रम में खासतौर से रामनगर मंडल अध्यक्ष प्रदीप सिंह, पहाड़ी मंडल अध्यक्ष विनोद पाण्डेय, ब्लाक प्रमुख गंगाधर मिश्रा, वरिष्ठ भाजपा नेता अर्जुन शुक्ला, मुन्नालाल प्रजापति, अनिल त्रिपाठी, शारदा प्रसाद पांडे, रामनरेश यादव, भगवानदीन यादव, शक्ति प्रताप सिंह तोमर, शिवाकांत पांडे समेत सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे।

संकल्प यात्रा में ग्रामीणों को बताते सांसद आरके सिंह पटेल।

गाहुर के किसानों को जैव ऊर्जा के प्रति किया जागरूक

चित्रकूट। तहसील मऊ के गाहुर गांव में यूपी नेडा के परियोजना अधिकारी एके श्रीवास्तव ने अक्षय ऊर्जा जागरूकता के तहत सौर ऊर्जा, जैव ऊर्जा, अल्ट्रामेगा सोलर पॉवर पार्क के तहत किसानों को जागरूक किया। शनिवार को हुई गोष्ठी में सोलर संयन्त्रों का प्रदर्शन कर सौर ऊर्जा से संचालित ऑन ग्रिड सोलर रूफ टाप, निजी नलकूपों के सोलराइजेशन बाबत आवेदन प्रक्रिया एवं जैव ऊर्जा नीति के तहत सीबीजी, बायोकोल, बायोडीजल/बायो एथनाल बाबत परियोजना अधिकारी एके श्रीवास्तव ने जानकारी दी। बतौर मुख्य अतिथि सीडीओ श्रीमती अमृतपाल कौर ने सौर ऊर्जा संयन्त्रों को अपनाने व आठ सौ मेगावाट अल्ट्रामेगा सोलर पॉवर पार्क बाबत किसानों से सीधे संवाद किया। जो भूमि किसानों ने दी है, धन्यवाद ज्ञापित कर कहा कि अन्य किसान भी भूमि दें। टुस्को के अपर महाप्रबंधक एपी व्यास ने आठ सौ अल्ट्रामेगा सोलर पॉवर पार्क बाबत विवरण दिया। गोष्ठी में तहसीलदार विजय यादव, बीडीओ रामजी मिश्र, वरिष्ठ प्रबन्धक टुस्को पीके भट्ट, विकास सिंह, निदेशक जैव ऊर्जा आदित्य पाण्डेय, प्रधान गाहुर, एफपीओ किसान मौजूद रहे। अंत में परियोजना अधिकारी एके श्रीवास्तव ने सभी का आभार जताया।

वनरोजों के आतंक से किसान परेशानः अनिल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा के सदर विधायक अनिल प्रधान ने सूबे के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि जिले में कई वर्षों से नील गाय वनरोज के आतंक से किसानों की फसल को भारी क्षति पहुंच रही है। इसके रोकथाम को उपाय किये जायें। शनिवार को सपा के सदर विधायक अनिल प्रधान ने सूबे के मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में कहा कि कई वर्षों से नील गाय किसानों की फसल को भारी क्षति पहुंचा रहे हैं। पहले वनरोजों की तादाद कम थी, अब हजारों की तादाद में वनरोज हो गये हैं। इनसे फसल बचने की उम्मीद नहीं है। रोकथाम शासन स्तर से न हुई तो किसान भुखमरी की कगार पर आ जायेंगे। किसानों की जीविका के मद्देनजर वनरोजों की रोकथाम को शासन स्तर से राहत दिलाई जाये। उन्होंने मुख्यमंत्री से क हा कि समस्या निदान को शासन स्तर से वनरोजों की रोकथाम को कार्यवाही कराई जाये।

सदर विधायक अनिल प्रधान।

गौवंशों का निवाला खा रहे प्रधान-सचिव

भ्रष्टाचार की गंगोत्री में लगा रहे डुबकी

मानिकपुर/चित्रकूट। मानिकपुर ब्लाक के नागर गांव में राज्य वित्त आयोग-15वां वित्त समेत मनरेगा कार्यों में प्रधान-सचिव भ्रष्टाचार में गोते लगा रहे हैं। गौवंशो का निवाला प्रधान-सचिव खा रहे हैं। शनिवार को नागर गांव के प्रधान-सचिव के भ्रष्टाचार का खुलासा हुआ। बताया गया कि नागर गांव की गौशाला में भूख-प्यास से गौवंश तड़प रहे हैं। प्रधान-सचिव फर्जी बिल बाउचर लगाकर चहेते सप्लायर के नाम भुगतान करवा रहे हैं। सरकार की मंशानुसार कार्य न कर मनमानी पर उतारू हैं। विकास कार्यों की धनराशि में प्रधान पानी फेर रहा है। प्रधान व सचिव गौशाला में दिखावे को भूसा रखते हैं। गौवंशों को खाने को नहीं देते।

माकपा ने बस्तियां उजाडने का किया विरोध

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। माकपा जिला सचिव का रुद्र प्रसाद मिश्र एड के हवाले से जिला मुख्यालय के लक्ष्मणपुरी मोहल्ले के राहुल, राजकुमार, रनुवा देवी, देवराज जाटव, करन जाटव, नवीन, मंजू व नीलम ने जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि गैरकानूनी ढंग से दलितों-गरीबों की झोपडियों को ढहाया जा रहा है। माकपा जिला सचिव ने कहा कि मिशन अस्पताल की चहारदीवारी से सटी भूमि नानजेडए जमींदार चैधरी छोटेलाल की है। नगर पालिका को गरीबों की झोपडी ढहाने का अधिकार नहीं है।

शनिवार को मुख्यालय के लक्ष्मणपुरी के लोगों ने माकपा जिला सचिव रुद्र प्रसाद मिश्र एड से गुहार लगाई कि उनकी झोपडियां नगर पालिका ढहा रहा है। जिलाधिकारी को लिखे पत्र में कहा कि वे लोगों के घरों में झाड़ू-पोछा, साफ-सफाई कर बच्चों का पेट पालते हैं। आजादी के पहले जब पयश्वनी नदी पर पुल नहीं बना था, इसी मार्ग से आवागमन होता था। सडक किनारे की भूमि नानजेडए है। जिस पर सरकार व नगर पालिका का हक नहीं है। यहीं पर घर बनाकर पचास साल से रहते आ रहे हैं। चुनाव में वोट डालते चले आ रहे हैं। इन्हीं घर से आधारकार्ड भी बने हैं। पालिका के कुछ कर्मचारियों ने उनके घर गिरा दिये हैं। विरोध पर जेल भेजने की धमकी देते हुए जातिसूचक शब्दों का प्रयोग किया है।

लोगों ने जब पूंछा कि किसके आदेश पर घर गिरा रहे हैं तो कहा कि आदेश मत देखो, रासुका लगाकर जेल भेज देंगे। बुलडोजर में नम्बर नहीं था। पीडितों ने मामला दर्जकर कानूनी कार्यवाही की मांग की है। मौके पर देखा तो बुलडोजर से घर नहीं ढहाये जा रहे थे। इस बारे में ईओ नगर पालिका लालजी यादव ने कहा कि अवैध कब्जे हटाये जा रहे हैं। शासनादेश का पालन किया जा रहा है।

पत्रकारों से बात करते माकपा जिला सचिव आदि।

शासन के कडे निदेर्शः तत्काल निपटायें भूमि मामलेः डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने कर्वी तहसील सभागार में संपूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की समस्यायें सुनीं।

शनिवार को तहसील सभागार में जिलाधिकारी ने अध्यक्षता करते हुए प्राप्त समस्याओं का निस्तारण रजिस्टर देखा। निस्तारण आख्या का परीक्षण किया। अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन मामलों का निस्तारण हो रहा है, समस्या ग्रस्त को भी बतायें, ताकि वह निस्तारण से संतुष्ट हो सके। जिला स्तरीय अधिकारियों से कहा कि शासन से निर्धारित समय सीमा के भीतर शासन की मंशानुसार निस्तारण करें। जिन-जिन विभागों की समस्यायें मिली हैं, मौके पर जाकर निस्तारण करायें।

उन्होंने एसडीएम व थाना प्रभारियों से कहा कि भूमि संबंधी मामले में राजस्व, चकबंदी व पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर निस्तारण करायें। शासन के कडे निर्देश हैं कि जमीन संबंधी मामलों का तत्काल निस्तारण करायें। इस मौके पर एसडीएम सदर सौरभ यादव, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ भूपेश द्विवेदी, प्रभागीय वनाधिकारी नरेन्द्र कुमार सिंह, जिला विकास अधिकारी आरके त्रिपाठी, तहसीलदार कर्वी अमित कुमार त्रिपाठी, जिला पंचायत राज अधिकारी कुमार अमरेंद्र, खंड विकास अधिकारी कर्वी आस्था पांडेय, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक तुलसीराम, जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, बंदोबस्त अधिकारी मनोहरलाल धर्मान, एक्सईएन लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्रनाथ, सहायक निदेशक मत्स्य भानु चंद्रा, नायब तहसीलदार कर्वी मंगल यादव, ईओ लालजी यादव, डीएचओ श्रीमती प्रतिभा पांडे, डीआईओएस एसके मिश्रा, जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज मिश्रा, कर्वी कोतवाल अजित कुमार पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

तहसील कर्वी में समस्या सुनते डीएम।

गांजा तस्कर को तीन वर्ष की सजा

चित्रकूट। न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निदेर्शों के अनुपालन में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द व पैरोकार रामकिशोर की पैरवी से न्यायालय ने गांजा तस्कर आरोपी को तीन वर्ष की सजा व दस हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। शनिवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी बहस से न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी (न्यू) सुशील कुमार वर्मा ने भरतकूप थाने में दर्ज एनडीपीएस एक्ट के आरोपी हुसैन खां पुत्र हसीब खां निवासी परछा थाना मौदहा जिला हमीरपुर को तीन वर्ष की सजा व दस हजार रुपए के जुमार्ना से दंडित किया। ज्ञात है कि 29 मई 2022 को पूर्व दरोगा शैलेन्द्र कुमार ने अकमल खान को चार किलो दो सौ ग्राम गांजा समेत गिरफ्तार किया था। थाने में एनडीपीएस एक्ट दर्जकर विवेचक कृपानन्दन शर्मा ने विवेचना कर आरोपी के खिलाफ न्यायालय में 28 जून 2022 को आरोप पत्र दाखिल किया था।

प्रयागराज ने मेरठ को आठ विकेट से हराया

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जन्म स्मृति पर सुभाष चैलेंज कप का 51वें वर्ष में राज्य स्तरीय महिला क्रिकेट टूनार्मेंट 11वें वर्ष का शुभारम्भ मैच मेरठ व प्रयागराज के बीच हुआ। मेरठ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 15 ओवर में पांच विकेट खोकर 94 रन बनाये, 95 रन का लक्ष्य दिया।

शनिवार को मेरठ से बल्लेबाजी कर नेहा ने 27 गेंद में 25 रन, अनन्या ने 38 गेंद में 34 रन बनाये। प्रयागराज से रिया ने तीन ओवर में 11 रन देकर एक विकेट, तनु ने तीन ओवर में 16 रन दिये। लक्ष्य पाने को प्रयागराज ने 13.4 ओवर में लक्ष्य प्राप्त कर लिया। प्रयागराज से तनु 50 गेंद में 58 रन, ज्योति ने 24 गेंद में 16 रन की पारी खेली। मेरठ से छाया ने तीन ओवर में 21 रन, रीता ने तीन ओवर में 17 रन देकर एक विकेट लिया। मैन ऑफ द मैच तनु रही। प्रयागराज ने मुकाबले को आठ विकेट से अपने नाम किया। आज के मैच के मुख्य अतिथि सदर विधायक अनिल प्रधान, विशिष्ठ अतिथि एसडीएम मो जशीन रहे।

खिलाडियों से परिचय लेते सदर विधायक अनिल प्रधान।

छलिया पार्टी है भाजपाः शिवशंकर सिंह यादव

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा जिला कार्यालय में हुई मासिक बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने की। सभी बूथ अध्यक्ष, सेक्टर प्रभारी, जोन प्रभारी, संगठन पदाधिकारी की मौजूदगी में जिलाध्यक्ष ने कहा कि सपा आंदोलन से जन्मी पार्टी है। गरीब, किसान, नौजवान की बात करने वाले लोग हैं।

शनिवार को मासिक बैठक में जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने कहा कि नेता श्रद्धेय मुलायम सिंह यादव ने कहा था कि भाजपा छलिया पार्टी है। ये लोगों को भ्रमित कर असल मुद्दों से ध्यान भटकाने का काम करती है। जनता की बुनियादी समस्याओं पर ध्यान नहीं देती। भाजपा को हराने को बूथ स्तर पर संगठन की मजबूती जरूरी है। जिले के सभी बूथ सेक्टर कमेटियों को मजबूत किया है। जिले में लोग अन्ना जानवरों से परेशान हैं। किसानों को खाद नहीं मिल रही। अस्पतालों में दवाई नहीं है। जिले का अस्पताल रेफर सेन्टर बना है।

पूर्व जिलाध्यक्ष अनुज सिंह यादव ने कहा कि प्रत्येक बूथ को मजबूत कर राष्ट्रीय अध्यक्ष की नीतियों-रीतियों को घर-घर पहुंचा कर समाजवाद की अलख जगाने का काम करेंगे। इस मौके पर पूर्व विधायक वीर सिंह पटेल, जिला उपाध्यक्ष नरेंद्र यादव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मो गुलाब खान, सीताराम कश्यप, मेघराज प्रजापति, सियाराम गुप्ता, जागेश्वर यादव, संतोष कोठारी, ओमकार यादव, राजा यादव, मंगल सिंह यादव, रमेश यादव, सदर विधायक अनिल प्रधान, डा निर्भय सिंह पटेल, हरिमोहन यादव व सिद्धार्थ पाण्डेय आदि मौजूद रहे।

मासिक बैठक में बोलते सपा जिलाध्यक्ष।

डकैतों के आतंक से शाम ढलते ही बन्द होती थीं दुकानेंः शानू

व्यापारी महाकुम्भ का पहला दिन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राष्ट्रीय जन उद्योग व्यापार संगठन के दो दिवसीय प्रान्तीय व्यापारी महाकुंभ में श्रीजी भवन में व्यापारियों के मेले का शुभारम्भ हुआ। व्यापारी महाकुम्भ के मुख्य अतिथि दिल्ली भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने शुभारम्भ किया।

शनिवार को प्रान्तीय व्यापारी महाकुंभ संयोजक राष्ट्रीय महामंत्री संगठन शानू गुप्ता ने अतिथियों का अभिनन्दन कर सम्मान किया। अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित गुप्ता व प्रदेश अध्यक्ष मनीष अग्रवाल ने स्वागत किया। पहले दिन दो सत्रों में मुख्य अतिथि दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने कहा कि चित्रकूट में पर्यटन विकास पर केन्द्र व प्रदेश सरकार की दृष्टि है। दो दिवसीय व्यापारियों का महाकुंभ सराहनीय है। दिल्ली भाजपा प्रदेश अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने कहा कि भाजपा सरकार व्यापारियों, उद्योगपतियों को सरल-नये नियम ला रही है। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने कहा कि दिल्ली प्रदेश में व्यापारियों, उद्यमियों की सरकार मदद कर रही है। संयोजक राष्ट्रीय महामंत्री संगठन शानू गुप्ता ने कहा कि चित्रकूट में डकैतों के भय से लोग शाम ढलते ही दुकानें बन्द कर देते थे। प्रदेश में भाजपा शासन में राम राज्य हो गया है। व्यापारी भयमुक्त होकर कारोबार कर रहे हैं। पहले दिन प्रदेश कार्यसमिति का अधिष्ठापन हुआ।

इस मौके पर राष्ट्रीय संगठन मंत्री अजीत सिंह बग्गा, स्वप्निल अग्रवाल, अर्पित अग्रवाल, संरक्षक अशोक गुप्ता, जिलाध्यक्ष प्रमोद जायसवाल, प्रदेश संगठन मंत्री विनोद केसरवानी, विनोद आर्य, शेशू जायसवाल, सुनील जायसवाल, शकुन्तला गुप्ता समेत हजारों व्यापारी मौजूद रहे। विशिष्ट अतिथि बतौर बाल संरक्षण आयोग सदस्य अनीता अग्रवाल मौजूद रहीं।

व्यापारी महाकुम्भ में मौजूद व्यापारी।

दुकानों-टेन्ट हाउस में चोरों ने किया हाथ साफ

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। थाना क्षेत्र में एक गेस्ट हाउस में आर्यनगर मोहल्ले के हरीनारायण साहू की दुकान में चोरों ने शटर तोडकर दो लाख का कीमती सामान व 77 सौ रुपये नकद उडा ले गये। चोरी की ये घटना शुक्रवार की रात कस्बे में हुई। बताया गया कि घने कोहरे व रिमझिम बारिश में रात में चोरों ने दो दुकानों व एक टेन्ट हाउस का शटर तोडकर लाखों की नकदी लेकर चम्पत हो गये। सवेरे पुलिस ने घटना की पडताल की। गांधीनगर मोहल्ले के तिराहे में हरीनारायण साहू की किराने की दुकान से चोर दो लाख का सामान व 77 सौ रुपये नकद लेकर भाग गये। अनुमान है कि चोर दो से ज्यादा थे। जिस तरह से किराने का सामान ढोया गया है, उससे अनुमान है कि चोर दो से ज्यादा थे। गेस्ट हाउस से चोर चार गंजा ले गये हैं। चोरों ने सीसीटीवी दूसरी ओर घुमाकर घटना अंजाम दी। लवकुश सोनी सराफा दुकान का शटर तोडने का चोरों ने प्रयास किया। सुभाषनगर के गुरौला रोड के आशुतोष पाण्डेय के ग्राहक सेवा केन्द्र का शटर तोडकर एक लाख बीस हजार नकद व अन्य सामान ले गये।

हिजबुल्लाह ने उत्तरी इजरायल में रॉकेट हमले की जिम्मेदारी ली

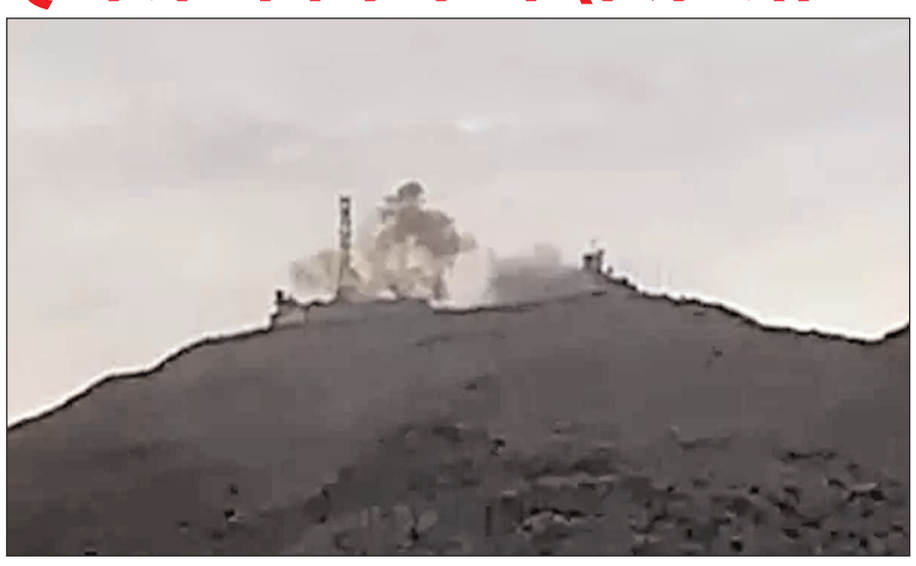

यरूशलम। लेबनानी सैन्य समूह हिजबुल्लाह ने शनिवार को उत्तरी इजरायल में माउंट मेरोन पर लेबनान से रॉकेट हमले की जिम्मेदारी ली।

एक बयान में हिजबुल्लाह ने दावा किया कि उसने 62 प्रोजेक्टाइल के साथ क्षेत्र में एक इजरायली सैन्य प्रतिष्ठान को निशाना बनाया, और कहा कि यह हमला मंगलवार को लेबनान में हमास के उप प्रमुख सालेह अल-अरौरी की कथित इजरायली हत्या की "प्रारंभिक प्रतिक्रिया" है।

समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इजराइल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) द्वारा शनिवार सुबह जारी एक बयान में कहा गया, "उत्तरी इजरायल में मेरोन के क्षेत्र की ओर लेबनान से लगभग 40 प्रक्षेपणों की पहचान की गई थी।"

बयान के अनुसार, आईडीएफ ने लॉन्च में भाग लेने वाले लेबनानी सैन्य इकाई पर हमला करके जवाब दिया। इजरायली मीडिया ने बताया कि लेबनान के साथ उत्तरी सीमा के करीब लगभग 90 समुदायों में सायरन बजने के बाद माउंट मेरोन के करीब विस्फोट हुए। सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे वीडियो में माउंट मेरोन के कई इलाकों में धुआं निकलता हुआ दिखाई दे रहा है।

2024 का राष्ट्रपति चुनाव लोकतंत्र की लड़ाई, ट्रम्प मुख्य खतरा : बाइडेन

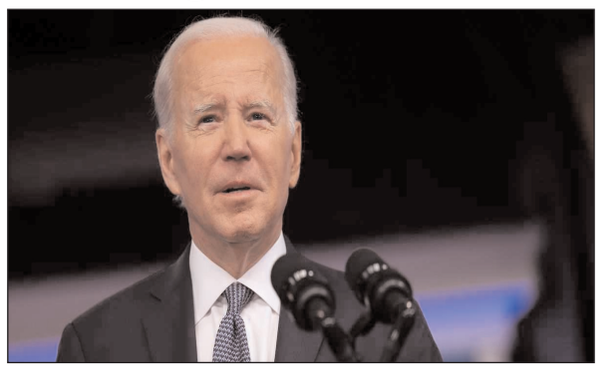

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने शुक्रवार को साल के अंत में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव को अमेरिका में लोकतंत्र बचाने की लड़ाई के रूप में पेश किया और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को मुख्य खतरा बताया।

बाइडेन ने वर्ष के अपने पहले अभियान भाषण में कहा,"आज हम यहां सबसे महत्वपूर्ण सवालों का जवाब देने के लिए हैंः क्या लोकतंत्र अभी भी अमेरिका का पवित्र कारण है" "2024 का चुनाव इसी के बारे में है।" उन्होंने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति ट्रम्प लोकतंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं।

उन्होंने कहा, "ट्रंप उसी तरह इतिहास चुराने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे उन्होंने चुनाव चुराने की कोशिश की थी।" ह्लहमने इसे अपनी आंखों से देखा। ट्रम्प के समर्थकों ने हिंसक हमला कयिा, वे विद्रोही थे।"

बाइडेन 6 जनवरी, 2021 को यूएस कैपिटल पर ट्रम्प के समर्थकों द्वारा किए गए हमले का जिक्र कर रहे थे।

राष्ट्रपति का भाषण अमेरिकी इतिहास में अमेरिकी लोकतंत्र पर सबसे घातक हमले की तीसरी बरसी की पूर्व संध्या पर आया और यह पेंसिल्वेनिया राज्य के एक सामुदायिक कॉलेज से दिया गया था, जो वैली फोर्ज नेशनल हिस्टोरिकल पार्क से 10 मील दूर था।

बाइडेन ने 30 मिनट के भाषण में 44 बार ट्रम्प का नाम लेकर उल्लेख किया, इससे पूर्व राष्ट्रपति उनके प्रतिद्वंद्वी के रूप में स्थापित हो गए।

कुछ विश्लेषकों ने कहा है कि बाइडेन वास्तव में ट्रम्प के खिलाफ फिर से प्रतिस्पर्धा को पसंद करते हैं। रिपब्लिकन मतदाताओं के बीच अपनी लोकप्रियता के बावजूद, ट्रम्प पर दो बार महाभियोग चलाया गया, और चार मामलों में 90 से अधिक अपराधों का आरोप लगाया गया। उन्हें दो राज्यों, कोलोराडो और मेन में मतदान से बाहर कर दिया गया है।

बाइडेन अपने कुछ अन्य रिपब्लिकन प्रतिद्वंद्वियों जैसे दक्षिण कैरोलिना के पूर्व गवर्नर और संयुक्त राष्ट्र में संघीय कैबिनेट-रैंक के पद पर राजदूत निक्की हैली के बजाय ट्रम्प के खिलाफ चुनाव लड़ना पसंद करेंगे। वह ट्रम्प और फ्लोरिडा के गवर्नर रॉन डेसेंटिस की तुलना में बाइडेन को बड़े अंतर से हरा रही हैं, जो रिपब्लिकन प्राइमरी में नंबर 2 स्लॉट के लिए हेली के साथ प्रतिस्पर्धा में हैं।

सोमालिया तट पर अपहृत जहाज में सवार सभी भारतीयों को सुरक्षित निकाला गया, सुरक्षा के लिए अरब सागर में चार युद्धपोत तैनात

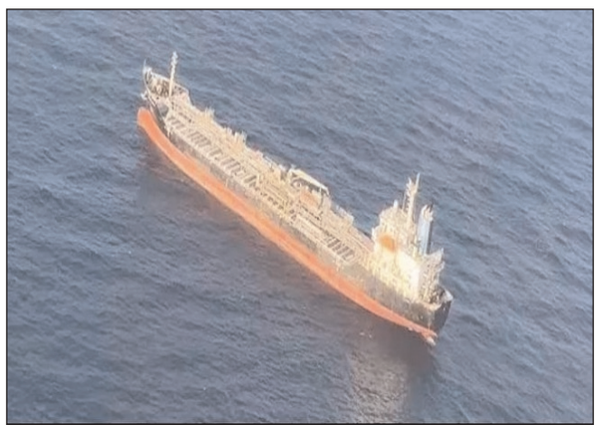

मोगादिशु। सोमालिया तट पर अपहृत जहाज एमवी लीला नोरफोक पर सवार सभी 15 भारतीयों सहित चालक दलों को सुरक्षित बचा लिया गया है। भारतीय सैन्य अधिकारियों ने कहा कि नौसेना के कमांडो जहाज के अन्य हिस्सों में जांच अभियान चला रहे हैं। वहीं, भारतीय नौसेना प्रमुख एडमिरल आर हरि कुमार ने अरब सागर में सक्रिय भारतीय युद्धपोतों को समुद्री लुटेरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही इस क्षेत्र में व्यापारिक जहाजों पर हमलों को रोकने के लिए अरब सागर में भारतीय नौसेना के चार युद्धपोत तैनात किए गए हैं।

बता दें कि अरब सागर में सोमालिया के तट के नजदीक लाइबेरिया का झंडा लगा मालवाहक जहाज हाईजैक हो गया था। एमवी लीला नोरफोक नाम के इस जहाज के चालक दल में 15 भारतीय थे। सूचना मिलते ही इस जहाज को मुक्त कराने के लिए भारतीय नौसेना ने अपना युद्धपोत आइएनएस चेन्नई रवाना कर दिया था और शुक्रवार को दोपहर बाद वह हाईजैक जहाज के करीब पहुंच गया था। इससे पहले जानकारी मिली थी कि आईएनएस चेन्नई ने हाईजैक जहाज को रोक लिया है और नौसेना के मार्कोस कमांडो एमवी लीला पर उतर गए हैं। इन कमांडो ने जहाज में कार्रवाई शुरू कर दी है। इससे पहले नौसेना के गश्ती विमान ने शुक्रवार सुबह हाईजैक जहाज को तलाशा और विमान ने जहाज से संपर्क स्थापित किया। इस जहाज के अपहरण की सूचना गुरुवार को ब्रिटिश सेना के अंतर्गत कार्य करने वाले संगठन मेरीटाइम ट्रेड आपरेशंस (यूकेएमटीओ) ने दी थी। इसके बाद भारतीय नौसेना ने सक्रियता दिखाते हुए इस जहाज की तलाश की और शुक्रवार सुबह समुद्र में उसे खोज लिया।

नौसेना के प्रवक्ता ने बताया कि जहाज के चालक दल ने यूकेएमटीओ को गुरुवार शाम संकट का संदेश भेजकर बताया था कि पांच-छह हथियारबंद अज्ञात लोग जहाज पर आ गए हैं और वे जहाज को कब्जे में लेने की कोशिश कर रहे हैं। यह सूचना जैसे ही भारतीय नौसेना को मिली, उसने सक्रिय होकर हाईजैक जहाज की तलाश शुरू कर दी। नौसेना के प्रवक्ता ने बताया है कि स्थिति से पूरी गंभीरता से निपटा जा रहा है। इसके लिए क्षेत्र में कार्यरत अन्य एजेंसियों का भी सहयोग लिया जा रहा है।

बांग्लादेश: ट्रेन में लगी आग में 4 यात्रियों की मौत, साजिश के तहत की गई आगजनी का संदेह

ढाका। बांग्लादेश की राजधानी ढाका में शुक्रवार देर रात ट्रेन में आग लगने से चार लोगों की मौत हो गई। हादसे में कई लोग जख्मी हुए हैं। पुलिस को शक है कि यह साजिश के तहत की गई आगजनी का मामला है। यह घटना देश में होने जा रहे आम चुनाव से दो दिन पहले हुई है और देश की मुख्य विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने चुनाव का बहिष्कार किया है।

ढाका ट्रिब्यून के मुताबिक राजधानी के गोपीबाग इलाके में ट्रेन में आग लगने से 4 लोगों की मौत हो गई है। फायर सर्विस के सहायक अधिकारी रकीबुल हसन के मुताबिक शुक्रवार रात फायर ब्रिगेड की सात गाड़ियां मौके पर पहुंच कर आग पर काबू पाया।

आग पैसेंजर ट्रेन बेनापोल एक्सप्रेस के चार डिब्बों में फैल गई थी। यह ट्रेन भारतीय सीमा से लगे तटीय शहर बेनापोल से आ रही थी। स्थानीय समयानुसार रात करीब नौ बजे उस समय आग लगी जब ट्रेन ढाका रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ रही थी। हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। रेलवे के मुताबिक ट्रेन में 292 यात्री सवार थे।

पुलिस को संदेह है कि साजिश के तहत ट्रेन में आग लगाई गई। ढाका मेट्रोपोलिटन पुलिस (डीएमपी) के एडिशनल कमिश्नर महिदुउद्दीन के मुताबिक यह सुनियोजित हमला है। उन्होंने कहा कि यह अभी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि हमलावर कौन हैं लेकिन सुनियोजित है। उन्होंने कहा कि हमलावर की पहचान कर उसे कानून के कठघरे में खड़ा किया जाएगा। पुलिस अधिकारियों को लोगों को डराने के मकसद से इस तरह की घटना को अंजाम दिया गया।

बांग्लादेश में 7 जनवरी को आम चुनाव होने वाला है। हालांकि मुख्य विपक्षी पार्टी बीएनपी यह कहते हुए बहिष्कार कर रही है कि शेख हसीना के प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए निष्पक्ष चुनाव नहीं हो सकते। विपक्षी दल तटस्थ कार्यवाहक सरकार में आम चुनाव की मांग कर रहे हैं जबकि सत्ता पक्ष का कहना है कि देश के संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। रविवार 7 जनवरी को देश में होने वाले आम चुनाव के लिए विदेशी पर्यवेक्षक बांग्लादेश पहुंच चुके हैं, इनमें भारत से भी चुनाव आयोग के अधिकारी हैं।

अमेरिका में एक बार फिर मंदिर पर खालिस्तानियों ने किया हमला, एक महीने के अंदर तीसरी घटना

सैन फ्रांसिस्को। अमेरिका में एक बार फिर मंदिरों पर खालिस्तानी समर्थकों ने हमला किया है। ताजा हमला कैलिफोर्निया के खाड़ी क्षेत्र में किया है। मंदिरों पर एक महीने में यह तीसरा हमला है। इससे हिंदू समुदाय के लोगों में आक्रोश है।

हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन ने शुक्रवार को एक्स पोस्ट में कहा कि हेवर्ड में विजय के शेरावाली मंदिर को भारत विरोधी और खालिस्तान समर्थकों की ओर से निशाना बनाया गया है। कैलिफोर्निया में शेरावाली मंदिर की दीवारों पर खालिस्तान के समर्थन में नारे लिखकर इसे गंदा कर दिया है। इससे पहले पिछले साल 23 दिसंबर को नेवार्क में श्री स्वामीनारायण मंदिर को खालिस्तान समर्थकों ने निशाना बनाया था और उसकी दीवार पर भारत विरोधी नारे लिखे थे, जबकि शिव दुर्गा मंदिर में इसी इलाके में चोरी की घटना भी सामने आई थी।

मंदिर प्रशासन की ओर से कहा गया है कि उनकी ओर से अल्मेडा पुलिस विभाग और नागरिक अधिकार प्रभाग को इसकी सूचना दी गई है। साथ ही उन्होंने एक इंटरनेट पोस्ट में कहा है कि हम एक बार फिर सभी मंदिर नेताओं को हिन्दू अमेरिकन मंदिर सुरक्षा गाइड डाउनलोड करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

गाइड में विशेष रूप से चर्चा की गई है कि मंदिर परिसर या दीवार पर लिखे गए नारे घृणा अपराध का एक रूप है। साथ ही बढ़ते खतरे के मद्देनजर काम करने वाले सुरक्षा कैमरे और अलार्म सिस्टम स्थापित करने के महत्व पर भी चर्चा की गई है। पोस्ट में आगे कहा गया है कि खालिस्तान समर्थकों के साथ-साथ हिंदू विरोधी अन्य लोगों से खतरा है।

श्रीलंका ने चीनी अनुसंधान पोतों पर एक साल के लिए रोक लगाई, भारत ने जताई थी जासूसी की चिंता

कोलंबो। श्रीलंका ने अपनेल जल क्षेत्र में चीनी अनुसंधान जहाजों के रुकने पर भारत द्वारा जासूसी की चिंता जताए जाने के बीच विदेशी अनुसंधान जहाजों के प्रवेश पर एक साल के लिए रोक लगाने की घोषणा की है। यह रोक जाहिर तौर पर क्षमता निर्माण के लिए लगाई गई है, लेकिन इसे भारत में बढ़ती चिंताओं की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता निलुका कदुरुगामुवा ने शुक्रवार को बताया कि रोक सभी देशों से संबंधित है और स्थानीय शोधकताओं को संयुक्त शोध में अपने विदेशी समकक्षों के बराबर क्षमता बनाने की अनुमति देगा। हाल के वर्षों में चीन और श्रीलंका की एजेंसियों के बीच हुए समझौतों के आधार पर अनुसंधान के लिए चीनी जहाज कोलंबो में रुके हैं।

पिछले अक्टूबर में, चीनी अनुसंधान जहाज ह्यशि यान 6ह्ल कई दिनों तक कोलंबो बंदरगाह में रुका था, जबकि 2022 में नौसेना का जहाज ह्ययुआन वांग 5ह्ल दक्षिणी श्रीलंका के हंबनटोटा में रुका था। भारत में आशंका थी कि इन जहाजों का इस्तेमाल भारतीय क्षेत्र की निगरानी के लिए किया जा सकता है। चीन श्रीलंका में अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, जो दुनिया के सबसे व्यस्त नौवहन मार्गों में से एक पर स्थित है, जिसे भारत उसके लिहाज से अहम रणनीतिक क्षेत्र मानता है।

रूसी वायु रक्षा प्रणाली ने दक्षिणी रूस और क्रीमिया में यूक्रेनी ड्रोन के हमलों को किया बेअसर

कीव। दक्षिणी रूस और क्रीमिया के कब्जे वाले इलाकों में शुक्रवार को कई यूक्रेनी ड्रोन को रूसी वायु रक्षा प्रणाली ने बेअसर करते हुए मार गिराया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। कीव ने क्रीमिया प्रायद्वीप को निशाना बनाने पर 22 महीने से जारी युद्ध का विस्तार किया है।

क्रीमिया के सबसे बड़े शहर सेवस्तोपोल में हवाई हमले के सायरन बजते रहे और प्रायद्वीप को रूस के दक्षिणी क्रास्नोडार क्षेत्र से जोड़ने वाले पुल पर लगातार दूसरे दिन यातायात निलंबित कर दिया गया, जिस पर मास्को ने एक दशक पहले अवैध रूप से कब्जा कर लिया था।

रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा कि उसके सुरक्षा बलों ने क्रीमिया के ऊपर 36 और क्रास्नोडार के ऊपर एक ड्रोन को रोका, जो हाल के दिनों में तीव्र यूक्रेनी हवाई हमलों के उभरते पैटर्न का हिस्सा है। मंत्रालय ने कहा कि काला सागर के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में एक यूक्रेनी नेप्च्यून पोत विध्वंसक मिसाइल को भी नष्ट कर दिया गया। बेलगोरोड के गवर्नर व्याचेस्लाव ग्लैडकोव ने कहा कि रूस के सीमावर्ती शहर बेलगोरोड और आसपास के क्षेत्र पर अन्य यूक्रेनी रॉकेट और ड्रोन हमलों में बृहस्पतिवार रात को तीन लोगों के घायल होने के बाद यह घटनाक्रम सामने आया। वहां के अधिकारियों ने कहा कि बेलगोरोड पर ताजा यूक्रेनी हमले में 25 लोग मारे गए।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने इस साल क्रीमिया प्रायद्वीप और रूसी सीमा क्षेत्रों के अंदर अधिक लक्ष्यों पर हमला करने का वादा किया है। उनका लक्ष्य रूसियों को अस्थिर करना है क्योंकि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन 17 मार्च के चुनाव में जीत दर्ज करके छह साल और सत्ता में रहना चाहते हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

चुनाव से पहले बांग्लादेश में ट्रेन में आग लगने से 4 की मौत, कई घायल

ढाका। बंगलादेश की राजधानी ढाका में शुक्रवार रात एक यात्री ट्रेन में आग लगने से कम से कम चार लोगों की मौत हो गई।

स्थानीय मीडिया ने बताया कि अज्ञात बदमाशों ने रात 9:05 बजे बेनापोल एक्सप्रेस पैसेंजर ट्रेन में आग लगा दी। राजधानी के गोपीबाग इलाके में स्थानीय समयानुसार रात 10:20 बजे आग पर काबू पाया गया।

ढाका मेट्रोपॉलिटन पुलिस के उपायुक्त इकबाल हुसैन ने पत्रकारों को बताया कि चार मृत लोगों की पहचान तुरंत नहीं की जा सकी है। उन्होंने कहा कि सात अग्निशमन इकाइयां मौके पर पहुंचीं और आग पर काबू पाया।

दक्षिण कोरियाई का दावा, उत्तर कोरिया ने पश्चिमी तट पर लगभग 200 गोले दागे

हिजबुल्लाह ने उत्तरी इजरायल में रॉकेट हमले की जिम्मेदारी लीइजरायल सैनिक खान यूनिस के जरिए दक्षिणी गाजा पर आगे बढ़ा सोल। दक्षिण कोरिया की सेना ने दावा किया है कि उत्तर कोरिया ने शुक्रवार सुबह अपने पश्चिमी तट पर समुद्र में लगभग 200 गोले दागे।

इस कदम के बाद दक्षिण कोरिया के पश्चिमी सीमा द्वीपों येओनपयोंग और बेंगनीओंग पर नागरिकों के लिए आपातकालीन निकासी आदेश जारी किया गया। इसके जवाब में, दक्षिण कोरियाई सेना ने सीमावर्ती द्वीपों पर लाइव-फायर अभ्यास किया।

ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ (जेसीएस) ने कहा कि उसने सुबह 9 बजे से 11 बजे तक उत्तर कोरिया के दक्षिण-पश्चिमी तटीय इलाकों जांगसन केप और देउंगसन केप से गोलीबारी का पता लगाया।

गोले उत्तरी सीमा रेखा (एनएलएल) के उत्तर में समुद्री बफर जोन में गिरे, जो पीत सागर में वास्तविक समुद्री सीमा है।

बफर जोन, जहां गोलीबारी और नौसैनिक अभ्यास पर प्रतिबंध है, सीमा तनाव को कम करने के लिए 19 सितंबर 2018 को हस्ताक्षरित एक अंतर-कोरियाई सैन्य समझौते के तहत स्थापित किया गया था।

जेसीएस ने कहा कि उत्तर कोरिया की गोलाबारी से दक्षिण कोरियाई नागरिकों और सेना को कोई नुकसान या मानव जीवन के नुकसान की कोई सूचना नहीं है।

दक्षिण कोरियाई सेना ने उत्तर कोरिया के कदम को "भड़काऊ" कार्रवाई बताया और इसके अनुरूप कदम उठाने की चेतावनी दी। जेसीएस के प्रवक्ता कर्नल ली सुंग-जून ने एक संवाददाता सम्मेलन में कहा, "हम गंभीरता से चेतावनी देते हैं कि ऐसी संकट पैदा करने वाली स्थितियों की पूरी जिम्मेदारी उत्तर कोरिया की होगी और हम दृढ़ता से इसे तत्काल रोकने का आह्वान करते हैं।

"दक्षिण कोरिया और अमेरिका के बीच घनिष्ठ समन्वय के तहत, हमारी सेना संबंधित गतिविधि पर नजर रख रही है और निगरानी कर रही है, और उत्तर कोरिया के उकसावे के लिए उचित उपाय करेगी।"

रक्षा अधिकारियों के अनुसार, शुक्रवार दोपहर को, बेंगनीओंग और येओनप्योंग द्वीपों पर दक्षिण कोरियाई मरीन कॉर्प्स इकाइयों ने एनएलएल के दक्षिण में पानी में नकली लक्ष्यों के खिलाफ के9 स्व-चालित हॉवित्जर और के1ई1 टैंक जैसी अन्य संपत्तियों को शामिल करते हुए लाइव-फायर अभ्यास किया।